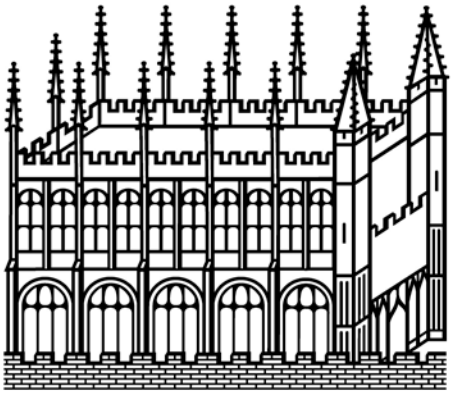


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13.D.44 Hindi Sur. 5

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Kṛishṇa-gītāvalī

Krishna Gotawala



श्रीकृष्णगीतावली

کرشن گیتاولی

जिसमें

सूरसारावली के अनुसार व और २ महात्मा भजनानन्दियों के कथित अति मनोहर व सुललित श्री कृष्णचन्द्र आनन्द कन्द परब्रह्म परमात्मा के भजन अनेक प्रकार के रागों में वर्णित हैं

जिसको

श्री कृष्णचन्द्र भक्त्यनुरागी मुंशी महावीरप्रसाद जी स्याहे नवीस तहसील महाराजगंज ज़िलह गोरखपुर ने अति परिश्रम से सूरसागर चादि ग्रन्थों से संक्षेप लेकर शोभित किया

दूसरी बार

स्थानलखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के आपेख़ाने में छापी गई

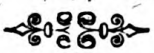
फ़रवरी सन् १८८५ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जनवरी सन् १८८४ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्योपार की इच्छा हो वह छपे रवाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा इतिहास	४-चौथे हिस्सामें	८-कर्णपर्व्व	मानसदीपिकाकोष
१-पहिले हिस्सामें	शान्तिपर्व्वदानध-	९-शल्यपर्व्वग-	आदि
आदिपर्व्वसभापर्व्व	र्म्म अश्वमेधआश्र-	दापर्व्वसौप्तिक	रामायणतु-कृ-टी-
वनपर्व्व	म वासिकपर्व्व व	पर्व्वमययोषिक	का सुरवदेव कृत
२-दूसरेहिस्सामें	मौशलपर्व्ववा-	वविशोकवस्त्री	तथा जिल्द बँधी
विराट पर्व्व उद्योग	णप्रस्थान स्वर्गा	पर्व्व	रामायणतु-कृ-टी-
पर्व्व भीष्मपर्व्व	रोहणपर्व्वहरिवं-	१०-शान्तिपर्व्व	का रामचरणदास कृ-
द्रोणा पर्व्व	श पर्व्व	राजधर्म्ममोक्षधर्म्म	तथा मोटे अक्षरों की
३-तीसरेहिस्सा	महाभारतपर्व्व अ-	वदानधर्म्म	मयनसवीरवक्षेपक
में कर्णपर्व्व श-	लेहदा भी हैं	११-अश्वमेधआ-	रामायणतुलसी कृ-
ल्यपर्व्व गदापर्व्व	१-आदिपर्व्व	श्रम वासिक मुशा-	त सातों काण्ड
सौप्तिकपर्व्व योषि	२-सभापर्व्व	लपर्व्व महाप्रस्था	१-बालकाण्ड
कपर्व्व विशोक	३-वनपर्व्व	नवस्वर्गारोहणपर्व्व	२-अयोध्याकाण्ड
पर्व्व स्त्रीपर्व्व	४-विराटपर्व्व	१२-हरिवंशपर्व्व	३-आरण्यकाण्ड
शान्तिपर्व्वमें रा-	५-उद्योगपर्व्व	रामायणरामविलास	४-किष्किन्धाकां-
ज धर्म्मआपद ध-	६-भीष्मपर्व्व	रामायणतुलसी कृत	५-सुन्दरकाण्ड
र्म्म मोक्षधर्म्म	७-द्रोणा पर्व्व	रामायण सटीकमय	६-लङ्काकाण्ड

भूमिका ॥



प्रकटहै कि श्रीस्वामी सूरजीमहाराजने चरित्रबाँके-बिहारीजी का ऐसावर्णन कियाहै कि जिसके पढ़ने व श्रवण करतेही चित्तसंसारी मनुष्योंका शुद्धहोकर अंत-कालमें मोक्षका भागीहोताहै वह सवालक्षपद होकर सूरसागर नामसे संसारमें प्रसिद्धहै परन्तु यह अमृत-रूपीसागर बिशेष उन्हींलोगों को प्राप्तहै जो द्रव्य के अधिकारीहैं द्रव्यहीनप्राणी उससे रहितहोकरभजन-रूपी जलके पान करनेसे बिमुखहैं कदापि जो किंचित् कुछ भजनभी कंठाग्रहैं तो पुस्तकहीन होनेसे उसको शुद्धता और विवेक पूर्ब्बक उच्चारण नहींकरसक्ते इस-लिये यहदासानुदास महाबीरप्रसाद मतिहीन दीन श्रीकृष्णआधीन साकिन क़सबै बांसगांवपरगनैउनौना वसिया हेनवीस तहसील महाराजगंज ज़िलेगोरखपूर नेप्रथम श्रीगुरूजीके चरणोंका ध्यानकरकेगणेश महेश व परब्रह्म श्रीनारायणको दंडवत्करके श्रीसूरजीमहा-राजरचित सूरसारावलीसे ललित २ पदोंकेभजन और और जोकि हरिभक्त भजनानन्दोंके मुखारबिन्दोंसे सुन कर मुझको प्रियमालुमहुये इकट्ठा करके यह छोटीसी पुस्तक बनाकर नामइसका श्रीकृष्णगीतावली रक्ख

इसपुस्तकमें हरकिस्मके भजनकेवल श्रीकृष्ण अवतार के लिखेगयेहैं जिसको भवरूपीसागर व मोहरूपीनदी से पारहोना अभीष्ट होतो गुणानुबाद परब्रह्म नारायण का कह सुनके निस्संदेह पार होजावे-

दो० चरचा श्रीगोपाल की काटत भवजंजाल ॥
उनकीकृपा अनंतते नहिंव्यापतकलिकाल १

इति ॥

श्रीकृष्णगीतावलीकासूचीपत्र ॥

नं०	नामरागोंका	पृष्ठम	पृष्ठतक	नं०	नामरागोंका	पृष्ठम	पृष्ठतक
१	बन्दना वो बिनय	१	१३	१७	राग जैतश्री	७४	७६
२	राग भैरव	१४	१७	१८	राग नट	७६	८०
३	राग आसावरी	१०	२१	१६	राग मारू	८०	८१
४	राग रामकली	२२	२८	२०	राग कल्याण	८१	८२
५	राग देवगन्धार	२८	३१	२१	राग परज	८३	८३
६	राग ललित	३१	३३	२२	राग कान्हरो	८३	८६
७	राग बिलावल	३३	४३	२३	राग सोरठ	८७	६२
८	राग सूहो	४४	४५	२४	राग बिहागरो	६२	६४
६	राग टोड़ी	४५	४५	२५	राग केदारो	६४	६८
१०	राग काफी	४६	४६	२६	राग गोंडमलार	६८	६८
११	राग गूजरी	४६	४८	२७	राग मलार	६८	१०५
१२	राग सिंधु	४८	४८	२८	बारहमासा	१०५	१०७
१३	राग सारंग	४६	५६	२६	राग भैरवी	१०८	१०६
१४	राग धनाश्री	५६	७०	३०	ठुमरी	१०६	१०६
१५	राग पूर्बी	७१	७१	३१	मंगल	१०६	११०
१६	राग गौरी	७१	७४	३२	होली	११०	११४

इति ॥

श्रीकृष्णगीतावलीकारागमाला ॥

नं०	नामरागोंका	किसवक़्तसे किसवक़्त तकगानाचाहिये	नं०	नामरागोंका	किसवक़्तसे किसवक़्त तकगानाचाहिये
१	रागभैरव	१ दंड दिन से ५ दंडदिनतक	१९	रागकल्याण	६ दंड रातिसे १०दंडरातितक
२	रागआसावरी				
३	रागरामकली		२०	रागपरज	११दंड रातिसे १५दंडरातितक
४	रागदेव गं०		२१	रागकान्हरो	
५	रागललित				
६	रागबिलावल	६ दंड दिन से १०दंडदिनतक	२२	रागसोरठ	१६दंड रातिसे २०दंडरातितक
७	रागसूहो		२३	रागबिहागरो	
८	रागटोड़ी	११दंड दिन से १६दंडदिनतक	२४	रागकेदारो	२१दंड रातिसे २५दंडरातितक
९	रागकाफी				
१०	रागगूजरी		२५	रागगोंड म०	आधीरातिको
११	रागसिन्धु		२६	रागमलार	बर्षाऋतुमेंदिन रातिं
१२	रागसारंग	१९दंड दिन से २ दंडदिनतक	२७	बारहमासा	ऐजन
१३	रागधनाश्री	२५दंड दिन से २८दंडदिनतक	२८	भैरवी	१ दंडदिन से ५ दंडदिन तक
१४	रागपूर्बी				
१५	रागगौरी	२९दंड दिन से ३०दंडदिनतक	२९	ठुमरी	शुभ अवस्था में दिन रातिं
१६	रागजैतश्री				
१७	रागनट	१ दंड रातिसे ५ दंडरातितक	३०	मंगल	११दंड दिन से १५दंडदिनतक
१८	रागमारू		३१	होली	बसंतऋतु में दिनरातिं

इति ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीकृष्णगीतावली ॥

दोहा

गणपतिजीकेचरणपर धरोंशीशचितलाय ।
विनयकरों करजोरिकै शारद होहुसहाय ॥
भक्तिपदारथमोहिंमिलै कृपासिंधुब्रजराज ।
सदाबसोउरविरजमणि कृष्णचन्द्रमहराज॥

अथ बन्दनाविनयभजनावलीलिख्यते ॥

गणपतिबिघ्नबिनाशनहारे ।

मंगल करन अमंगल नाशन सुखके सदन उमा के वारे । एक दन्त गजमुख लंबोदर सेंदुर तिलक नयन रतनारे । होहु प्रसन्न मनोज दहन सुत क्रामक्रोध के नाशन हारे । जाकर ध्यानधरत सुरनरमुनि लोकहु वेद बिदित संसारे । ममइच्छा तुमजानतहो प्रभु तासे सेवों चरण तिहारे । तुलसिदास आनंद जबै होय रामसिया उरबसत हमारे १ ॥

शंकर महादेवदेव सेवक सुरजाके ।

भस्म अंग शीश गंग बाहन अति बल प्रचंड गौरी अर्धंग संग भंग रंग छाके । लपटि झपटि जात ब्याल ओढ़े तन मिरग छाल मुंडमाल चंद्र भाल दृग विशाल

वाके। ध्यावत सुर नर मुनीश गावत गिरिजा गणेश पावत नहिं पार शेष ब्रह्म आदि थाके। बर्णत जनतुलसिदास गिरिनापति चरणआश ऐसे बरभेषनाथ भक्ति हेतुराखे २॥

भजुरेमनगौरीपतिकृपालमिटिजातसकलभ्रममोहजाल।

कैलाशशिखर परबतविशाल जहां रहत सदा शिव तीनकाल। तहाँ पीवत हैं नितघोटि भंग शिर लसत गंग भूषण भुअंग। रीझेहैं जल थल फूल चारु अनुकूल प्रेमहोय बजाय गाल। जिनके बिधि सम्पति लिखी न भाल तिनको शिवदीन्हो होयदयाल। हियमें धरुशंकर चरण रेणु फलदायक सुर तरु कामधेनु। बन बांछित पावत वृद्धबाल निरधन धन बांझिन पुत्र हाल। कहि विश्वनाथ कीरति उदार सुन याचक बर होय दीन द्वार। मोहिं नयनखोलि हर करुनिहाल जासे बेगिमिलैं दशरथको लाल ३॥

जय जय जग जननि देवि सुर नर मुनिअसुर
सेवि भक्ति भूति दायनी भयहरणि कालिका।

मंगल मुद सिद्धसदनि पर्व शर्वरीश बदनि ताप तिमिरि तरुण तरणि किरणि मालिका। बर्मचर्म करि कृपाण शूलसेल धनुष बाण धरनि दलनि दानव दल रण करालिका। पूतना पिशाच प्रेत डाकिनि शाकिनि समेत भूत ग्रह बैताल खग मृगालि जालिका। जयमहेश भामिनी अनेक रूप नामिनी समस्त लोक स्वामिनी हिम शैल बालिका। रघुपति पद परम प्रेम तुलसि

चहैअचलनेम देहुहोयप्रसन्न पाहिप्रणत पालिका ४ ॥

जो प्रभु मेरो दोष बिचारो।

कियो अपराध अनेक जन्म भरि नटवररूप भरेउ अधिकारो। पुहुमी पत्र सेधु मसि करिकै गिरिकेचन मिलिगारो। सुर तरुवरकी शाखा लेखनि लिखतशारदा हारो। पुनित उधारण बिरद बिदित जग वेदपुराण पुकारो। सूरश्याम हौं पतित शिरोमणि तारिसकोतो तारो ५ ॥

जे जन शरण गये ते तारे।

दीनदयालु प्रकट पुरुषोत्तम बिट्ठलनाथ ललारे। जितनी रबि छाया की कणिका तितने दोषहमारे। तुम्हरेचरण प्रताप तेजसे तेते तत्क्षण तारे। माला कंठ तिलक माथे दै शंख चक्र बपुधारे। मानिक चंदप्रभुके गुण ऐसे महा पतित निस्तारे ६ ॥

जबसे श्याम शरण मैं पायो।

तबसे भेंट भई श्री बल्लभ निज पति नाम बतायो। और अविद्या छांड़ि मलिन मति सुतपतिसों दृढ़दृढ़ायो। कृष्णदास सब जग जन खोजत अब निश्चय मन आयो ७ ॥

नयननि ध्यान नंदकुमार।

शीश मुकुट शिखंड राजत नहिन उपमापार॥ कुटिल केश सुदेश भ्राजत सुनहु मधुकर जाल। रुचिर केशर तिलक दीन्हें परम शोभा भाल॥ भृकुटिबंकट चारु लोचन रही युवती देखि। मनो खंजन चाप डरि डरि

उड़त नहिं त्यहि लेखि॥ मकर कुंडल गंड झलकत निरखि लज्जित काम। नासिका छबि कीर लज्जित कवि न बर्णत नाम॥ अधर विद्रुम दशन दाड़िम चिबुकहैं चित चोर। सूर प्रभु मुख चन्द्र पूरण नारि नयन चकोर ८॥

करुमननँदनँदनको ध्यान।

सेइचरण सरोज शीतल तजि विषय रसपान॥ जानु जंघ त्रिभंगसुंदर कलित केचनदण्ड। काछनीकटिपीतपट द्युतिकमल केशरखण्ड॥ मममराल प्रबालछौनाकिंकिनी कलराव। नाभि हृदय रोमावली अलि चले ऐन सुभाव॥ मणि कंठ मुक्तामाल मलयज अंग उर बनमाल। सुरसरी शशिनीर मानहु लता श्याम तमाल॥ बाहु पान सरोज पल्लव गहे मुख मृदुवेणु। अति बिराजत बदन बिधुपर सुरभि मण्डित रेणु॥ अरुण अधर कपोल नासा परम सुंदर नैन। चलत कुण्डल गण्ड मण्डल मनहुं निर्तत मैन॥ कुटिल कच भ्रुव तिलक रेखा शीशशिखी शिखण्ड। मनो मदन दोय शर संधाने देखि घनको अण्ड॥ सूर श्रीगोपाल की छवि दृष्टि भरि भरि लेत। प्राण पतिकी निरखि शोभा पलक परत न देत ९॥

जगतपति नाम सुनेव हरि तेरो।

मनचातक जलतज्यो स्वाति हित एकरूपब्रतधारो। नेक वियोग गिनत नहिं मानत प्रेम काग बपु हारो॥ राका निशि केतेअंतर शिर निमिष चकोर न लावत। निरखि पतंग ध्याननहिं छांड़त यदपि ज्योति तन तावत॥ कीन्हे नेह निबाह जीव जड़ ते इत उत नहिं चाहत। जेहैं

कहि समीप सूर नर करि बचननि दोउ दाहत १०॥

जोपै कृष्ण नाम धन धरतो।

टरतो नहीं जन्म जन्मांतर कहां राज यम करतो। लेतो करि ब्यवहार सबनिसों मूल गांठिमें परतो। भजन प्रताप सवाई घृत मधु पावक परे न जरतो। सुस्मृत गौन वेद बिधि बैठो विप्र परोहन भरतो। सूर चले बैकुण्ठ पैठके कोविच कौन जो अड़तो ११॥

अब मोहिं भीजत कवन उबारो।

दीनबंधु करुणानिधि स्वामी जनके दुःख निवारो। ममता घटा मोहकी बूंदै सरितामें न अपारो। बूड़त कतहुँ थाह नहिँ पावत गुरुजन ओट अधारो। गरजन क्रोध लोभके नारी सूझत कहुँन उघारो। तृष्णातड़ित चमकि क्षणहीं क्षण यह निशि यह तन जारो। यह भवजल कलिमलहि गहेहै बोरत सहस पुकारो। सूरदास पतितनको संगी विरदहि नाथ सम्हारो १२॥

माया देखतही जो गई।

ना हरि हित नहिँतू हित इनमें एको तौनभई। जो मधुमाखी सब निरन्तर बनकी ओट लई। ब्याकुल होतहरे ज्यों सरवर आंखिन दूरदई। शत सन्तान सजन बनितारति घन समान उनई। राखे सूरपवन पाषण्ड हति करि जो प्रीति नई १३॥

काया हरिके काम न आई।

भावभक्ति जहँहरियश सुनियत तहांजात अलसाई। लोभ उतरहोय काम मनोरथ तहां सुनत उठिधाई।

जबलग श्याम अंग नहिँ परसत अंधे ज्यों भरमाई।
सूरदास भगवंतभजनबिन बिषय परमबिषखाई १४॥

बसेमेरे नयननि में नँदलाल।
सांवरी सूरति माधुरी मूरति राजिवनयनबिशाल।
मोरमुकुट मकराकृतकुण्डल चरणतिलकदिये भाल।
शंख चक्र गदा पद्म बिराजत कौस्तुभ मणि बनमाल।
बाजूबन्द जरइके भूषण नूपुर शब्द रसाल। दासगोपाल मदनमोहन प्रिया भक्तनके प्रतिपाल १५॥

मोसों पतित न और हरे।
जानतहौं प्रभुअंतरयामी जो मैं काम करे। ऐसो अंध अधम अबिबेकी खोटनि करत खरे। बिषय भजे बिरक्त न सेइये मन धन धामधरे। ज्यों माखी मृगमद मण्डिततन परहरि पुञ्ज परे। त्योंत्यों मूढ़ बिषयगुंजा गहि चिन्तामणि बिसरे। कूबरकरेव पाषंड कामबश भूप भवन निसरे। एकेइहै जानिअवलंबन वैसेहिपतिततरे। हारे त्रास करत यमकिंकर सुनिमन नामडरे। सूरपतित तुमपतितउधारन बिरदकीलाजवरे १६॥

ठाकुर भले बुरे तौ तेरे।
हमरे कुलकी लाजबड़ाई बिनती सुनो प्रभुमेरे। आनंदे सब रंक भिखारी मैं सब छांड्यो होत अनेरे। सबतजि तुम शरणागत आयों दृढ़करिचरणगहेरे। तव प्रसाद हम बदत न काहू निडरभये घरघेरे। सूरदास प्रभुतुम्हरी कृपा से पाये सुख जो घनेरे १७॥

सोइरसना जो हरिगुण गावै।

नयननिकी छबियहै चतुरता सोइमुकुन्द मकरंदहि धावै। निर्मल चिततोतेईसांचो कृष्ण बिनाजेहि और न भावै। श्रवननि की जोयहै अधिकाई हरियश नित प्रति श्रवण नचावै। करतेई जोश्यामजुकोसेवै चरणनि चलि वृन्दाबनधावै। सूरदास कहैं बलिताकीहै जो सन्तनसों प्रीतिबढ़ावै १८॥

तुम्हरीकृपागोविन्दगोसाईंहौं अपनेअज्ञाननजानत।

उपजत दोष नाहिं सुनि समझत रविके कृतहिउलूक न मानत। सबसुखनिधि हरि नाम महा मणि सो पायो नाहिंन पहिंचानत। परम कुबुद्धि तुच्छ रसलोभी कौड़ी लगि मग मग रजछानत। शिवको धन सन्तन को सर्बस महिमा वेदपुराण बखानत। इते मान इन सूरमहा शठ सोइ नग बदलि विषय घरआनत १९॥

माधव वे भुज कहां दुराये।

जिन्हीं भुजन गोवर्द्धन धारेव सुरपतिगर्व नशाये। जिन्हीं भुजनि कालीको नाथेव कमल नाल लैआये। जिन्हीं भुजनि प्रहलाद उबारेव हिरण्याक्ष को धाये। जिन्हीं भुजनि गज दंत उपारेवमथुरा कंस ढहाये। जिन्हीं भुजनि दांवरी बँधायेयमला मुक्ति पठाये। जिन्हीं भुजनि अघासुर मारेव गोसुत गाय मिलाये। तेहि भुजकीबलिजाय सूरजन तिनका तोरिदिखाये २०॥

माधव गज ग्राहसे छोड़ायो।

निगमनिहूं मनबचन अगोचर प्रगट स्वरूपदि-

खायो। शिवबिरंचि सुरपति सब देखत बहुत दिनन दुखपायो। बिनुबदले उपकार कृपनिको काहूकरत न आयो। चितवतहो चितमें चिंतामणि चक्रलिये कर धायो। अतिकरुणा कातर करुणानिधि गरुलो जिहि बिसरायो। सुनियत यश युगयुग जनकारण कबहूं गहरु न लायो। ना जनिये सूरयहि अवसर कौन दोष बिसरायो २१॥

यहिबिधिबहुत जन्म बौरायो।

बिमुख भयो हरि चरण कमल तजि मन संतोष न पायो। जबजब प्रकट भयोजलथल तब अनेक सांत बपुधायो॥ कामक्रोध मद अन्ध विषय तिहि रचेअटल अघभारेव। मृगकपि बिप्र गिद्धगनिका गज कंस केशि खल तारेव॥ अघ बक वृषभ बकी धेनुकहति भवजल निधिते निवारेव। शंखचूड़ मुष्टिक प्रलम्ब मथिब्याल तृणावर्त्ततारेव॥रज चाडूर दवन दव नाशन ब्यालमथन भवहारे॥ जनदुख जानि यमल द्रुमभंजन अति आतुर होय धाये। गिरिकर धारि इन्द्रमद मरदेव दासनि सुख उपजाये॥ रिपुकच गहत द्रुपद तनया जब शरण शब्द करहाई। मृतक जिवाय गुरूके सुतको ब्याधि परम गतिपाई॥ नंद बरुण बंधनभयमोचन सूरकुटिल शरनाई। केहिमिसि भज भगवंत शरनको सब को भईबड़ाई २२॥

बंदों चरण सरोज तुम्हारे।

सुन्दर श्याम कमलदल लोचन ललितत्रिभंगीप्राण

पियारे। जे पद पद्मसदा शिवके धन सिंधु सुता उरते नहिंटारे। जे पद पद्म तात रिसि त्रासत मन बचक्रम प्रहलाद सँभारे। जे पद पद्म फिरतवृन्दाबन अहिशिर धरि अगणित रिपुमारे। जे पद पद्म परसि बृजयुवती सर्वस दै सुत सदन बिसारे। जे पद पद्म लोक त्रय पावन सुरसरि दरश कटत अघभारे। जे पद पद्मपरसिऋषि पत्नी नृपअरु ब्याध अमित खलतारे। जे पद पद्म फिरत पांडव गृह दूत भये सबकाज सँवारे। तेइ पदपंकजसूरदाससुखकरनबचनअहिफणपृतिधारे २३॥

मंगलरूप यशोदा नन्द।

मंगल मुकुट कान मधिकुंडल मंगल तिलक बिराजत चंद। मंगल भूषण सबअँग सोहत मंगल मूरति आनँद कंद। मंगल लकुट कांख में दाबे मंगल मुरलि बजावत मंद। मंगलचाल मनोहर मंगल दरशन होतमिटै दुख दंद। मंगल बृजपति नाम सबन को मंगल यश गावत श्रुति छंद २४॥

मंगलमाधव नाम उचार।

मंगल बदन कमलकर मंगल मंगलजनहि सदा संभार॥ देखत मंगल पूजत मंगल गावत मंगल चरित उदार। मंगल श्रवन कथारस मंगल मंगलतन बसुदेव कुमार॥ गोकुल मंगल मधुबन मंगल मंगलरुचि वृन्दाबनचंद। मंगल करन गोवर्द्धन धारी मंगलभेष यशोदानंद॥ मंगलधेनु रेनु भुवमंगल मंगल मधुर बजावत बेनु। मंगलगोप बधू परिरंभन मंगल कालिंदीपय फेनु॥

मंगलचरणकमल मणिमंगल मंगल कीरति जगत निवास। अनुदिन मंगल ध्यान धरत मुनि मंगल मति पर मानँददास २५॥

रे मन कृष्णनाम कहिलीजै।

गुरुकेबचन अटल करि मानहु साधु समागमकीजै। पढ़िये गुनिये भक्तिभाव गत और कहा कथि कीजै। कृष्णनाम बिनु जन्म बादिहै वृथाजिवन कहँजीजै। कृष्ण नाम रस बहेव जातहै तृषावंत होयपीजै। सूरदासहरिशरण ताकिये जन्म सुफल करिलीजै २६॥

रे मन मूरख जन्म गँवायो।

करि अभिमान विषय सो रांचेव श्याम शरण नहिं आयेव॥ यहसंसार है फलसेमर को सुन्दरदेखि भुलायेव। चाखन लागेव रुई उड़गई हाथ कछूनहिं आयेव॥ कहा भयो अबके मनशोचे पहिले नाहिं कमानेव। कहतसूर भगवंत भजनबिनशिरधुनिधुनि पछितानेव २७॥

मनतोसे कोटिन बारकही॥

समुझि न शरणगये गोविंदके उरअँग शाल सही। सुमिरन कथा औरगुरु सेवा एको नाहिंगही। लोभीलंपट बिषइ बिचारी ऐसेही निबही। तजि मणि कनक अमोलक हीरा कांच कि किरच गही। जैसेजानि बिवेक चतुर तुम तजिये पीवत खाटि मही। आदिब्रह्मरविशेष ईश मिलि सोधि सरस सबही। सूरदास भगवंत भजनबिनु सच त्रैलोक नहीं २८॥

जेहितन हरि भजबो न कियेव।

सोतनशूकर श्वानमीन ज्यों यह सुख कहां जियेव। जोजगदीश ईशसबहिनको तेहि न चित्त दीयेव। प्रकट जानियदुनाथ बिसारेव आशा मद पीयेव। चारि पदारथ के प्रभुदाता तिन्हैं न मिलेव हियेव। सूरदास रसना वश अपने टेरि न नाम लियेव २६॥

रामकृष्ण कहिये निशिभोर।

वेअवधेश धनुषको धारे वे ब्रज जीवन माखनचोर। उनकेछत्र चँवर सिंहासन भरत शत्रुहन लक्ष्मणजोर। उनके लकुट मुकुट पीतांबर गाइनके सँग नंदकिशोर। उन सागरमें शिला तराई उन राखेव गिरि नखकेकोर। नंददासप्रभुसबतजिभजियेजैसेनिरततचन्द्रचकोर ३०॥

मोहिंराखशरणऐगोविंदअबतोबलहारे।

नीरजानि पिवनगये सिंधुके किनारे। मोहिं गज कै चाल पाय ग्राह खैंचत मँझधारे। सवापहर समरहोत सिंधुके किनारे। श्रवण नाम डुबन लगे कृष्णकेपुकारे। शंख चक्र गदा पद्म द्वारका सिधारे। ग्राह करी मारि कै गजराज को उबारे। गावत पद सूरदास नंदके दुलारे। दुर्बल जानि दरशदीजै गिरिवर गिरिधारे ३१॥

राखोपति गिरिवर गिरिधारी।

अबतो नाथ रहे कछु नाहीं उघरत माथ सनाथपुकारी। बिनयकरौं मैं राधाबरसों शरण शरण प्रभुशरण तिहारी। रथ विहीन पांडवसुतडोलैं भीमगदाकरसो हमडारी। रहनि निपैज प्रणत पारथकी जबते

धरणि धरम सुतहारी। भूपसमाज बीरसब बैठे भीषम कर्ण द्रोण ब्रतधारी। कहिन सकत कोइ बात परस्पर इन पतितन मोरी अपति बिचारी। लाजगँवाय दास दासिनसों पाछेआय काकरिहौ गिरिधारी। सूरदासप्रभु अधम उधारन फेरिपछितैहो मोहिं देखि उघारी ३२॥

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं।

तादिन तेरेतन तरहवर को सबै पात झरिजैहैं॥ या देही को गर्ब न करिये स्यार काग औ गीधा खैहैं। तीनिनाम तन बिष्टा कृमि होय ना तरु खाकउड़ैहैं॥ कहँ वह नीर कहां वह शोभा कहँ रँगरूप देखैहैं। जिनलोगन से नेह करतहैं तेही देखिघिनैहैं॥ जिनपुत्र नहिं बहुत प्रतिपालेव देवी देव मनैहैं। तेइलै बास दयो खापरि में शीश फूटि बिपरैहैं॥ अजहूं मूढ़ करो सतसंगत संतनमें कुछपैहैं॥ नरबपु धरन जननहीं हरिको यमकी मारग खैहैं॥ घरके कहत सबेरेकाढ़ो भूत होय धरखैहैं। सूरदास भगवंत भजन बिनु वृथा सुजन्म गवैहैं ३३॥

अचरजएकदेखुरेभाईनिर्गुणब्रह्मसरगुणहोयजाई।

आदि सनातनहैं अबिनाशी। सदा निरंतर घट घट बासी॥ पूरण ब्रह्म पुराण बखानेव। चतुरानन शिव अंत न जानेव॥ गुणगण अगम निगम नहिं पावै। ताहि यशोदा गोद खेलावै॥ एकनिरंतर ध्यावैं ध्यानी। पुरुष पुरातन हैं निरबानी॥ जपतप संयम ध्यान न आवै। सोई नँदकेआँगन धावै॥ लोचन श्रवण न रसना

नासा। ना पद पाणि न तन पर गासा॥ बिश्व भरन निज नाम कहावै। घर घर गोरस जाय चोरावै॥ शुक शारद सों करहि बिचार। नारदसे पावहिं नहिं पार॥ अवरन बरन सुरति नहिं धारैं। सो गोपिनके बदन निहारैं॥ जरा मरणते रहे अमाया। मातु पिता सुतबंधुन जाया॥ ज्ञानरूप हिरदयमें बोलैं। सो बछरनके पाछे डोलैं॥ धरजल अगिनि अनल नभ छाया। पंच तत्व मिलि जगत उपाया॥ काल डरैं जाके डर भारी। सो ऊखल बांधे महतारी॥ माया प्रकट सकल जग मोहै। कारण करन करै सो सोहै॥ ब्रह्मादिक जाको पार न पावैं। सो गोकुल में गाय चरावैं॥ अदोयत रहै सदा जलशाई। परमानंद परम सुखदाई॥ लोक रचैरावै प्रति पारै। सोग्वालनि संगलीला धारै॥ गुणा तीत अविगति न जनावै। यश अपार श्रुति पार न पावै॥ जाकी महिमा कहत न आवै। सो गोपिन निशि बासर भावै॥ जाकी महिमा लखै न कोई। निर्गुण सर्गुण धरे बपुदोई॥ चौदह भुवन पलक में टारै। सो बन बीथिन कुटी सवाँरै॥ चरण कमल नितरमा पलोवै। चाहतनेक नयन भरिजोवै॥ अगम अगोचर लीलाधारी। सोराधाबश कुंजबिहारी॥भागबड़ेजोसकल ब्रजबासी। जिनकेसंगरमं अविनाशी॥ सूरसुयशकहि कहाबखानै। गोबिँदकीगति गोबिँदजानै ३४॥

अथ रागभैरवकेभजन॥

देखुरेयहकैसाबालकरानीयशोमतिजायाहै।

सुन्दर बदन कमल दललोचन देखतचन्द्रलजायाहै। पूरणब्रह्म अलख अविनाशी प्रकटनंदघर आयाहै॥ मोर मुकुटपीतांबर सोहै केशर तिलक लगायाहै। कानन कुंडलगले बिचमाला कोटिभानु छबिछायाहै॥ शंखचक्र गदापद्म बिराजै चतुर्भुज रूप बनायाहै। परमेश्वर पुरुषोत्तमस्वामी यशुमति सुतकहलायाहै॥ मच्छकच्छ बाराहवबावन रामरूप दरशायाहै। खम्भफारि प्रगटे नरहरिबपु जब प्रहलाद छोड़ायाहै॥ परशुराम बुधनि हकलंकहोय भू का भार उतारहै। कालीमर्दन कंसनिकंदनगोपी नाथकहाया है॥ मधुसूदन माधवमकुंद प्रभुभक्तबछल पदपायाहै। दामोदरगिरिधर गोपालहरि त्रिभुवन पति मनभायाहै॥ शिवसनकादिक अरुब्रह्मादिक शेष सहसमुख गायाहै। सुरनर मुनिके ध्याननआवत अद्भुतजाकी मायाहै॥ सोपरम ब्रह्मप्रकटहोय ब्रजमेंलूटिलूटि दधिखायाहै। परमानंद कृष्ण मनमोहन चरण कमल चितलायाहै ३५॥

नंददुवारेएकयोगीआयेवसिंगीनादबजायेवहै।

शीशजटाशशिबदनसोहायेअरुणनयनछबिछायेवहै॥ रोवतखजित कृष्णसांवरो रहतनहीं हुलरायेवहै। लियो उठायगोद नँदरानी द्वारेजाय देखायेवहै। अलखअलख करि लियोगोदमें चरणचूमि उरलायवहै। श्रवणलागि

कछुमंत्र सुनायेवहँसि बालक किलकायेवहै ॥ जिरंजी वसुतमहरि तिहारोहौं योगीसुख पायेवहै। सूरदासरमि चछोरावरो शंकरनाम बतायेवहै ३६ ॥

लाड़िलेमतिकरुभोरेराड़ ।

अपयासुता तासुपति ऊपर जलसुतनेक नेवार॥ सुरभीसुतको भीतनमानत ढीठोभयोमुरार । कालनेमिमधु कैटभभीतर ताक्षणदेहुं पुकार॥ गोरसको रस जो चाहा मोहन तत्क्षण देहुं उतारि। गणपति पितातासु बैरीरस सोदिहैंनन्दकेनारि ॥ इतना सुनत श्याममुसुकाने परेहैं मातुके गोड़। रहसत बिहँसतचले कुंजबन सूरश्याम बलिहार ३७॥

सोवतिराधाकोश्यामजगाई ।

सोनेके गडुआलैंग दतूनी सखियांधाय यमुनाजल लाईं।उठिबैठीं दृगनिकट श्यामके खोलतनयन लतअलसाई । मोतिनमाल गलेबिच सोहै दुखितजानि हरिहियरालगाई । सूरदासछबि कहांलगि बरनो अलकैंछूटिभुजन परआईं ३८॥

जागियेगोपाललालजननीबलिजाई ।

उठोतात भयो प्रात रजनीको तिमिरघटेव प्रगटे सब ग्वालबाल मोहनकेधाई। उठोमेरे आनन्दकन्द गरनचंद मंदमंद प्रगटेआकाश भानकमलन सुखदाई । संगीसब चुरतवेनु तुमबिनुनछुटीधेनुउठोलालतजो सेजसुन्दरवर राई।मुखतेपट दूरिकियोयशुदा कोदरशदियो अरुदधि सबमांगिलियो बिबिधिरस मिठाई। जेंवतदोउरामश्याम

सकल मंगलगुण निधान थारमें कछु जूठ रही सो मान दास पाई ३९॥

सोवतग्वालिनिकान्हजगाये।

भोरभये हमआये दरशको जीवनजन्म सुफलकरि पाये। उत्तमसेज अरुश्वेत बिछौना चहुंदिशि रुचिरचि आपुबनाये। सूरदास प्रभुतुम्हरेदरशको पूरणचंदप्रगट होयआये ४०॥

मोहनजागुरेबलिगई।

ग्वालबाल सब द्वार ढाढ़े बेर बनकी भई। पीतपट करिदूरि मुखसे छांड़िदे अलसई। अतिअनंदित होति जशुमतिदेखिद्युति नित नई। जागे जंगम जीवपशु खग औरब्रजसबई।सूरकेप्रभु दरशदीजैअरुणकीरतिछई४१॥

एकदिनबंशीश्यामबजाई।

मोहेनागअसुरसुरमोहेगगनबदरियाछाई। रबिरथच लत न ठाढ़बिसूले शंभूध्यान छोड़ाई॥ गौवनके चरवाहा मोहेबाछा पियतनगाई। उड़िके बिहँगडार परबैठे पक्षो फलनहिं खाई॥ सुनिमोही वृषभान नंदनीपांव पियादे धाई। यमुना नीरथीर होयबैठे पवनरहे मुरझाई॥ पसि जपषान परेपुहुपिनपर अतिऋति होतसिताई। सूरदा सप्रभुआश चरनकी हरिचरणन चितलाई ४२॥

श्यामासँगश्यामनचतरासमंगगुननिबचतशशिअ खंडमंडलहंसिशरदयामिनी।

तरणितरुणकूलमृदुलअछससितरजपुनीत त्रिबिधि पवनताप बदनकाम कामिनी। चरणचलितबाहुंबलित

ललितगान कलिततान मानसुख निधान तिरपलेति भामिनी। बरसुगंधरंगतालमनि मृदंग ब्यंगिचाल लाल सुघर ओघर गजराज गामिनी। रिझैपतिहि गतिदेखाय लेत कुवँरकंठलाय श्यामघटा मांझमनहु दुरितदामिनी। नैनसैन भ्रूबिलास मंदहास सुखनिवास सुनि धुनिमुनि बोलतजय ब्यास स्वामिनी ४३॥

अथरागआसावरीकेभजन॥

अंगसिंगारसवाँरिनागरीसेजरचितहरिआवैंगे।

सुमन सुगंध रचिततापर लै निरखिआप सुखपावैंगे। चंदन अगर कुमकुमामिश्रित श्रमतेअंग चढ़ावैंगे। मैं मन साधकरोंगी सँगमिलि वै मनकाम पुरावैंगे। रतिसुखअंतभरोंगी आलसअंकमेंधरिउर लावैंगे। रसभीतरमैंमान करोंगी वै गहिचरण मनावैंगे। आतुरजब देखोपियानैननिवचनरचन समुझावैंगे। सूर श्याम युवती मनमोहन मेरेमनहिं चुरावैंगे ४४॥

गौरीपतिपूजतिब्रजनारि।

नेम धर्मसों रहति क्रियायुत बहुत करतिमनुहार॥ यहै कहतिपति देहु उमापति गिरिधर नंद कुमार। शरणराखि लीजैशिव शंकर तन तरसावत मार॥ कमल पुहुपमा तूलपत्र फल नाना सुमनसुबास। महादेवपूजित मन बचकरिसूर श्यामकी आश ४५॥

चूकपरीमोसेंमैंजानीमिलेश्यामकबसांवरी।

हाहा करि दशननि तृणधरि धरिलोचन जलनिढरावरी। चरणगहो गाढ़ेकारे करसों पुनिपुनि शीशछुआंवरी। मुखचितऊँ फिरिधरणि निहारांऐसोरुचिउपजावरी। मिलोधाय अकुलाय भुजनिभरि उरकीतपनि जनावरी। सूरश्याम अपराध क्षमहुअब यहकहि कहि जुसुनावरी ४६॥

निरखिश्यामप्यारीअँगशोभामनअभिलाषबढ़ावतहै।

प्रियाअभूषण मांगत पुनिपुनि अपनेअंग बनावतहैं॥ कुंडलतटतरि बनलै साजत नासाबेसर धारतहैं। बेनी भालमांगशिरपारतबेनी गूंथिसवारतहैं। प्यारीनैननि की अंजनलै अपने लोचन अंजतहै। पीताम्बरओढ़नी शीशदै राधाको मनरंजतहै। कंचुकि भुजन भरतउर धारत कंठहुमेल भ्रजावतहै। सूरश्यामलालच त्रियतन पर करि सिँगार सुखपावतहै ४७॥

घुटुरुनचलतश्याममणिआंगनमातुपितादोउदेखतरी।

कबहुंककिलकिलातमुखहेरत कबहुंजननि मुखपेखतरी॥ लटकनलटकतललित भाल परकाजरबिंदुभ्रुव ऊपररी। यह शोभानैननि देखैं जे रहिउपमा तिहुंभूपररी॥ कबहुंक दौरिघुटुरुवनि लटकतगिरत उठत फिरि धावतरी। इतते नंदबोलाय लेतहैं उतते जननिबुलावतरी॥ दंपतिहाउ करत आपसमें श्याम खेलौना कीन्होरी। सूरदास प्रभुब्रह्म सनातन सुतहितकरिदो उलीन्होरी ४८॥

कोजानैहरिकीचतुराई।

नैननिसैन सभाषण कीन्हो प्यारी की उरतपतिमि टाई। मनहींमन दोउरीझ मगन भये अतिआनँद उरमें न समाई। करिपल्लवहरि भाववतावत यकदोय देह बनाई। जननी हृदय प्रेम उपजावत कहति कान्ह सोंलेहु बुलाई। सूरश्याम गहिबाहँराधिकाल्यायेमहरि बिहँसि बैठाई ४६॥

मैंअपनेबलरहतिश्यामसँगतुमकाहेदुखपावतिरी।

मोपररिसिपावतिहौपुनिपुनि कछुकह बरनकरावतिरी। तुमहुंकरो मुखमेंबरजतिहौं ऐसेहि शोरलगावतिरी। कहा करौं मोहिंश्याम नेवाजीकहि नहिं दूरि करावतिरी। वृथाबैरतुम करतीनिशिदिन आछोजन्म गवांवतिरी। सूर सुनहु ब्रजनारि सयानी मूरख होय समुझावतिरी ५०॥

हँसतगोपालनंदकेआगेनंदस्वरूपनजान्योरी।

निरगुण ब्रह्मसगुण लीला धरे सोई सुतकरिमान्योरी॥ एकसमय पूजाकेअवसरनंदसमाधि लगाईरी। शालिग्राम मेलि मुख भीतर बैठिरहे अरगाईरी॥ ध्यानविसर्जनकीन्हों नंदजू मूरति आगे नाहींरी। कहो गोपाल देवताका भये यह बिस्मय मनमाहींरी॥ मुखते काढ़िदयो यदुनन्दन तबहिं नंद के हाथरी। सूरदास स्वामीसुख सागर खेलरचेव ब्रजनाथरी ५१॥

काहकहौंसखिकहतबनैनहिंनँदनंदनमेरोमनहरेव।

मातु पिता पति बंधु सकुचतजि मग नभईं नहिंसिंधु

तरेव। अरुण अधरयुगनयनरुचिररसमदनमुदितमनसं-
गलरेव। देहदशा कुलकानि लाजरज सहज स्वभाव
रहेवसुधरेव। आनँदकंद चंद मुखनिशि दिन अवलोकत
यहअमलपरेव। सूरदास प्रभुसों मेरीगति जनुलुब्धक
करमीन चरेव ५२॥

श्यामहृदयजलसुतकीमालाअतिहिअनूपमछाजैरी।
मनहुं बलाकपांतिनवघनपरयहउपमा कछुभ्राजैरी।
पीत हरित शितअरुणमालबन राजतहृदयबिशालै री।
मानहुं इन्द्रधनुष नभ मंडल प्रकट भयोतेहि कालैरी।
भृगुपदचिन्ह उरस्थल प्रकटै कौस्तुभमणि ढिगदरश-
तरी। बैठीजनुषटबंधुएकसँगअर्द्धनिशामिलिबिहरतरी।
भुनाबिशाल श्यामसुन्दरकी चन्दन खवरि चढ़ायेरी।
सूरसुभगअँगअँगकी शोभाब्रजललना ललचायेरी ५३॥

डसिहै श्याम भुवंगमकारे।
मोहन मुख मुसुकानि मनहुं विष जातमरैसोमारे।
फुरै न मंत्र यंत्र गदनाहीं चलेगुणी गुणडारे। प्रेमप्रीति-
बिष हृदयसुलागी डारतहै तनजारे। निरबिषनहीं हो-
ति कैसेहुकरि बहुत गुणीपचिहारे। सूरश्याम गारुड़ी
बिनाको जो शिर गाड़ूटारे ५४॥

दर्प्पण लै प्यारीमुखआगे कहतिप्रिया छबि हेरोजू।
मेरी सों हाहा करि पुनिपुनि उतकाहे मुखफेरोजू।
सकुचत कहाबोलके सांच मेरेगृहतो आयेजू। रैनिनहीं
तो अबजो कृपाभई धनिजनि स्वांगकरायेजू। मेरीकही

बिलगु जनिमानो मैं तुमकरतिबड़ाईजू। सूरश्यामसन-
मुख नहिं चितवत रहेधरणि शिरनाईजू ५५ ॥

श्याम भयेवृषभान सुतावश और नहीं ककुभावैहो।
जो प्रभुतिहूं भुवनको नायकसुरमुनि अंतनपावैहो।
जाको शिवध्यावत निशि बासर सहसाननजेहिगावैहो।
सो हरि राधा बदन चंद्रको नयन चकोरतृषावै हो। जा
को देखि अनंग अनंगत नागरि छबिभरमावैहो। सूर-
श्याम श्यामावश ऐसे ज्योंसँगछाहँ डुलावै हो ५६ ॥

अद्भुतएकचितैरोसजनी नंदमहरके आंगनरी ॥
सो मैं निरखिअपनपौखोयों गईमथानी मांगनरी।
बालदशा मुखकमल बिलोकत ककुजननी सों बोलैरी।
प्रकटत हांसत दंतियां मानोंसीपजमनिकल बोलैरी ॥
सुन्दर भालतिलक गोरोचन मिलिमम बुन्दकलाग्यो
री। मनो मकरंद अचैरुचिकै अलि शावकसोइ न जा-
ग्योरी ॥ कुंडललोलकपोलनि झलकत मनोदर्पणमेंझा-
ईरी। रही बिलोकि बिचारि चारुछबि परमति कतहुँन
पाईरी॥ मंजुलतारनकीचपलाईचितचतुराननकरखैरी।
मनो शरासन समर धरेकर भौंहँचढा शर बरषैरी ॥
जलधि थकितजनुकाग कपोतज्योंकुलनेकहु आयोरी।
नाजानो केहि अंग मगन मन चाहिरहो नहिं पायो
री॥ कहँलगि कहौं बनाय बरणि जितनी छबि निर
खि लहारीरी। सूरश्याम के एकरोमपर देउँ प्राण
बलिहारीरी ५७ ॥

अथ राग रामकली के भजन॥

रोंकत गैलमैं कैसे जावँ पनियांरे।

शीश मुकुट कंचन को झलकै कानन कुँडलमनोहर हलकैं चन्दन खवरिभालमें राजत उरवैजंतीमाल बिराजत पीताम्बर कटकाछे चौतनियांरे। कट किंकिनि औनूपुर बाजैं झनझनात मुनिवर सबजागैं पगुपैंजनि यांधीरसों बाजैं देखिदरश दूरीसेभावै अतिचंचलअलबेली चितवनियांरे। अधर सुधारस बेनबजावैं ग्वाल बालसब संगलियेधावैं कहा न मानैं नंदरायको माखन खातफिरत घरघरको ऐसो निठुरवाकीपड़ीहै कुबनियां रे। गागर फोरि मोर मनमसकैं करकंगन कंचनउरकसकैं सूरदास यह नागर लटकैकहा न मानैंकुंजबनसट कैं बरजो गोपालजीको अहोनन्दरनियांरे ५८॥

ऊधोहम लायक सिखदीजै॥

यह उपदेश अग्निसे तातो कहोकवन बिधिकीजै। तुमहीं कहोयहां इतनिनमें सिखवनहारोकोहै॥ योगी यती रहित मायासे तिनको यहमति सोहै। जेकपूरचन्दन तनलेपन ते बिभूति क्यों छाजै॥ सूरकहो शोभा क्योंपावै आंखि आंधरी आंजै ५९॥

हमरो अंबर देहु मुरारी।

लेकर चीर कदमपर बैठे हमजल मांझउघारी। सुन्दर श्याम कमल दललोचन हमहैंदासि तिहारी। जो कछुकहौ सोईहम करिहैं चरणकमलपर वारी। अंग

अंग कंपित मनमोहन बिनती सुनहु हमारी। सूरदास प्रभुरसिक शिरोमणि तुमजीते हमहारी ६० ॥

मोहन बसन हमारो दीजै।

वारने जाउँ सुनो मनमोहन शीतलगत तनभीजै। कौन स्वभाव वृथा अन अवसर इनबातन कसदीजै। सुनिदुख पावै महरियशोमति जायकहैअँबहीजै। सबअबला जलमांझ उघारी दारुणदुख कससहिजै। प्रभुबलि जावँ हम दासि तिहारी जो भावै सो कीजै ६१ ॥

बनत नहीं यमुनाजीको नहैबो।

चोलोचीर कृष्णलैभागे कठिन भयो घरजैबो। जो हरिहमसोंऐसी करिहौ तो यहघाट न ऐबो। श्रीबिट्ठलगिरिधरनलालसों बिनती करिघरजैबो ६२ ॥

हरिसे धेनु दुहावति प्यारी।

करतिमनोरथ पूरण मनवृषभानमहरिकीबारी।दूधधारमुखपर छबिलागत सो उपमा अतिभारी। मानो चन्द्र कलंकहि धोवत जहँतहँ बून सुधारी। हावभाव रस मगनहैंदोऊछबि निरखति ललितारी। गो दूहन सुख करतसूरप्रभु तीनहुं भुवन कहारी ६३ ॥

जागियेगोपाललालप्रकटभयोहंसमालमिटिजोगयो अंधकारउठोजननिमुखदेखाई।

मुकुलितभये कमलजाल कुमुद वृंदाबन बिहाल मेटहु जंजाल त्रिबिधिताप तननशाई। ठाढ़ेसबसखाद्वार कहतेहैं नँदकुमार टेरतहैं बारबार आइये कन्हाई। गैयनभइ बड़ीबारभरिभरिपयथननिभार बछरागणकरैंपुकारतुम

बिनु यदुराई। तातेयह अटकिपरी दोहनकाज सोहँकरी उठि आवहु क्योंनहरीबोलत बलभाई। मुखते पटझट-किडारि चंद्रबदन दे उघारि यशुमति बलिहारिवारिलो-चन सुखदाई। धेनुदुहन चलेधाय रोहिणीकोलइबुलाय दोहनी मोहिं दै मँगाय तबहीं लै आई। बछरादियोथन लगाय दुहतबैठिकै कन्हाय हँसत नंदराय तहांमातुदोऊ आई। दोहनी कहूं दूधधार सिखवतनँदबारबार वहछबि नहिंवारपार नंदघर बधाई। तब हलधर कहेव सुनाय धेनुबनचली लिवाय मेवा लीन्ही मँगाय बिबिधिरसमि-ठाई। जेंवत बलरामश्याम संतनके सुखद धाम धेनुकाज नहिं बिराम यशुदा जललाई। श्यामराममुखपखारि ग्वाल बाललये हँकारि यमुनातटमन बिचारिगायनहँकराई। शृंगबेनुनादकरत मुरली सुरधरबजाव मनहरत ग्वाल गावत सुखराई। वृंदाबन तुरत जाय धेनुचरत तृण अघाय श्यामहरषि पायनिरखि सूरजबलिजाई ६४॥

महरितोहिंबड़ी कृपिणमैं पाई।

दूधदहीहै बिधिकोदीनों सुतडरधरतिछिपाई। बाल-क बहुत नहींरी तेरे एकै कुवँरकन्हाई। सोऊतौघर-हीघरडोलत माखन खात चोराई। वृद्धिवैसपूरे पुण्यनतें तैं बहुतै निधिपाई। ताहूकेखैबेपीबेको कहाइती चतुराई। सुनहु न बचन चतुरनागरिकी यशुमति नँदसुनाई। सू-रश्यामको चोरीकोमिसिदेखनको यह आई ६५॥

चितवनि रोकेहूनरही।

श्याम सुन्दरसिंधुसनमुखसरिता उमँगिबही। प्रेम

सलिलप्रबाहभौंरतिमतिनकाहूलही। लोभलहरिकटा-
क्ष घूंघुट पटकरारढही। थकेपलपथनाव धीरजपरतनहीं
नगही। मिलीसूरस्वभावश्यामहिंफेरहूनचही ६६ ॥

मेरोमन हरिचितवनि अरुझानो ॥
फेरतकमल द्वारहोयनिकसे करत सिंगार भुलानो।
अरुण अधर दशननि द्युतिराजत मोहन मुरिमुसुकानो।
उदधितनयसुतपांतिकमलके वंदनमुकरकेमानो। यहि
रसमगन रहति निशिबासरहरितजिऔरन जानो। सूर-
दरश चित भंगहोतक्यों जोजेहि रूप समानो ६७ ॥

मनतो हरिही हाथ बिकान्यो।
निकसेव मान गुमानसहित वहमैंयहहोतनजान्यो।
नैननि साटिकरीमिलि नैननि उनहीं सों रुचिमान्यो।
बहुत यत्न करिहों पचिहारी फिरइतको न फिरानो।
सहज स्वभाय ठगौरी डारी शीश फिरत अरगानो।
सूरदासप्रभुरसबशगोपिनबिसरिगयोतनज्ञानो ६८ ॥

आजुहरि पकड़न पायों चोरी।
लेगयो चोरिचोरि मन माखन जो मेरे धन होरी।
बांधौं कंचन खम्भ कलेवर उभयभुजादृगडोरी। राखेंक-
ठिन कठोर कुचनबिच सकैनकोऊछोरी। अधरदशनख
ड़ोरसगोरस छुवैनकाहूकोरी। कामदंडदंडौं परघरको
नामनलेयबहोरी। तबकुलकानि आनि तिरछीभइ क्षमि
अपराध किशोरी। शिवपरहाथ धरायसूर प्रभु शोच
मोचशिरढोरी ६९ ॥

आजुहरिरैनिउनींदे आये।

अंजन अधर ललाट महावर नैनतमोरखवाये। शिथिलित बसन मरगजी माला कंगन पीठसुहाये। लटपटि पाग अटपटेभूषण बिनुगुणहार बनाये। शिथिल गात अरु चालदृगमगी भृकुटी चंदनलाये। सूरदासप्रभुयहैं अचंभव तीनि तिलक कहँपाये ७० ॥

सखी तू राधहि दोष लगावति।

तेरो श्याम कहां इन देखेव बातनि बैर बढ़ावति। हम आगे झूंठीनहिँ कहिहैं सखियन सैन बतावति।ऐसी बात अरीमुख। तेरे कैसेधौंकहिआवति। भेदहि भेद कहति है बातैं ऐसे मनहिंजनावति। सूरश्यामतैं देखे नाहींकीधौंहमहिं दुरावति ७१ ॥

हमरो देहु मनोहर चीर।

कांपत दशन शीत तन ब्यापत हम अति यमुना तीर॥ मानहिंगी उपकार रावरो करहु कृपा बलबीर। अतिहि दुखित बपु परसत मोहन प्रबल प्रचंडसमीर॥ हमदासीतुमनाथ हमारे बिनती करति जलभीतरठाढ़ी। मानहुं बिकसि कुमोदिनि शशिसों अधिक प्रीति उर बाढ़ी॥ जोतुम हमहिं नाथकरि मानहुयहमांगे हमैंदेहु। जलते निकसि आय बाहरहोय बसनआपनोलेहु॥ कर धरि शीश गईं सन्मुखहरि मनमहँ करि आनंद। होय कृपाल सूर प्रभु सबबिधि अंबरदियो नँदनंद ७२॥

मरेजिय ऐसीआनिबनी।

बिनागोपाल और नहिं जानों सुनु मोसों सजनी।

कहां कांच संग्रह के कीन्हे डारि अमोलमनी। बिष सुमेरु कछु काम न आवै अमृतएककनी। मनबचक्रम माहिँ और न भावै अब मेरेश्यामधनी। सूरदासस्वामीके कारण तजी जाति अपनी ७३॥

तौ हम मानैं बात तिहारी।
अपनो ब्रह्म देखावहु ऊधव मुकुट पितांबर धारी। भजिहैं तब ताको सब गोपी सहि रहिहैं बरुगारी। भूतसमान बतावत हमकोजारहु श्यामबिसारी। जेमुख सदा सुधा अँचवतहैं ते बिषक्यांअधिकारी। सूरदास प्रभु एक अंगपर रीझिरहीं ब्रजनारी ७४॥

ऊधव युवतिन ओर निहारो।
तबयह योगमोट हमआगे हिये समुझि बिस्तारो॥ जे कच श्याम आपने कर करि नितहि सुगंध रचाये। तिनको तुमजो बिभूति धोरिकै जटा लगावन आये॥ जेहिमुख मृगमद मलयज उबटनि क्षण क्षण धोवति मांजति। तेहिमुख कहत खेह लपटावन सो कैसे हमैं छाजति॥ लोचन आंजि श्याम शशि दरशति तबहीये तृपतांति। सूर तिन्हैं तुम रवि दरशावत यह सुनि सुनि करुआति ७५॥

राधा हरिअनुराग भरी।
गदगद मुखबाणी परकाशति देह दशाबिसरी। कहति इहै मन हरि हरिलेगये येही परन परी। लोक सकुच शंका नहिं मानति श्यामहिं रंगढरी। स-

खोसखी सों कहति बावरी एहि हमको निदरी। सूर-दास प्रभुसों रति मानी भुरई हम सिगरी ७६ ॥

हमरो अंबर देहु मुरारी॥

लै सबचीर कदम चढ़िबैठे हम जल मांझ उघारी। तट पर बिना बसन क्यों आवैं लाज लगति है भारी। चोलीहार तुमहिंकोदीन्होचीर हमहिंदेहुडारी। सुन्द-रश्याम कमल दललोचन हमहैं दासि तिहारी। जो कछु कहौ सोई हम करिहैं चरण कमलपरवारी। अंग अंग कम्पत मनमोहन बिनती सुनहु हमारी। सूर-श्याम कछुछोहकरोजू शीत गई तनमारी ७७ ॥

ऐसी कुवँरि कहां तुमपाई।

राधाहूते नखशिख सुंदरि अबलौं कहांदुराई। का की नारि कौनकी बेटी कौन गांवसे आई। देखीसुनी न ब्रज वृन्दाबन सुधि बुधि हरति पराई। धन्य सो-हाग भाग याको यह युवतिन के मन भाई। सूरदास प्रभुहरषि मिले हँसि लै उरकंठ लगाई ७८॥

अथ रागदेवगंधारकेभजन॥

हरिबिनु कैसे या ब्रजजीजै।

पंकज बरषि बरषि उर ऊपर सारँगरिपु जलभीजै। तारापतिके रिपु शिरठाढ़ो निमिषनिचैन न दीजै। चंदा चोथ जात गोपिनको मधुप आय यश लीजै। बायस आज दोउ शब्दकी मिलनी ताकारण मन छीजै। सूर-

दास प्रभुहो जग जीवन बेगहि दरशन दीजै ७६॥

जबसे बिछुरे कुंजबिहारी ।

नींद न परै घटति नहिं रजनी ब्यथा बिरह ज्वरभारी। धिक सुन्दरी बिरहकी बेदन जगमें रही उजारी। रविकी रस्मि लगति अनतातो यह शीतल शशिजारी। श्रवणनि दुख सोहाय नहिं सखिरी पिक चातक द्रुम डारी। तनहिं न भावति अति आतुर होय कर कंगन जो उतारी। सूरश्याम बिनु बिष लागतिहै कुसुमसेज ज्वरजारी। बिलखि बदन वृषभान नन्दनी निंदति कपि रिपुहारी ८०॥

पियाप्रियानाहिंमनायोमाने ।

श्रीमुख बचन मधुर मृदु मोदक कठिन कुलिश से जाने। शोभित सहितसुगंध श्याम कच कलकपोलउर झाने। मानहु वेधत ग्रस्यो कलानिधि तजत नहीं बिनदाने। बालभाव अनुसरति भरति दृग अग्र अंशुकन आने। जनुखँजरीट युगल जठरातुर लेत सुभखअकुलाने। नयन निकट ताटंक गण्ड मण्डल परकवि न बखाने। जनुखद्योत चमकि चलिसकत न निशिगत तिमिर हिराने। यह सुनिकै अकुलाय चले हरि कृत अपराध क्षमाने। सूरदास प्रभुमिले परस्पर मानिनि मिलि मुसुकाने ८१॥

किशोरी देखत नयन सिरात।

बलिबलि जाउँ मुखारविंदकी चंदमंद होयजात। श्याम कंचुकीतामें शोभित कंचन कलशनमात। मानो

मदन दोऊकुच ऊपर नील बस्तु फहरात । नकबेसरऔर उरजि पिताम्बर देखत मुनि मुरझात । या मुख देखे सूरदासप्रभु उड़े पुरानेपात ८२ ॥

यशुमति आनँद कंद नचावति ।

पुलकि पुलकि हुलसातिदेखिमुख अति सुख पुंजहि पावति । बालयुवावृद्धा किशोरमिलि चुटकी दैदैगावति । नूपुर सुरमिश्रित धुनि उपजत शिवबिरंचि विसमावति । कुंचित ग्रंथित अलक मनोहर झपकि बदन पर आवति । जन भगवान मनहुं घन बिधु मिलि मकर चांदनी लजावति ८३ ॥

आजु बन राजत युगलकिशोर ।

नन्दनँदन वृषभान नन्दिनी उठे उनींदे भोर । डगमगात पगु धरत शिथिल गति परसत नख शशि छोर । दशन बसन खंडित मुखमंडित भाल तिलक कछुथोर । दुरत न कच करजनि के रोंके नयन अरुण अलिचोर । हित हरिवंशसम्हारन तनमन सुरति समुद्र झकोर८४॥

नितउठि देन उरहनो आवै ।

यहग्वालिनि योबन मतमाती झूठेहि दोष लगावै । कहँधौं भाजन धरे पराये कहँ मेरो मोहन पावै । लड़काअति सुकुमार गहे कर हलधर संग खेलावै । कबहुंक कहति कंचुकी फारी कबहुंक और बतावै । कबहूं करइ मथानी लैकै आंगन शोर मचावै । मनतेरो लाग्यो कमल नयनसों ऊपर बहुत बनावै । चतुर्भुज प्रभुगिरिधर सुख यहि मिस क्षणक्षण देखे भावै ८५ ॥

मोहन पूरे हो सतभाई।

कहतलाल नीके दुहिदेहौं ग्वाल तिहारी गाई। आतुरहोय दोहनी कनककी करते लीनी धाई। देहौं बेगि पाटकी नोई बछरा चोखेजाई।हँसिहँसि दुहत अरु कहत रसीली बातैं बहुत बनाई। चतुर्भुज प्रभु सहजहि रतिजोरीगिरि गोबर्द्धन राई ८६॥

लालतुम कैसे दुहत हौ गाय।

कहुंबैठे कहुं दृष्टि दोहनी धारकहूं चलिजाय। यह दुहिबो हम कबहुंन देखेव ग्वालि कहत समुझाय। जो कछु होतो तनकसो वामें शिरतो दियो लुढ़ाय। मेरी सासु खरी रिसिहारी अब मोहिं देखि रिसाय। श्री बिट्ठल गिरिधरन लाल पै सर्बस चली हराय ८७॥

यशोदा कहा कहोंहो बात।

तुम्हरे सुतके करतब मोपै कहत कहे नहिं जात। भाजन फोरि ढूंढ़ि सब गोरस ले माखन दधिखात। जो बरजौं तौ आंखि देखावै रंचहु नाहिं सकात। और अटपटी कहां लौं बरणों छुवत पाणिसों गात। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरके गुणहौं कहति कहति सकुचात ८८॥

अथ रागललितके भजन॥

प्यारी चितै रही मुख पियको।

अंजन अधर कपोलनि बंदन लागेव काहूत्रियको। तुरतउठी दर्पणकर लीन्हों देखोबदनसुधारो। अपनो

मुखउड़िपातदेखिकैतब तुमअनत सिधारो। काजरबंदन अधर कपोलनि सकुचे देखि कन्हाई। सूरश्याम नागरि मुखजोवत बचन कहेव नहिं जाई ८६ ॥

राधे छिरकति छैल छबीली।

कुच कुंकुम कंचुकि बँदटूटें लटकि रहीं लटगीली। बंदन शिरताटंकगंडपर रतन जड़ित मणिनीली। गति गयंद मृगराज सुकटि पर शोभित किंकिनि ढीली। मचेव खेल यमुना जल अंतर प्रेम मुदित रस झीली। नंदसुवन भुजगीव बिराजत भाग सोहाग भरीली। बरषत सुमन देवगण हरषित दुंदुभि सरस बजीली। सूरश्याम श्यामा रसक्रीड़ितय मुना तरँग थकीली ६०॥

ऐसेहि ऐसे रैनिबिहानी।

चंद्रमलीन चिरैया बोलीं सुनी कागकी बानी। वेलु बधे अनत्तहि काहूके मानकी आश भुलानी। कपटी कुटिल क्रूरकहँ जानै श्यामनाम जिय आनी। कोकिल श्याम श्याम अलि देखो श्यामरंग है पानी। श्यामजलद अहिश्याम कहावत सूरश्याम सो बानी ६१॥

आयेकहांरमारमनठाढ़मवनकाजकवनकीजैगवन वाकेभवनयामिनिजहांजागे।

नखशिख अतिशिथिलगात डोलत मतिकरत बात चरण धरत अनत परत आलस अनुरागे। चंदनबंदन लिलाट चूरि चिन्ह चारु ठाट अंजन जावककपोल पीक लीकलागे। भृकुटिभई अधोभाग पल पल पल पलक लागि कुंडल लटलटकि रहे पागपेंचआगे। सूरश्याम

बनी आजुबरणत नहिंबनै साजुनिरखि निरखिकोटिकाम मनसिज मनठागे ९२॥

अथ रागबिलावलके भजन॥

सिखवति चलनय शोदामैया।

अरबराय कर पाणिगहावति डगमगाय धरणीधर पैया। कबहुंक सुंदरबदन बिलोकति उरआनँद भरिले तबलैया। कबहुंक कुलदेवता मनावति चिरंजीव मेरो लालकन्हैया। कबहुंक बलको टेरिबुलावति यहिआंगन खेलहु दोउभैया। सूरदासस्वामी सुखसागर अतिप्रताप बलकत नँदरैया ९३॥

भावतहरिके बालबिनोद।

श्यामराम मुखनिरखि निरखिसुख प्रमुदित रोहिणि जननियशोद। आँगन पंक परस तनमंडित चलत कुनीत नुपुर मनमोद। परमसनेह बढ़ावत नारिन निरबिकार बैठतचढ़िगोद। आनँद कंदसकल सुखदायक निशिदिन रहतकेलि रसओद। सूरदास प्रभु अंबुजलोचन फिरि फिरि चितवत ब्रजजनकोद ९४॥

महरि तुममानहु मेरीबात।

ढूंढ़िढूँढोरि गोरस सब घरको हरेव तुम्हारो तात। कैसे कहति लयवकेते ग्वालिनि कबहिंकान्ह दैलात। घरनहिं पियतदूधधौंरीको कैसेकरतेरो खात। असंभाव बोलनिहै आई ढीठग्वालिनी प्रात। ऐसोनहीं अवगरो

मेरो कहा बनावतिबात। कहामैंकहौं कहति सकुचतिहौं। कहादिखाऊंगात। हैं गुणबड़े सूरकेप्रभुके ह्यांलड़िका होयजात ६५॥

प्रातसमय दधिमथति यशोदा अतिसुख
कमलनयन गुणगावति।

नीलबसन तनुसजलजलद मनोदामिनिद्युति भुज दंडचलावति। चंद्रबदनलटलटकि छबीली मनहुं अमृत रसराहु चोरावति। गोरस मथतिनाद एकउपजतकिंकिनि धुनि सुनि श्रवण रमावति। सूरश्याम अँचराधरि ठाढ़े कामकसौटी कसिदिखरावति ६६॥

भोरभयेनिरखतिहरिकोमुखप्रमुदित
यशोमतिहरषितनंद।

दिनकर किरणि कमल जनु बिकसत निरखत अति उपजत आनन्द। बदन उघारि जगावति जननी जागहु मेरे आनँदकन्द। मानहु मथिसुर सिंधुफेनफाटि दईदेखाय नूतनचन्द। जाको ईशशेष ब्रह्मादिक गावत नेतिनेति श्रुतिछंद। सोई गोपाल सुगोकुल भीतर सूरसोप्रकटे परमानंद ६७॥

बांसुरीबजायआजुरंगसेमुरारी।

शिवसमाधि भूलिगई मुनि मनकीतारी। वेदभनत ब्रह्मा भूलेभूले ब्रह्मचारी। सुनतही आनंद भयो लगी है करारी। रंभ सब तालचूकीं भूलीनृत्यकारी। यमुनाजल उलटि बहेव सुधि ना सम्हारी। श्रीवृन्दाबन बंशी बजी तीनलो कप्यारी। ग्वाल बाल मगनभये ब्रजकीसबनारी।

सुंदरश्याम मोहनी मूरति नटवर बपुधारी। सूरकिशोर मदनमोहन चरणन बलिहारी ९८ ॥

रजनीबिरहबियोगिनिराधाकरलीन्हेसारंगबुझावै।

अहि सुतहीन तासु अरि पति बिनु ताअरि अनुजहि तो नहिं भावै ॥ हर सुत बाहन ताअरिभोजन सुत बाहन बिलमै श्रुतिगावै। चलत न दधिसुतघटत न हरि अरि ताते पाणिशशि गहिलावै। हरलिखु मदन काग लिखु कोकिल लिखिपन्नग मारुत भरमावै। अंचललिखत श्वानकी मूरतिलिखि अर्द्धगशशी डरवावै। रहिय बिचारि बिचित्रभामिनी और उपायनहीं कछुआवै। शूरश्यामप्रभुबेगिदरशदे ताते यह बिरहिन सुखपावै ९९ ॥

कान्हामांगै दहीकरदान वृन्दाबन कुंजनमें।

कहियाके तुम दानिया प्रभुकबसे लीजैदान। पिता तुम्हारे नंदकै चाकर मातुजमावतिछाछ। दानदिये बिनु जाननपैहौ सुनुगूजरि मेरीबात ॥ सब सखियनके गहना बिकैहैं गजमुक्तनकेहार। तीनिटकाकै कामरिओढ़े बढ़ि बढ़ि बोलत बात ॥ नवैलाखको हरवाहमरो सबगौवनको मोल। यह कमरीकै मरमनजानत ब्रह्मा विष्णु महेश। सूरश्याम बलि आशचरणकी हरिकेचरणपरटेक १०० ॥

कैसेगोबर्द्धनजाउंकन्हैयाकरमांगतहै।

होतप्रात उठिमारगरोंकै प्रभुनिज गोकुलकरकान्ह। नंदबबाकै गउआचरावै हमसे मांगैलैदही दान्ह। अकेले डरलागतहै ॥ रतन जतनकी बनीहैंगें डुरी हीरालागे अनमोल। एको लर जो टूटीरे मोहन सब गउअनको

मोल। अकेले डरलागत है॥वादिनकी सुधिभूलीरे मोहन जादिन लायवप्रीति।बंशी बजायके मनहरिलीनोआखिर जातिअहीर। अकेले डरलागतहैं॥ श्रीवृन्दाबनकी कुंज गलिनमें बंशीलीनीछीन। सूरश्याम बलिआश चरणकी कठिनलीला प्रभुकीना।अकेले डरलागतहै १०१॥

ब्याकुलदेखिइन्द्रकोश्रीपतिउभैभुजागहिलियोउठाइ।

अभयनिभय करमाथेदीनो श्रीमुखबचन कह्यो मुसुकाइ। कहा भयो करिक्रोध चढ़े ब्रजमें तुरतहि करिलियो सहाई। हमको जानिनहीं तुमकीन्हों बिनुजाने यहकरो ढिठाइ। अब अपने जियशोचकरो जिनि यह मेरीदीनी ठकुराइ। सूरश्याम गिरिधर सबलायक इन्द्रहि कह्यो करो सुखजाइ १०२॥

यशोदानँदआनदकंदग्वालमंडलीमुनिइन्द्र

शोभासुखसिंधुरूपराशिरचोमाई।

कुंचितकच अतिविराज बदन ऊपर कमल राजमनहुं अरुणकमलउपर खंडित रविछाई। जरकसी शिर पागसोहै कुंडलछबि रविजो मोहै तीनिलोक सुरपति जाके चरणन शिरनाई। असितअरगदृग जो लोचन भृकुटीकुटिल तिलक मोचन हरनहेतु अघतीनिलोक प्रगट ब्रजआई। मधुरमुरली अधरधरे ब्रजके सखिन चितसो हरेरविके रथ अरुणथके सकै न चलाई। सुनततान प्रवन रहे यमुनाजल नाहिंबहे मधुबनकेखगमृग चितवत चित लाई। ब्रह्मआदि सुरसुरेश खोजे न पावैं महेश जननी हित भक्त जानि आपु से बँधाई। सूर अवलोकि शोभा

गिरि प्रभु के दरशलोभा करसे करजोरि नंद चरणकी बड़ाई १०३ ॥

धनिकान्हधनिराधागोरी।

धनि वह भाग सोहागधन्नि यह धन्नि नवल नवला नौजोरी। धनि यहमिलन धन्नि यह बैठनि धनि अनुराग नहीं रुचिथोरी। धनिया अरस परस छबि लटकन महा चतुर मुखभोरे भोरी। प्यारी अंग अंग अवलोकतिपिय अवलोकति लगत ठगौरी। सूरदास प्रभु रीझिथकितभै नागरिपर डारतत्रतोरी १०४ ॥

यशोदामैयाअबनचरैबोतोरीगैया।

गैया चरावन बननहिं जैबो हमरी चरावै बलैया। ब्रजयुवती सबघरकी मिलिमिलि पकड़ि नचावैं मोहिंता थेइथेइया। दे अंचल यशुमति मुसुकानी आव कान्ह मैं लेउँ बलैया। परमानंद कृष्ण मनमोहन अचलरहैं बलराम कन्हैया १०५ ॥

जलसुतप्रीतमसुतरिपुबांधवआयुधअनलनबिलखुभयोरी

मेरुसुता पति बसतहैमाथे कोटि प्रकाश सरसायग योरी॥ मारुतसुत पति अरि पुरबासी पितु बाहन भोजन न सुहाइ। हर सुतबाहन असन सनेहीमानहुअनल देह दालाइ॥ उदधि सुता पतिताकरबाहन ता बाहन कैसे समुझावै। सूरश्याम मिलि धर्मसुवनरिपु ता अब तारहि सलिल बहावै १०६ ॥

नंदजूकेबारेकान्हछांड़िदेमथनिया॥

बारंबार कहै मातुयशुमति रमनिया। नेक रहोमा-

खन लेव मेरे प्राणधनिया। और जिनि करौ बलिगईहोन बछनिया। सुर नर जाकोध्यान धरैं सुनरीजनिया॥ताकी नंदरानी मुख चूमिलीन्हों कनिया। सहसाननगुणगनत न बनिया। सूरश्यामदेखि सबभूलीं गोपधनिया १०७।

राधेबिनयकरतमनहींमनसुनहुश्यामअन्तरकेयामी।
मातु पिता कुलकानहि मानत तुमहिं न जानत हौं जग स्वामी॥ तुमरो नामलेत सकुचतिहौं ऐसे ठौररही हौं आनी। गुरुपतिजनकी कानिमानियो बारंबार कही मुखबानी॥ कैसे संग रहो बिमुखनके यह कहिकहि ना गरि पछितानी। सूरदास प्रभुको हिरदयधरि गृहजन देखिदेखि मुसुकानी १०८॥

भोरभयेनवकुंजसदनसेआवतलालगोबर्द्धनधारी।
लटपटि पाग मरगजीमाला शिथिलअंग डगमग गतिन्यारी। बिनुगुनमाल बिराजतउरपर नखछतदुइ-जचन्द्र अनुहारी। सूरदास कबचितये मोतन तबहोंनिर-खि गई बलिहारी १०९॥

प्रातसमयनँदनंदनश्यामाआवतदेखेकुंजगली।
नौ घनश्याम तरुणि दामिनि मिलि राजतरूपअनूप अली। लटपटिपाग शीश करमुरली लोचन घूमतभांति भली। सिथलितचीर मरगजीअँगिया काम कामिनीदेह छली। चारयाम निशिजागत बीती उर उमँग्यो अनु-रागबली। कज्जलअधर नयनरँग बोरीमदन नृपतिकी सेन दली। सूरबदन पंकजरसपीके अलक मधुपकीपांति

चली। प्रफुलित प्रीति परस्पर देखियत तरनि उदै ज्यों कमलकली ११० ॥

ब्रजबनितायहकहतिश्यामसोंमाखनदूधदहीअरुलावैं।
मटुकिन से हम देहिं खाहुतुम देखिदेखि नयननिसुखपावैं॥ गोरस बहुत हमारेघरघर दानपाछिलो लेहु। खायबजौन दानआजुहिको मागतहैंसबदेहु॥ सबैलेहुराखहु जिनिबाकी पुनिनपायहोमांगे। आजुहिलेहु सबैभरि देहैंकहतितुम्हारेआगे। कहेउश्यामअबभायहमारीमनही भईपरतीति। जबैचैहैंतबमांगिलेहिंगेहमहिंतुमहिभईअब प्रीति॥ बेचहु जायदूधदधि निधरक घाटबाटडरनाहिं। सूरश्याम बशभई ग्वालिनी जात बनतघरनाहिं १११॥

याहीगुनसेसुनोहोप्यारी तूमोहन गोपालहि भाई।
सकल सिंगार साजि मृगनयनी अवसर भलेवेगि चलिआई। लहँगालाल झुमुकि की सारी पचरँग शिर ओढ़नी बनाई। नवरँग उरतनसुखकी चोली कुंसुभीबरन पियहेत रँगाई। मृगमद पत्रलिखित कुचयुगबिचकुसमनिमाल अनूपबनाई। उरकर सिरसु कनक मणिलंकृत निरखत रतिपति रह्यो लजाई। कृष्णदास स्वामी सुखसागर तासों सखिननसों अरुझाई। मोहन लाल गोबर्द्धनधारी अपन जानिहँसि कंठलगाई ११२॥

बालकृश्नजागहुमेरेप्यारे।
बैठीसेज कहतिहैं जननी बारबारमुखकमल निहारे। सुन्योबचनमातकेजबहीं तनिक तनिक दोउनयनउघारे। लिये उठाय अंकभरि तबही उसनोदक सों बदनपखारे।

माखन मिसिरी और मलाई औटेउ दूधतुम लेउदुलारे।
बिबिधिभांति पकवान मिठाई आनन मेल अपुनपोवारे।
मुखपखारिझँगुली पहिराई सिरऊपर चौतनिजबधारे॥
डोलत अजर मुदित मन मोहन ब्रज जन ओट भई जू
निहारे ११३॥

गोदलियेजननीमुदितमनबालकृष्णाकोकरति सिंगार।
झँगुली लालजरी पहिनाई शिरकुलही धारति यक
सार। हँसुलीकंठ जड़ित नगमानिक अरुसोहत मोतिन
केहार। बाजूबंदलाल भुजराजत जगमगातहै परम सु-
ढार। पहुँची हाथन परस बिराजत ताकीशोभाकोनहिं
पार। मानो अहिसुत केफणिऊपर मणिकी जोतिभइ
उजियार। कटिकरधनी बिचित्रबनीछबि पगजेहरिनूपुर
झनकार। घुटुरुनधावत मनि आँगनमें ब्रजपति देखि
लजानो मार ११४॥

प्रगट दरश देगये कन्हाई।
राधागृहसे निकसतदेखे यहउनकी मनसाध पुराई।
शीश मुकुट मोतिन उर माला पीताम्बर पट सहजफि-
राई। श्यामबरन तननिरखि भुलानी अंगअंग छबिकहो
नजाई। करतिशोच मनराधा अपनेआलस भरेगयेहरि
माई। सूर श्याम निशिनेकनसोये यहैकहति पुनिपुनि
पछिताई॥ ११५॥

मोसोंबात सुनहु ब्रजनारी।
एकउपखान चलत त्रिभुवनमें तुमसो आजुउघारी।
कबहूं बालक मुंह न दीजिये मुंहनदीजिये नारी। जोई

मनकरैं सोईकरिडारैं मूड़चढ़तिहैं भारी। बात कहति अठिलाति जातिसब हँसति देतिकरतारी । सूरकहांये हम को जानैं छाछहि बेंचन हारी ११६ ॥

ग्वालसखा करजोरि कहतहैं हमहिं कान्ह तुमजिनि बिसरावहु।
जहींजहीं तुमदेह धरत हो तहींतहीं जिनिचरण छोड़ावहु। ब्रजसे तुमहिं कहूंनहि प्यारो यहै पाय हमहूं ब्रजआवत। यहसुखनहिं कहुंभुवन चतुर्दश यह ब्रजमें अवतार बतावत। और गोप जो बहुरिचले घरतिनसों कहि ब्रजछाकमँगावत। सूरदास प्रभुगुप्तबातसब ग्वालनसों कहिकहि सुखपावत ११७ ॥

कान्ह कुंवर की करे पासनी कछुदिनघटिषटमासभये।
नंदमहर यह सुनि पुलकित जिय हरि अनप्रासन योगभये ॥ बिप्रबुलाय नामलै बझियो राशिशोधि यक सुदिनधरे। आछादिनसुनि महरि यशोदा सखिनबोलि सुभगानकरे॥ युवति महरिको गारी गावति अवरमहर को नामलिये। ब्रजघरघर आनन्द बढ्योअतिप्रेम पुलक न समातहिये॥जाकोनेतिनेति श्रुतिगावत धावतशिव मुनि ध्यानधरैं। सूरदासतिनको ब्रजबनिताझकझोरति अरु अंकभरैं ११८ ॥

हरषि श्याम त्रिय बांह गहीरी।
चूकपरीहमको यहबशसों आवनकोकहिगयेहरी ॥ रिसिनि उठी झहराय झटकि भुज छुवत कहापियशर-मनहीं। भवन गई आतुरहोय नागरि जोआई मुखसबे

कही ॥ मेरेमहल आजुसे आवहुसोंहनन्दकीकोटिकही। सूरदासजबलोंजगजीऊंमिलीनहींबरुकामदही ११६ ॥

॥ तिहारे पूजिये पियपाय।

कैसीकैसी उपजत तुमपै कहत बनायबनाय। अस न अधर केवश्याम भये क्यों परे पटपलटाय। रुचिरक पोल पीककहँलागीउरजयपत्रलिखाय। गिरिधरलाल जहांनिशिजागे तहांदेहुसुख जाय। कुम्भनदास प्रभु छांडो अटपटीअब तुम्हैको पतिआय १२० ॥

गावति गोपी मृदुमधुबानी।

जाकेभवनबसत भुवनपति राजानंद यशोदारानी। गावत बेद भारती गावत गावत नारदादि मुनिज्ञानी। गावत शिवकालगण गंधर्व गोकुल नाथमहातमजानी। गावतचतुरानन गज आनन गावत शेष सहसमुखरास। मनक्रम बचन प्रीतिपद अम्बुज अवगाहत परमा नँद दास १२१ ॥

अंग सब मिलि लागे दुखदेन।

अपनी पिशुनता कहांकहौं सखिबघनाकियोकुचैन। लोचन भँवर भये उड़िबेको बदन कमल मधुलैन। कान नेम ब्रतलियो सुननको बिना बदन बिधुबैन। नासाख-सत बचन नहिं निकरत मनन धरत कछुसैन। पगन चलत इक पेंडनीठिके तनपुर पसरेवमैन। अबल्याऊंब्र-जनाथ निकट तोहिंतौलोंइ हसबे सहैन। सूरनिमिष समहोत युगहि युग क्यों बिरमाउंरैन १२२ ॥

श्यामसब भाजन फोरि पराने।

हांकदेत पैठत हैं पैला नेक न मनहिं डराने॥ छी-के छोरि मारि लरिकनको माखनदधि सबखाई। भवन मचेउ दधिकांदौ लरिकरि रोवतपायें जाई॥ सुनु यशुमति सबही के लड़िका तेरोसो कहुंनाहीं। हाटनि बाटनि गलिनकहूं कोउ चलिनहिं सकतदुराहीं॥ ऋतु अनऋतु को खेलकन्हैया सबदिन खेलतफाग। रोंकि रहत गहिगली सांकरी टेढीबांधत पाग॥ बारेते सुतये ढँगलाये मनहीं मनहिं सिहाति। सुनहुसूर ग्वालिनिकी बातें सकुचिमहरि पछिताति १२३॥

काहेको रोंकत मारग सूधो।

सुनहु मधुप निर्गुण कंटक ते राजपंथ क्योंरूंधो। की तुमैं सिखै पढ़ाये कुब्जा कीकहि श्याम घनजूधो। बेद पुराण सुमृत सबढूंढ़ो युवतिन योगकहूंधो। तको कहां परेखो कीजै जानत छाछ न दूधो। सूर मूर अंकूर गयेल ब्याज निबेरत ऊधो १२४॥

राधे बसन श्याम तन चीन्ही।

सारँग बदन विलास विलोचन हरि सारँग जानि रति कीन्ही। सुधापान करके नीकी विधि रहेउ शेष मुद्रा फिरि दीन्ही। सूर सुवेष आहि रति नागर भुज आकरषि बाम करलीन्ही १२५॥

अथ राग सूहो के भजन॥

रासरसिक गोपाललालवृजबालसंगबिहरतवृन्दाबन ।
सप्त सुरन मुरली बाजति राजति अधरनि धुनिसुनि मोहे सुरनरगनगंधर्व गन । तरुन कान्हतरुतमाल केट-त तरुण गोपिका जूथ निकट पट पीतांबर नीलांबरतन तन। निरत करत उघटत संगीतपदताथेइथेइ ताकहत सूर प्रभुनिरखि परस्पर रीझत मनमन १२६ ॥

अतिहि अरुण हरिनयन तिहारे ।
मानहुं रातिमेंभाइ रँगमगेकरतकेलिपिय पलकनपा रे। मंदमंद डोलत शंकितसे शोभितमधुपमनोहरतारे । मनहुं कमल संपुट महँ बिंधेव उड़िनसकत चंचल अति वारे। झलमलात जगिरैन जनावत रतिरस मत्तभ्रमत अनिआरे । मानहुं सकल जगत जीतन को काम बाम स्वरशान सँवारे। अट पटात अलसात पलक पटमूंदत कहुंबक करत उघारे । मनहुं मुदित मरकत मणि आं गन खेलत खंजरीट चटकारे। वारबार अवलोकि राखि यत कपट नेह मन हरत हमारे । सूरश्यामसुखदायक लोचन दुखमोचन रोचन रतनारे १२७ ॥

मैं तुम्हरेमनकी सबजानी ।
आपुसमें इतराति फिरतिहौ दोषदेतिहौ श्यामको आनी। मेरोहरिकहां दशहि बरष को तुमरो यौवन है उमदानी। लाजनहीं आवति इनलगिरिनि कैसेधौंकहि आवति बानी। आपुहि हारतोरि चोली बँद उरनख

घात बनाय निशानी। कहकान्हाकी तनिक अँगुरिया यह कहि बारबार पछितानी। देखहुजाय और काहूको हरिपररहति सबैइड़रानी। सूरदास प्रभुमेरो नान्हो तुमतरुणी डोलतिअठिलानी १२८॥

अतिकोमल तनु धर्‌यो कन्हाई।

गये तहां जहँ काली सोवत उरग नारि देखतअकुलाई। कह्यो कौनको बालकहै तू बारबार कहि भागिन जाई॥ क्षणकहिमें जरिभसम होयगो जबदेखै उठि जागि जम्हाई। उरग नारिकी बाणीसुनिकै आपहँसेमन में मुसुकाई। मोको कंस पठायो देखन तूयाको अबदेहि जगाई। कहां कंत दिखरावत इनको एक फूंकही में जरिजाई। पुनिपुनि कहति सूरके प्रभुको तूअब काहेन जाय पराई १२९॥

रागटोड़ीकेभजन॥

बूझत श्याम कौन तूगोरी।

कहांरहतिकाकीहै बेटी देखीनहीं कहूं ब्रजखोरी। काहेको हम ब्रज तन आवति खेलत रहतिआपनीपोरी। सुनति रहति श्रवणनि नंदढोटा करत रहत माखन दधि चोरी। तुम्हरो काह चोरि हमलैहैं खेलनि चलो संग मिलजोरी। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि बातनि भुरै राधिका गोरी १३०॥

रागकाफीकेभजन॥

सखीनोहिंमोहनलालमिलावै।

ज्यों चकोर चंदाको एक एक मिरगी ध्यान लगावै। बिनुदेखे मोहिंकल न परैरी यहकहि सबनि सुनावै। बिनु कारणमैं मान कियरी अपनहि मनदुखपावै। हाहाकरि करि पाँयन परि परि हरि हरि टेर लगावै। सूरश्याम बिनु कोटि करो जो और नहीं जिय आवै १३१॥

कन्हैया हार हमारो देहु।

दधि नवनी घृतजो कुछ चाहो हो तुम ऐसेहि लेहु॥ काहकरों दधि दूध तुम्हारो मोसों नाहीं काम। यौबन रूपदुराय धरोहै ताहि को लेत न नाम॥ नीकें मन होय माँगति तुमसों बैर नहीं उर राखति। सूर सुनहुरी ग्वालि आयानो अंतर हमसों राखति १३२॥

अथ रागगूजरीकेभजन॥

सखोरी काहेको गहरु लगावति।

सूधो कहा इतनो सुख सुनिकै क्यों नाहिंन उठि धावति। आजुहि सुखविधाताकोनीमनजुहुती अतिभावति। सुतको जन्म यशोदा के गृहता लगि तुमहिबुलावति। कनक थार भरि लैदधि रोचन बेगि चलोमिलिगावति। सांचहु सुदिन नन्दनायक को हो नाहिं न बौरावति। आनँद उर अंचल न सम्हारति शीश सुमन बरषावति।

सूरदास शोभा तेहि अवसर जहां तहांते आवति १३३॥

राधे तू अतिही है भोरी।

झूठेहि लोग उड़ावति घर घर हम जान्यो अब तोरी। कंठ लगाय लईरिस छांड़ो चूकपरी हम ओरी। तुम निर्मल गंगाजलहू ते दुरति नहींवहचोरी। घरजैहौं की यमुना जैहो हम आव संग गोरी। सूरदास प्रभु प्यारी राधा चतुर दिननकी थोरी १३४॥

श्याम यह तुमसे क्यों न कहों।

जहां तहां घर घरको घेरा कौने भांति सहों॥ पिता कोपकर वारलेतकर बंधु बधन को धावै। मातुकहै कन्या कुल को दुख जिनि कोऊ जग जावै। विनती एक करों कर जोरे यहि बीथी जिनि आवहु। जो आवहु तो मुरली मधुर धुनि मो जिनि कान सुनावहु॥ मन क्रम बचन कहति हौं सांची मैं मन तुमहिं लगायो। सूरदासप्रभु अंतर्यामी क्योंन करहु मन भायो १३५॥

सुनि सुनि बचन नारि मुसकानी।

गईसदन अतिहोय उतावलि आनँदसहित लजानी। फूली फिरति कहति नहिं काहू मीन मिल्यो जनु पानी। बार बार श्याम रति रसकी कही प्रगट करिबानी। वासर कल्प समान न बीतत कैसेहुं रैन तुलानी। सूरदेखि गति मत मतंग की अवधि जानि हरषानी १३६॥

पिया छबि निरखि हँसत त्रिय भारी।

कहां महावर पाग रँगाइये शोभा एकै न्यारी॥ अरुण नयन अलसात देखियत पलक पीक लपटानो।

अधर दशन क्षत बंदन राजत बंधुक पर अलिसानो ॥
हृदय रुचिर मोतिन की माला नख रेखी तेहि तीर।
बिनगुणमाल सूरके स्वामी कुंकुम श्याम शरीर १३७॥

यशोदा कान्हहु तेदधि प्यारो।
डारिदेहि करमथति मथानीतरसत नंद दुलारो।
दूधदही माखन लैवारै जाहिकरति तूगारो। कुम्हिलानो मुख चंद देखि छबिकाहे न नेक निहारो। ब्रह्मा सनक शिव ध्यान न पावत सो ब्रज गैयनिचारो। सूरश्याम पर बलिबलि जैये जीवन प्राण हमारो १३८॥

रागसिन्धुकेभजन॥

देखोमाइ श्याम सुरति अब आवै।
दादुरमोर कोकिला बोलैं पावस अगम जनावै। देखि घटाघन चाप दामिनी मदन शृंगार बनावै। बिरहिनि देखि अनाथ नाथ बिनु चढ़िचढ़ि ब्रजपर आवै। कासों कहों जाय कोइ हरिपै यह संदेश सुनावै। सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि ब्रज बनिता सचु पावै १३९॥

हरिबिनुवेसुख बहुरिकहां।
यदपि नयन निरखत वह मूरतिफिरमन जाततहां॥
मुख मुरली शिर मोर पंख बने अरु घुघुचिनको हार। आगे धेनुरेणु तन मंडित चितवनि तिरछीचार॥
राति दिवस अंग अंग अपने हित हँसि मिलि खेलत खात। सूरदेखिवहप्रभुताउनकीकहीनआवैबात १४०॥

अथ रागसारंगकेभजन॥

सखिरी श्याम कहाहित जानै।

जो कोउ प्रीति करै कैसेहु हठि अपनेही गुणठानै। देखो तो जलधरकी बातें बरसत अपने जानै। चातक सदा चरणको सेवक रटतबिना जल पानै। भवँर कुरंग काग कोयल अहि कबि सब कपट बखानै। सूरदास जो सरबस दीजै कारेकृतहि न मानै १४१॥

मधुकर राखि योगकी बात।

कहि कहि कथा श्याम सुंदरकी शीतल करु सब गात। जेनिर्गुण गुण हीन गनैगो सुनि सुंदरि अकुलात। दीरघ नदी नाव काग़ज़की को देखो चढ़िजात। हम तनहेरि चितै पट अपनो देखि पसारहिलात। सूरदास प्रभु बन बन बसिके कैसे कल्प बिहात १४२॥

ग्वालिन करसे कवर छोड़ावत।

जूंठो लेत सबन के मुखको अपने मुखलै नावत। षटरसके पकवानधरे सब तामें नहिं रुचिपावत। हाहा करिकरि मांगिलेत हैं कहत मोहिं अति भावत। यह महिमा एई पै जानत जासे आपु बन्हावत। सूरश्याम सपने नहिं दरशत मुनिजन ध्यान लगावत १४३।

चरावत वृन्दाबन हरिधेनु।

ग्वाल सखा सब मंगलगाये खेलतहैं करिचेनु। कोउ गावत कोउ मुरलि बजावत कोउविषाणकोउबेनु। कोउ निरतत कोउ उघटि तारिदैं जुरिब्रज बालक सेनु।

बिबिधि पवन जहँ ताहां बाहै निशि दिन सुभग कुंज घनयेन। सूरश्याम निजधाम बिसारत आवत यह सुखलैन १४४॥

बहुरि पछितैहैरी ब्रजनारि।

देखुजाय ठाढ़े मग जोवत सुन्दर श्याम मुरारि। ऐसीनिठुर नेक नहिं चितवति चंचल नयन पसारि। कहा गरब या झूंठे तनको देखि हाथलै बारि। तजिअभिमान मानुरी मानिनि मैं जु करति मनुहारि। सूर हँसे स्वाती सुत धोखे कबहुंक खात जुवारि १४५॥

राधे हरितेरो नाम उचारैं।

तुम्हरेइ गुण ग्रंथित करिमाला रसना करसों टारैं। लोचन मूंदि ध्यानधरि दृढ़ करि नेक न पलक उघारैं। अंगअंग प्रति रूप माधुरी उरते नाहिं बिसारैं। ऐसेनियम तुम्हारोपियके कहजिय निठुर तिहारैं। सूरश्याम मन काम पुरावहु उठि चलि कहे हमारे १४६॥

बिचारतही लागे दिनजान।

तुमबिनु नंदसुवन यहिगोकुल निशि भइ कल्पसमान। मुरली शब्द धेनुकी बोलनि सुनियत नाहिंन कान। चलत न रथ पर गहे श्यामयों तब लागी पछितान। हैकोउ जाय कहै माधवसे धीर न धरहिं परान। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशबिन होइहैं निपट बिनान १४७॥

बेगिनकुंजचलहुनँदनन्दनतुमबिनराधानिपटनिरंग।
सन्तन हित करते अनहित रिपु सदृश होत उनके

सबअंग। बहत मंदमलयानिल ताको प्रकटित कुबरी भीम भुजंग। पिकचातक शुकधुनिशंकामन अवलोकत भुवधनुषहु पंग। अति गौरंगश्याम तासोंमिलि उभय उर अधिक उतंग। नाहिंन आवत निकट न परसत शिव शिव भ्रमकरि डरत अनंग। अंजन राहुरूप नयनन में निरखत ही बिधुको मद भंग। सूर दुसंधि रह्यो सजनी तन अब नहिं रह्यो श्याम बिनुसंग १४८॥

परीपुकार द्वारगृहगृह प्रति यहसांची भईयोगीआयो।

पवन सधावन भवन छोड़ावन रवन रसाल कृपाल पठायो। आश अवधि प्रेमावधि जीवन तेउ शिथिलकरि काहितु लायो। कनक बेलि कामिनि ब्रजबालहि योग अगिनि दीवे दिनधायो। भूभरहरण असुर मारण हित कारण कान्ह मधुपुरी छायो। यादोउमें ब्रजएकोनाहिंन काहेको उलट्यो यश बितरायो। सबलश्याम धाम दै पठयो नृपअधिकार सारजे पायो। सूर न प्रीति बिसारि सांवरो भली चतुरता जगत सुनायो १४९॥

मधुकर भली सुमति मतिखोइ।

हांसी होनलगी या ब्रजमें जोगहि राखहु गोइ। आतम राम लखावत डोलत घटघट व्यापक जोइ। दावे कांष फिरत निर्गुण को ह्यां गाहक नहिंकोइ। प्रेमकथा सोई पैजानै जापै बीतीहोइ। तूनिरस एतीक हा जानै बूझि देखिबे बोइ। बड़ो दूत तू बड़े ठौर को कहिये बुद्धिबड़ाइ॥ सूर्य्यदासपूरीख सुपट पद कहत फिरतहै सोइ १५०॥

माधव आवनिहार भये।

अंचल उड़त अधिक मन आनँद फरकत नयनखये। भईप्रतीति आपने जियते सबनि शृंगार ठये। मानहु नौ बसंतके आगम प्रकटत पात नये। शोचि बिचारि जीय अंतर मति चितवत निकट भये। सूरश्याम अंतर ते बिकसिकै सब सुख हँसि पुजये १५१॥

ऊधो ऐसी हम नहिंजानी।

सुतके हेतु मरम नहिं पायो प्रकटे शारँग पानी॥ निशि बासर छतियालै लाऊं बालक लीलागाऊं। ऐसे भाग बहुरि फिरि होइहैं मोहन गोद खेलाऊं॥ जा कारण मुनि ध्यान धरे शिव अंग बिभूति लगावैं। सो बालक लीलाधरि गोकुल ऊखल साथ बँधावैं॥ बिहरत नहीं बज्रकी छतियां हरिबियोग क्यों सहिये। सूरदासब्रजनन्दनँदनबिनुकहोकौनबिधिरहिये१५२॥

चलेबन धेनु चरावन कान्ह।

गोप बालक कछु सयाने नन्दके सुत नान्ह॥ हरष जो यशुमति पठायो श्याम मनहिं अनंद। चले बल के साथ मोहनसंग बालक वृन्द॥ सखाहरिको यह सिखावत छांड़ि कहूं जनिजाहु। सघन वृन्दाबन अगम अति जाउकहूं भुलाहु॥ नेकहू जिनि संग छांड़ो बनहीं बहुत डरात। सूरकेप्रभु हंसत मनमें सुनतही यहबात१५३॥

चरावत वृन्दाबन हरिगाय।

सखालिये सँग सुबल सुदामा डोलत हैं सुखपाय। क्रीड़ा करत जहां तहँ सब मिलि अति आनन्दबढ़ाय।

बगरि गई गैया बन बीथिन देखी अति बहुताय। कोउ गै ग्वालधाय बन घेरन कोउ गै बछरु लवाय। आपु हि रहे अकेले बनमें कहुं हलधर रहेजाय। बंशीबटशो-शीतल यमुना तट अतिहि परम सुखदाय। सूरश्याम तहँ बैठि बिचारत सखा कहां बिरमाय १५४॥

मधुकर होहु यहां से न्यारे।

तुमदेखत तन अधिक तपतहै अरु नयननि के तारे। अपनो योग सेति धरि राखो इहां लेत को डारे। मो कोजनि अपने मुखकरि हैं मीठेसे पुनिकारे। हमरेगि-रिवर धरके नाम गुन बसे कान्ह उरबारे। सूरदासहम सबै एकमत तुम सब खोटेकारे १५५॥

मधुकर कौन देशते आये।

जबते कूरगयो लैमोहन तबते भेद न पाये। जाने सखा साधु हरिजूके अवधि बधन कोआये। अबयाभा-गनँदनन्दनके या स्वामिनको पाये। आसन ध्यानबाय अवरोधन अलितन मन अति भाये। हैंबिचित्र अतिगुण नि सुलक्षण गुनी योगमतगाये। मुद्राशृङ्गी भस्म त्वचा मृग ब्रज युवती तन ताये॥ अतसी कुसुम बरन मुख मुरली सूरश्याम किन लाये १५६॥

मधुकर प्रीति किये पछितानी।

मैंजानी ऐसी निबहैगी उन कुछ औरैठानी। कारे तनको कौन पतीजै बोलत मधुरीबानी। हमकोलिखि लिखि योग पठावत आपु करत रजधानी। सूनीसेज

श्यामबिनु मोको तलफत रैनिबिहानी। सूरश्याम प्रभु मिलिके बिछुरे तासे मति जो हेरानी १५७॥

बिधातहि चूकपरी मैं जानी।

आजु गोविंदहि देखिहों जाइ इहै समुझि पछितानी। रचिपचि शोचि सँवारि सकल अँग चतुर चतुरई ठानी। दृष्टिनदई रोमरोमनि प्रतिते तनकला नशानी। कहाकरो अतिसुख दोउनयना उमँगि चलतपग पानी॥ सूर सुमेरु समायकहा करों बुद्धिनशानि पुरानी १५८॥

करनदे लोगन के उपहास।

मनक्रम बचन नंदनन्दन को नेक न छाड़ो पास। सबमधुबन के लोग चिकनिया मेरे भाये घांस। अबतो यही बसीरी माई नहिं मानों गुरुत्रास। कैसे रहेउ परेरी सजनी एकगांवको बास। श्याममिलन की प्रीति सखीरी जानत सूरज दास १५९॥

चितैबोछांड़ि देरी राधा।

हिलिमिलि खेलि श्यामसुंदर सों करति कामको बाधा। की बैठीरहु भवनआपने ह्यांकाहेको आवै। मृग नयनी हरिको मनमोहतिजब तू देखि दुहावै॥ कबहुंक करते गिरति दोहनी कबहूं बिसरति नोइ। कबहूं वृषभदुहतहैं मोहन नाजानो का होइ॥ कौन मंत्रजानति तू प्यारी पढ़िडारति हरिगात। सूर श्याम कोधेनु दुहनहै कहति यशोदा मात १६०॥

दूरिकरहु बिनाकर धरबो।

मोहेमृगनाही रथहाकेव नाहिंन होतचन्दकोढरिबो।

बीती जाहि सोई पैजानै कठिनहै प्रेमफाँसि को परबो। जबते बिछुरे कमल नयन सखि रहत न नयननीरको गिरबो। शीतलचन्द्र अगिनि समलागत कहिये धीरकौन बिधिधरिबो। सूरदास प्रभुतुम्हरे दरशबिनु सब झूंठो जतननिको करिबो १६१॥

अबगति पंगुभयो मनमेरो।

आयो इहां निगुण कहिबेको भयो सगुन को चेरो। अति अज्ञान कहत कहि आयो दूत भयो वहिकेरो। निज जन जानि जतनते तिनसों कीनो नेह घनेरो। मैं कछु कहै ज्ञान गाथा से नेक न परसति नेरो। सूर मधुप उठि चल्यो मधुपुरी बोरि योग को बेरो १६२॥

श्यामातू अति श्यामहिं भावैं।

बैठत उठत चलत गोचारत तेरिय लीलागावैं। पीतै पीत बसन भूषण सजि पीत धातु अँगलावैं। चन्द्राननि सुनि मोर चन्द्रिका माथे मुकुट बनावैं। अति अनुराग सैन संभ्रम मिलि संग परम सुखपावैं। बिछुरत तोहिं क्कासि राधा कहि कुंजकुंज प्रतिधावैं। तेरो चरित लिखैं अरु निरखैं बासर बिरह गँवावैं। सूरदास रसरास रसिकसों अंतर क्यों करि आवैं १६३॥

हरित्वहिं बारम्बार सम्हारै।

कहि कहि सब युवतिनके नामहिं नहिं रुचिजेहि उर धारै॥कबहुंक आंखिमूंदिकरि चाहत चित धरिठौरतिहारै। तव प्रसिद्ध लीला बिहारते अब नहिं तुमहिं बिसारै॥ जो जाको जैसे करि जानै सो तैसे हित मानै। उलटी

रीति तुम्हारी सुनिकै सब अबिरुजु करि जानैं॥ क्योंपतिया पठवै नहि उनको बांचि समुझ सुख पावै। सूरश्यामहै कुंजधाम में अन्त न मन बिरमावै १६४॥

श्यामहि बोलिलियो ढिगप्यारी।

ऐसी बात प्रगट कहुं कहिये सखिन मांझ कतला जनिमारी। एक ऐसेहि उपहास करत सबतापर तुम यह बात पसारी। जाति पांतिके लोग हँसहिंगे प्रगट जानिहैंश्याम भतारी। लाजनिमारत कतहोहमकोहाहा करति जाति बलिहारी। सूरश्याम सर्वज्ञ कहावत मातु पिता सों पावत गारी १६५॥

कहाभये अतिढीठ कन्हाई।

ऐसी बात कहत सकुचत नहिं कहधों अपनीलाज गँवाई। जाहु चले लोगन के आगे झूठी बानी कहत सुनाई। तुम हँसि कहत ग्वाल सुनिकै सबअपनेघरघर कहिहैं जाई। बहुरि होहुगे दशहि बरषके बात कहतहौ बनैबनाई। सूरश्याम यशुमति के आगे यहै बात सब कहैं सुनाई १६६॥

निर्गुण कौनदेशको बासी।

मधुकर हँसि समुझाय सोंहदे बूझत साचन हांसी। कोहै जनक जननि को कहियत कवन नारिको दासी। कैसो बरण भेषहै कैसोवहि रसमें अभिलासी। पावैगो पुनि कियो आपनो जारै कहेगो गासी। सुनत मवनहै रह्यो ठग्योसो सूर सबै मति नाशी १६७॥

बिकानी हरिमुखकी मुसुकानी।

परबशभई फिरति सँग निशिदिन सहज परी यह बानी। नयनन निरखि बसीठी कीन्हों मन मिलयो पय पानी। गहि रतिनाथ लाज निजपुरते हरिको सौंपी आनी। सुनिसुनि सुमुखिनंदनंदनकोदासीसबजगजानी। जोइजोइ कहत करति सोई कृत आयसु माथे मानी। गई ज्ञाति अभिमान मोह मद पति परिजन पहिंचानी। सूरसिंधु सरिता मिलि जैसे मनसा बूंदहेरानी १६८॥

भेनिज़ुनयन अनाथ हमारे।

सुन्दरश्याम उहांते सजनी सुनियतदूरि सिधारे। वैजलहैं हम मीन सखीरी कैसे जीवहिं न्यारे। हम चकोर षातक अंबुद तन सुधा बर्ण प्रतिपारे। मधुबन बसत आश दरशन की जोइ जोइ मगुहारे। सूरश्याम कीनी बिधिऐसी मृतकहुं ते फिरि मारे १६९॥

बिनुगोपाल बैरनभइ कुंजैं।

तबये लता लगत अतिशीतल अब भईं विषम ज्वालकी पुंजैं। वृथाबहुत यमुना खग बोलत वृथाकमल फूलेअलिगुंजैं। पवन पानिघन सारस जीवन दधिसुत किरणि भानुभइभुंजैं। ये ऊधव कहियो माधवसेबिरह कदन करि मारत लुंजैं। सूरदासप्रभु की मगु जोवत अँखियां भईं बरन ज्योंगुंजैं १७०॥

ऊधवकहत न कछु बनिआवै।

शिरपर सवति हमारे कुबरी चामके दाम चलावै। उन कछु मंत्र पढ्यो चन्दन से ताते श्यामहिं भावै।

अपने रंगहि रँगेसांवरो शुक ज्यों बैठि पढ़ावै। छांड़ेउ नेह हेतु गोकुल सों लिखि लिखि योगपठावै। बिसरेउ शेष असुर की दासी अब कुलबधू कहावै। ज्यों नटिनी लघुहाथ लकुट लै कपिज्यों नाच नचावै। सूरदास प्रभुजरी बहुत दुख तापर लोन लगावै १७१॥

ऊधव हरि हमैंनिपट बिसारी।

जबहीं गमन कियो मधुबनको बहुत करीमनुहारी। अबतो वे पतियात नहीं ना हरिपठवत महतारी। उनहू तो अलियत आवन की योग सँदेशनि टारी। अब लगि प्राण रहे आशा तकि एजो चले परिचारी। सूरदास स्वामी सों कहियो दे तिल अँजुरी ढारी १७२॥

ऊधव अब नहिं श्याम हमारे।

मधुबन बसत बदलिसे लीन्हों माधव मधुपतिहारे। इतनी दूरि भये कछु औरे जोइ जोइ मगुहारे। कपटी कुटिल काग कोयलज्यों अंत भये उड़ि न्यारे। रस लै भँवरजायस्वारथहित प्रीतम चितनबिसारे। सूरदासतिनसों कह कहिये जेतनहू मन कारे १७३॥

देखियत कालिन्दी अतिकारी।

कहियो पथिक जाय हरिसों यों भईबिरहजरजारी। मनो पलिकाते परी धरणि धसि तरँग तलफ तनु भारी। तट बालू उपचार चूर मनो स्वेद प्रवाहपनारी। बिगलित कच कुश कास पुलिन मानों पंकज कज्जल सारी। भ्रमर मनोमति भ्रमति चहू दिशि फिरति हैं अंगदुखारी। निशि दिन चकई ब्याज बकति मुख किन

मानहुं अनुहारी। सूरदास प्रभु जे यमुनागति ते गति भई हमारी १७४॥

अथ रागधनाश्रीकेभजन॥

प्रियामुखदेखो श्यामनिहारि।

कहि न जाय आननकी शोभा रही बिचारि बिचारि। नीलाम्बर क्षीरोदक घूंघट सनमुख कियो सुधारि। मनो सुधाकर दुग्ध सिंधुते काढ्यो कलकपखारि। भाललालसेंदुर बिन्दीपर मृगमदकी छबि न्यारि। मनो वँधूक कुसुम ऊपर अलि बैठो पंख पसारि। चंचल नयनचहूं दिशि चितवति जनुखंजनअनुहारि। मनहुं पर स्पर करतलड़ाई कीरबचायेरारि। वसरकेमुक्तामें झांई बरणअनुबिराजत चारि। मानहुं सुर गुरु शक्र भौमशनि चमकत चंद मँझारि। तरिवन सरवन रतन मणि भूषितशिर श्रीमत सँवारि। जन युगभानु दुहूं दिशि उगयेभयो द्विधातम हारि। सनमुख दृष्टिपरे मनमोहन लज्जितभइ सुकुमारि। लीन्ही उमँगि उठाय अंकभरि सूरदास बलिहारि १७५॥

सेवा मानि लई हरि मेरी।

अब काहे पछिताति राधिका श्यामजात करफेरी। गुरुजनमें भावहिकी पूजा और कहों ककुटेरी। मोहन अति सुख पायगयेरी चाहति हौंकहमेरी। तेरे बशभये

कुंवर कन्हाई करतिकहां औसेरी। सूरश्या मतुमकोअति चाहत तुम प्यारी हरिकेरी १७६ ॥

अँखियाँ हरि दरशनको भूंखी।

कैसेरहैं रूपरसराची ये बतियां सुनि रूखी। अवधिगनत इकटक मगु जोवत तब एतो नहिं झूखी। अब इन योग संदेशनि ऊधव अति अकुलानीदूखी। बारक बड़ मुख फेरि देखावहु दुहिपै पिवत पतूखी। सूरसकति मतिनाउँ चलावें ज्यों सरिता भरि सूखी १७७ ॥

अँखियाँ हरिदरशन की प्यासी।

बिनुदेखे पल युग सम बितवत क्यों जीवें बृजबासी। घरघर छाड्यो बनबन डोलत ऐसे फिरतउदासी। इहै सुहात रैनिदिन कहियत हैं निर्गुण अविनाशी। ज्योंबिनु भोर कमल शशि त्रासित परे प्रेमकी फांसी। सूरदास प्रभु बिनु यों लागत जैसे मीन जलसासी १७८ ॥

प्रिया पिया लीन्हीं अंकमलाय।

खेलत में तुम बिरह बढ़ायो गई कहां बितताय। तुमहीं कह्यो मान करबेको आपुहि बुद्धि उपाय। काहे बिवश भई बिनुकारण ऐसी गई डेराय। सुनि प्यारी यह भाव बतायो अंतर गये जनाय। बारबार आसिगहा दीन्हों अबाहिंरही मुरझाय। सींचीकनक लतासूरजप्रभु अमृत बचन सुनाय। अति सुखदै दुखयों बिसरायो राधा रमण कन्हाय १७९ ॥

देहँधरे को फल यह प्यारी।

लोक लाज कुलकानि मानिये डरिये बंधु पिता मह-

तारी। श्रीमुख कह्यो जाहुघर सुन्दरि बड़े महर वृषभानदुलारी। तुम औसेर करत सबही इहैं जाहु बेगि देहैं पुनि गारी। हमहुं जाहिं ब्रज तुमहुंजाहु अब गेहनेह क्यों दीजै डारी। सूरदासप्रभु कहतप्रियासों नेकनहीं मोसे तुम न्यारी १८० ॥

चलो भवन मनहरि हरि लीन्हों।

पद द्वय जाति ठठुकिफिरि हेरतिजियह कहतिकहां हरिकीन्हों। मारगभूलिगई ज्यहिआई आवतको नहिंपावति चीन्हों। रिसकरि खिझिखिझिके लटझटकतिश्याम भुजनि छुटकाय इन्हों। प्रेमसिंधुमें मगन भईत्रिय हरिके रंगभई अतिलीन्हों। सूरदासप्रभुसों चितअँटक्यो आवत नहिंइत उतही पतीन्हो १८१ ॥

यशोदा तेरो कठिन हियोरी माई।

कमल नयन माखन के कारण बांधे उलूखल लाई। जो सम्पदा देव मुनि दुर्लभ सपनेहु दे न देखाई। याही ते तू गर्भ भरीहै घर बैठे निधिपाई। तब काहूको सुत रोवत सुनि दौरि लेत हिय लाई। अब काहेघर के लरिका सों करति इती जड़ताई। बारम्बार सजल लोचन भरि रोवत कुंवर कन्हाई। कहा करों बलिजाउँ छोरती तेरी सोंह दिवाई। जोमूरति जलथलमें व्यापक निगम न खोजत पाई। सोयशुमति अपने आंगन में देकर ताल नचाई। सुर पालक सब असुर सँहारक त्रिभुवन जाहि डेराई। सूरदास प्रभुकी यह लीलानिगम नेति नित गाई १८२ ॥

यशुमति किन यहसीखदई।

सुतहि बांधि तू मथति मथानी ऐसी निठुरभई। हेर बोलि युवतिनको लीन्हों तुम सब तरुणि नई। लरि-कहि त्रास देखावत रहिये कत मुरझाय गई। मेरे प्राण जिवन धन माधव बाँधे बेर भई। सूर श्याम को त्रास दिखावति तुम कहा कहति दई १८३॥

यहि बिधि पावस सदा हमारे।

पूरण पवन श्वास उर ऊरध आगि जरत एकठारे। बादर श्याम श्वेत नैननिमें बरषि अंशु जल धारे। अरुण प्रकाश पलक द्युति दामिनि गरज नामपियपारे। चातक दादुर मोर प्रकट ब्रज बात निरंतर आरे। ऐऊ तो रबितें अटके जब श्याम रहे हित डारे। सूर कहा कहिये को जानै याहित के व्यवहारे। तुमहिं सेइवहिकै पछितानी कठिन बिरह के नारे १८४॥

हमारे बोलबचन परतीति।

ऐ ऊधव हम जानति नाहिन तुम्हरेगांव कि रीति। सुन्दर श्याम गये मधुबन को कहेव कंस रिपु जीति। उनकी बातन कौन पतोजै भुस ऊपरकी भीति। आवन अवधि गये बदि हमसों गये दिन बहुतक बीति। सूर-दासप्रभु मिलहुकृपाकरि सुमिरिपुरातनप्रीति १८५॥

भयो अलि नेह निरंतर भारी।

छांड़ेव भोग योग ब्रज भीतर श्याममिलनब्रतधारी॥ नयन कमल पुतरीहि पारथी बीर सजल शिरलाये। परी बिरह परनाम अवनि को उठि जोगई हरि आये॥

सुने सखा तैसेई लागत सब गुण भेष बनाये। जिती सुनति मधुबन की बातें सही सूर तू गाये १८६ ॥

नेकु न मनसे टरत कन्हाई।

एक ऐसेहि छकि रही श्याम रस तापर यहि यह बात सुनाई। वाको सावधान करि पठयो चली आपु जलको अतुराई। मोर मुकुट पीतांबर काछे देखेव कुंअर नन्द कोनाई। कुंडल झलकत ललित कपोलन सुन्दर नयन बिशाल सुहाई। कहेव सूर प्रभु ये ढँग सीखे ठगत फिरत हौ नारि पराई १८७॥

वृन्दाबन मो को अति भावत।

सुनहु सखा तुमसुबल सुदामा बृजसे बन गोचारन आवत। कामधेनु सुरुतरु सुख जितने रमा सहित बैकुंठभुलावत। यह वृन्दाबन यह यमुना तट ये सुरभी अति सुखद चरावत। पुनि पुनि कहत श्याम श्री मुख सों तुम मेरे मन अतिहि सुहावत। सूरदास सुनि ग्वाल चकित भे यह लीला हरि प्रकट देखावत १८८॥

कोउ बृजबांचत नाहिंन पाती।

कत लिखि लिखि पठवत नँदनंदन कठिन बिरह की कांती। नयनसजल कागज़ अति कोमल कर अँगुरी अतिताती। परसत जरै बिलोकत भीजै दुहूं भांति दुखैछाती। क्यों समुझै ये अंक सूर सुनि कठिन मदन शर घाती। देखे जियहि श्याम सुन्दर के रहहिं चरण दिनराती १८९॥

ऊधव बात कहत ना जानै।

बड़े लोगनन बिबेक तुम्हारे ऐसे नयन अयाने। हमसों कही लई सो कहिकै जिय गुनि लेहु अपाने। कहँ अबला कहँ दिशा दिगम्बर समुख करो पहिचाने। सांच कहो तुमको अपनीसें बूझति बात निदाने। सूर-श्याम जब तुम्हैं पठाये तब नेकहु मुसुकाने १६० ॥

ऊधवमन नहिं हाथ हमारे।

रथ चढ़ाय हरि संग गयेले मथुरा जबहिं सिधारे॥ नातरु कहां योग हम छांड़हिं अति रुचिकै तुमल्याये। हमतो झकत श्यामकी करनी मनले योग पठाये॥ अजहूं मन अपनो हम पावैं तुमसे होय तो होय। सूर शपथमैं कोटि तिहारी कही करैंगी सोय १६१॥

मधुकर कौन मनायोमाने।

अबिनाशी अति अगम अगोचर कहां प्रीति रसजाने। सिख बहुजाहि समाधिकी बातें जेहैं लोग सयाने। हम अपने ब्रजऐसहि बसिहैं बिरह बाय बौराने। सोवत जागत सपने सौंतुक रहिहैं सूपतमाने। बाल कुमार किशोरकी लीला सिंधु सुतामें साने। परेव जो पैनिधि बूंद अलप सोको जो अब पहिचाने। जाकेतन धन प्राण सूरहरि मुख मुसुकान बिकाने १६२॥

अति मलीन वृषभान दुलारी।

हरिश्रमजल भीजे उरअंचर यहलालच न धोवावति सारी। रूखे चिकुरबदन कुम्हिलाने ज्योंनलिनी हिमकरकी मारी। अधमुख देति ऊंचो नहिं चितवति ज्यों

धनहारि थकित जुआरी। हरिसंदेश सुनत मुर्छित भइ बिरह जरी दूजे अलिजारी। सूरश्याम बिनु कैसेजीवै ब्रजबनिता को प्राणदियो वारी १९३ ॥

राधे तेरो बरण बिराजतनीको।

जबतू इत उतबंक बिलोकति होत निशापतिफीको। भृकुटी धनुष नयन शर साधे शिर केसरिको टीको। मनु घूंघुट पटते दुरि बैठेव पारिधिरति पतिहीको। गतिमें मत्त नागज्यों नागरि करै कहति हौलीको। सूरदास प्रभु बिबिधि भांति करि मन रिझयो हरि पीको १९४ ॥

ऊधवजब रसरास खेलाये।

तबहिं ज्ञान काहे न उपदेशे अधर सुधारस प्याये। मुरली शब्द सुनतबन गौ नित सुतपति गृहबिसराये। सूरदास सँगछांड़िश्यामको मनहिं रहे पछिताये १९५॥

ऊधव योग न जानत बाला।

एकतो कोमल दुजे दिननको थोरी तिसरे उठैलै तनज्वाला। भूषण बसन सेज नहिं भावै जबसे तजे नँदलाला। कैसनलोग कैसन वोहि ठाकुरका वोहिपुर कै हवाला। शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक काउलि-खामोरे ताला। श्रीवृन्दाबनके कुंज गलिनमें दीनो मो-हिंजयमाला। सो कुबरी पटरानी भईहै मारति उरबिच भाला। दूजो नयन पर भस्म दियोहै ओढ़लेतमृगछा-ला। सूरश्याम उहवां निजुजाना जहँ बसै मदनगोपा-ला १९६ ॥

ऊधव मनमाने की बात।

जरत पतंगदीपमें जैसेओ फिरिफिरिलपटात। रहत चकोर पुहुमि पर मधुकर सरि अकाश भरमात। ऐसो ध्यान धरा हरिजीपै क्षण इत उतनहिं जात। दादुर रहत सदा जलभीतर कमलहि नहिं नियरात। काठ फोरि घरकियो मधुप जिमि बँधे अंबुजके पात। बरषा बरषत निशि दिनऊधव पुहुमीपुरी अघात। स्वातिबूंद के काज पपिहरा क्षणक्षण रटत रहात। तेहिनखात अमृत फल भोजन तोमरि को ललचात। सूरज कृष्ण कूबरी रीझे गोपिन देखि लजात १६७॥

ऊधवहम आजु भई बड़भागी।

जैसे सुमन सुगंध ले आवत पवन मधुप अनुरागी॥ अति आनंद बढ़ेव अँग अँगमें परे न यह सुख त्यागी। बिसरेव सबदुख देखत तुमको श्यामसुन्दर हमलागी॥ ज्यों दर्पण मधि दृगनिरखत जहँ दृष्टि तहां नहिं जाई। तेवही सूर हम मिली सांवरो बिरह व्यथा बिसराई १६८॥

ऊधव काह करैं लै पाती।

जबलगि नाहिं गोपालहि देखत बिरह दहत मेरि छाती। निमिषएक मोहिं बिसरत नाहिंन शरद समय की राती। मनतो तबहींते हरिलीनो जबभये मदनबराती। पीरपराई कहँ तुमजानो तुमतो श्याम सँघाती। सूरदासस्वामी सों तुमपुनि कहिबोठकुरसोहाती १६६॥

पाती सखि मधुबनसे आई।

ऊधवहाथश्याम लिखि पठई आय सुनहु मोरिमाई। अपने अपने गृहसे दौरीं लेपातीउरलाई। नयननीर निमिष नहिंखंडितप्रेमकेव्यथा बुझाई। कहा करौंसूने यहि गोकुल हरिबिनुकछु न सोहाई। सूरदासप्रभुकौन चूक ते श्यामसुरति बिसराई २०० ॥

ऊधवमोहिं ब्रजबिसरत नाहीं।

हंससुताकी सुन्दर कलँगी अरु कुंजन की छाहीं। वे सुरभी वेबच्छदोहनी खरिक दुहावन जाहीं। ग्वाल बाल सब करत कोलाहल नाचत गहि गहि बाहीं। यहमथुराकंचनकी नगरी मणि मुकताहल जाहीं। जबहिं सुरति आवतवा सुख की जी उमगत तन नाहीं। अनगन भांति करी बहु लीला यशुदा नंदनि बाहीं। सूरदासप्रभुरहेमौनहोय यहकहिकहिपछिताहीं२०१॥

सबैमिलि श्याम सँदेश सुनोरी।

जोत्रिय शीश धरे हरिप्रियकरि सो लैजीवगनोरी। नीचे बसत तासुपति भूषण सो सब अंगठनोरी। बैरागीके बगल उसासन तासों नेह करोरी। कनकदवन षट षोड़श द्वादश सो सब दूरि करोरी। सुवापंख खैराबक तीतर सो नहिं दशन हनोरी। दधिसुतबाहन तामें खलकै सो लै अंग भनोरी। सूरश्याम अब रमत द्वारका मधुबन दूरि करोरी २०२ ॥

माधव बिलँबि बिदेश रहे।

अमरराज सुतनाम रैनि दिन निरखतनयन बहे।

कुंतीपति पितु तासु नामधरि ता अरि अंगदहे। शैल सुतापति ताकर बाहन बचन न जात सहे। मारुत सुत पति तासु नाम धरिताअरि अंगदहे। जलरितुयामजान अब लागे कैसेकै प्राण रहे। घटसुत रिपु तनया पति सजनी नाहिंन नेह निबहे। सूरश्याम प्रभुबेगि दरश देव वाहीमें प्राण रहे २०३॥

मधुबन तुमकैसे रहत हरे।

बन बन ब्याकुलफिरति राधिका नयनन नीर भरे। खोजत खोजत भुजबल थाके तब परतीत परे। तुम तरेमोहन बंशी बजावत शाखा टेरिखड़े। निरजलअधम लाजनहिं तुमको फूलत फरत झरे। हमतो साया हैं तरुवरके जब तब होत खड़े। तुम न मुई वृषभान लाड़िली जिनभरि अंकगहे। जाकर मरै सोई नर जानै दूसर क्यों न करे। सूरश्याम बिनु बिकल राधिका नाहक बैर परे २०४॥

माधव हो कहि न जात गति ब्रजकी।

घर बछरू बन गौवैं बिलखति ग्वाल बाल गोकुल की। वृन्दाबन घन सूखन लागे रोवत पंछी बनकी। जैसे मणिपर छुटतभुअंगम बछरु कुटै गौबनकी। वृज बनिता सब हेरिकै थाके जोहत पंथ चरणनकी। जैसे मीन कोलदह झुरवत शोचत दीन दिननकी। स्वातीके बुंदजैसे जोहै पपिहरा वोही हालगोपिनकी। लक्ष्मण दास दयाकरो माधव सचींबचनऊधोकी। किरपा करि हरि दरशन दीजै नहिं भरोसयहि तनकी २०५॥

ऊधव मनकी मनहिं रही।

एकसमय प्रभु मेरेघर आये मैं दधि मथति रही। हमपापिनि हरिचीन्हत नाहीं फिरि नहीं भेंटभई। इत गोकुल उत मथुरा नगरी बैरन यमुना बही। आप तो मोहन पार उतरि गये हमको कछु न कही। जो पाती भेजे यदुनन्दन सो पाती न सही। मोहनमदन गोपाल लालकी आशा लागिरही। अब बसिपरी प्रेमके फंदन चलत न पेचगही। सूरदास बलिजावँ चरणकी यह दुख जाय न सही २०६॥

मोरे मन सकुच न लागिरही।

एक समय अंबर बिनु सजनी देखन श्याम चही। सारँगमें मेरे गृहआये सारँग सुरतिलगी। सारँग खैंचि लियो त्रिभुवन धनि कर से छूटिपरी। छूटि गयो खनु काकटिसे हम दीपक फूंकदई। त्रिभुवन डारि दियो मणि सुंदर मैं मुख मेलि लई। रस में रोषकियो यदुनन्दन आयो शेषमही। सूरश्याम फणिमणि कै शोभा हरि कट वोट रही २०७॥

नीवी लपकि गहे यदुराई।

जबकर कमल धरे शिरफल पर पड़िहैं यशोमति आई। देअंचल राधे मुसुकानी कृष्ण रहे सकुचाई। ता क्षण रोदन कियो मन मोहन फेरिसे युक्ति चलाई। ऐसो ढीठ देति नहिं ग्वालिनि इनमेरो गेंदचुराई। बोलतिहैं वृषभान सुता हँसि हम नहिं लीन्ह कन्हाई। जहँजहँ केलि कियो कुंजन बन तहँ चलो देहुं बताई।

हमतो जात रहे गौवनमें तहांराधिका आई। सूरश्याम अस कहति यशोदा राधेकृष्ण चतुराई २०८॥

सखिन में राजत एकजनी।

क्रीड़ा करत वृन्दाबन माहीं सखिन मध्य रमनी। तोयाको सुत ता सुत को सुत ताभखु सुतबदनी। चोटी छूटि परीमुख ऊपर शोभा अधिक बनी। कनक खम्भ पर लसत कंचुकी नाचत चढ़त फनी। शैलसुता पति ताकर भूषण ताबाहन नयनी। तिमि रिपु ताम्राता पितु बाहन ताअरिकटिजोबनी। दाड़िम दंतअधर बिंवाफल मृदु कोकिल बयनी। सूरश्याम यहिदेखि प्रसन्न भे बाढ़तप्रीति घनी २०९॥

योगिनि भई बरसानेमें बसिकै।

छला उतारेव मुंदरी उतारेव बिछुआ उतारेव करसे। यह तीनों मोरे मनहिं न भावैं कजरा सेंदुरवा धोवों यमुनामें धँसिकै। गोकुल ढूंढ़ो वृन्दाबन ढूंढ़ोमथुराढूंढ़ो बसिकै। पात पात हमबनबन ढूंढ़ा कबहुं न बोलैं दुशमन मोसे हँसिकै। रहस रहस हम मथुरा ढूंढा आपरहे कुबरी सँग बसिकै। जबसे प्रीति कियो कुबरीसे तब से तो गयो बिरहिनियां को तजिकै। सूरदास बलिआश चरणकीकुबरी सवति भई चन्दन घिसिकै २१०॥

अथ रागपूर्वीके भजन॥

हरि मुख निरखत नयन भुलाने।

ऐ मधुकर रुचि पंकजलोभी ताहीतेजुउड़ाने। कुण्डल मकरकपोलनके ढिग जनुरबि रैनिबिहाने। भ्रुव सुन्दर नयननगति निरखत खंजन मीन लजाने। अरुण अधर दिज कोटि बज्र द्युति शशिगण रूप समाने। कुंचित अलक सिली मुख मिलि मानो लै मकरन्द निदाने। तिलक ललाट कंठ मुक्तावलि भूषणमणिमयसाने। सूरदास स्वामी अँग नागर ते गुण जात न जाने २११॥

श्याम मुख मुरली अनुपम राजत।

शुभग शिखंड पीड़ शिरसोहत श्रवणनकुण्डल भ्राजत॥ नील जलद तन शुभग चाप सुर मन्द मन्द रव गाजत। पीताम्बर कटि तड़ित भाव जनु नारि बिवश मन लाजत॥ ठाढ़ेतरु तमाल तर सुन्दर नन्दनँदनबन माली। सूर निरखि ब्रजनारि चकित भइँ लगत मदन की भाली २१२॥

अथ रागगौरीके भजन॥

बिछुरतश्रीब्रजराज आजुसखि नयननकीपरतीतिगई।

उड़ि न मिले हरि संग बिहंगम ह्वैनगये घनश्याम मई। याते कूर कुटिल सचमेचक वृथा मीन छबि छीनि लई। रूप रसिक लालची कहावत सोकरनी

कछु तोन भई। अब काहे शोचत जल मोचत समयगये नित शूल नई। सूरदास याहीतेजड़भयजबते पलकनि दगादई २१३॥

तुमहिँ मधुप गोपाल दोहाई।

कबहुँक श्याम करत यहँ को मन किधौं निपटचित सुधि बिसराई। हम अहीर मति हीन बापुरी हटकतहूं हठि करहिं मिताई। वोइ नागर मथुरा निरमोही अँग अँग भरे कपट चतुराई। सांची कहउ देउ श्रवणन सुख छांड़हुछिया कुटिल धूरताई। सूरदासप्रभु बिरद लाज धरि मेटहु यहँकी लोग हँसाई २१४॥

हमको लाज न तुमहिं कन्हाई।

जो हम यह मारग सब आईं तौ तुम हमसोंकरत ढिठाई। हाहा करति पायँ तुव लागति रीति मटुकि मोहिं देहु मँगाई। काको बदन प्रातही देखेव घरते छींकतहूं नहिंआई। उतहि जातिही सखीसहेली मैंहीं सबको इतहि फिराई। सूरश्याम अधमई हमहिं सब लागैं तुमहिं भलाई २१५॥

ढोटा कौन को यहरी।

श्रुति मण्डल मकराकृत कुण्डल कनककंठ दुलरी॥ घनतन श्याम कमल दल लोचन चारु चपल तिलरी। इन्दु बदन मुसुकानि माधुरी अलकनि अलि कुलरी॥ उरपर मुक्तामाल पीतपट मुरली सुर गौरी। पगनूपुर मणि जटित रुचिरअति कटिकिंकिनि रौरी॥ बालकवृन्द

मध्यराजत हैं छबि निरखत सुररी । सोइ सजीवनि सूरदासकी महरि रहे उररी २१६ ॥

यशुमति टेरति कुंवर कन्हैया।

आगे देखि कहत बलरामहिँ कहां रह्यो तुमभैया। मेरो भैया आवत अबहीं तोहिँ देखाऊँ मैया। धीरजक-रहु नेक तुम देखहु यह सुनि लेत बलैया। पुनि यह कहत मोहिँ परबोधत धरणिगिरी मुरझैया। सूरबिना सुत भइ अति व्याकुल मेरो बाल कन्हैया २१७ ॥

नन्दघरधीको दियना बारि आईहो।

दियना बारि आईं सेजिया बिछाय आईं तापरश्या-मको सुताय आईंहो। सुन्दर श्याम कमलदल लोचन ताकर सुरति निहार आईंहो २१८ ॥

छबीले मुरली नेक बजावो।

बलि बलि जात सखा यह कहि कहि अधर सुधारस प्यावो ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभ वृन्दाबन दुर्लभ प्रेमतरंग। नाजानिये बहुरि कब होइहैं श्याम तुम्हारे संग ॥ बि नती करत सबल श्रीदामा सुनहु श्यामदैकान। यायश को सनकादि शुकादिक करत अमर मुनि ध्यान ॥ कब पुनि गोप भेष व्रजधरि हौ फिरिहो सुरभिन साथ। क-ब तुम छाक छीनिकै खैहो श्री गोकुल के नाथ ॥ अपनी अपनी कांधे कमरिया खालन दईडसाइ। सींह दिवाय नंद बाबा को रहे सकल गहि पाइ ॥ सुनि सुनि दीन गिरा मुरलीधर चितये मुख मुसकाइ। गुण गम्भीरगो-पालि मुरलिका लीनी कंठ लगाइ ॥ धरिकरि बेणुअधर

मनमोहन कियोमधुर धुनि गान। मोहे सकलजीवजल थल के सुनि वारोतन प्रान॥ चपल नयन भृकुटीनासा पुट सुनि सुन्दर मुखबैन। मानहुं निरतत भावदिखावत गति लियेना यक मैन॥ चमकत मोर चन्द्रिका माथे कुंचित कलक सुभाल। मानों कमल कोश रस चाखन उड़ि आये अलि माल॥ कुण्डल लोलकपोलनि झलकत ऐसी शोभा देत। मानहुं सुधा सिंधुमें क्रीड़त मकर पानकेहेत॥ उपजावत गावत गति सुन्दर अनाघात के ताल। रस सब दियो मदन मोहन को प्रेम हरष सब ग्वाल॥ लोलित वैजन्ती चरण पर श्वासा पवन झँकोर। मानहुं सुवापिअन अहिआये ब्रह्म कमण्डलु फोर। डोलति लता मरुत मन्दगति सुनिसुन्दर सुखवैन। खग मृगमीन अधीन भयेसब कियो यमुनजलसैन॥ झलमस्तात भृकुटि पद देखा सुभग सांवरेगात। मनों षट्बधू यक रथबैठी उदयकियो अधिरात॥ बांके चरण कमल भुजबांके अवलोकनि जु अनूप। मानहुंकलपतरोवत बिरवा आनि रच्योसुरभूप॥ अति सुखदियो गोपाल सबनि को सुखदायक जियजानि। सूरदास चरणनरज मांगत निरखत रूपनिधान २१६॥

अथ रागजैतश्रीकेभजन॥

जबजब मुरली श्याम बजावत।
तबतब राधा नाम उचारत बारमवार रिझावत।

तुम रमणी वे रमण तुम्हारे वैसेहि मोह जनावत। मुरली भई सौति जोमाई तेरी टहलकरावत। वहदासी तुम हरि अर्धांगिनि यह मेरे मन आवत। सूर प्रगट ताहीसों कहि कहि तुमको श्याम बोलावत २२० ॥

सुनहुंरी मुरली अधर बजाई।

मोहे सुरनर नाग निरंतर व्रज बनिता मिलिधाई। यमुनानीर प्रबाह थकित भयो पवन रहे मुरझाई। खग मृगमीन अधीन भयो सब अपनी गति बिसराई। द्रुम वेलीअनुरागपुलकि तनु शशिथकि निशि न घटाई। सूर श्याम वृन्दाबन बिहरत चलहुसखी सुधि पाई २२१॥

व्रज बसि काके बोल सहौं।

तुम बिनु श्याम और नहिं जानों सकुचनि तुमहिं कहौं। कुलकी कानि कहांलै करिहों तुमको कहांलहौं। धृग माता धृगपिता बिमुख तुम भावै तहां भहौं। कोउ कछु करै कहै कछु कोऊ हरषनशोक गहौं। सूरश्याम तुमको बिनु देखे तन मन जीव दहौं २२२ ॥

मोहन मोहनि अंग शृँगारत।

बेली ललित ललितकर गूंथत निरखत सुन्दरमँग सँवारत। शीश फूल धरि पाटी पोंछत फुंदनिझवानिहारत। बन्दन बिन्द जराय की बेणी तापर बनम सुधारत। तरिवन श्रवण नयन दोउ आंजत नासा बेसरि साजत। बीरी मुखभरि चिबुक डिठौना निरखि कपोलनि लाजत। नखशिख सजत शृँगार भावसों यावक

चरणनिसोहत। सूरश्यामत्रिय अँगनि सँवारतनिरखि आपु मनमोहत २२३ ॥

अथ रागनटकेभजन॥

तिहारी लाल मुरली नेक बजाउँ।

जैसी तान तुम्हारे मुखकी तैसिय मधुर सुनाउँ। जैसे फिरत रंधूमगु अँगुरी तैसे महू फिराउँ। जैसेआप अधर धरि फूंकत मैं अधरनि परसाउँ। हाहा करति पाइहौं लागति बांस बँसुरिआ पाउँ। सारँग नट पुरबी मिलाइके राग अनूपउ पाउँ। अपने भूषण मोको दीजै अपने तुमहिं बनाउँ। तुम बैठो दृढ़ मान साजिकै मैं गहि चरण मनाउँ। यह अभिलाष बहुत मेरेजियनय-ननि यहै देखाउँ। सूरश्याम गिरिधरण छबीले भुज धरि कंठ लगाउँ २२४ ॥

ऊद्धव कहत सँदेशा नीको।

हित उपदेश करन ब्रजआये लिये मनोहरिजीको। योग युगुति निरगुण उपदेशत ज्ञान सुनाय यतीको। बिरह ब्याधि औषध नीकीज्यों आमबातहै पंथमहीको। हमको योग भोग कुबरीको ज्ञान दृढ़ाये जीको। सूर श्याम बिनु और न जानै यह निश्ययहै हीको २२५॥

उद्धव धनि तुम्हरो ब्यवहार।

धनि वे ठाकुर धनि वे सेवक धनितुम बरतनहार। आम को काटि बबूर लगावत चन्दनकी करवार। शीह

को पकड़ि चोरको छोड़त चुगुलनको इतबार। सूर श्याम कैसे निबहैगी अंधधुंध दरबार २२६॥

ऊद्धव कब ऐहैं नँदलाल।

हेरतपंथ बहुत दिन बीते सब बृजबाल बेहाल। घेरलियो चहुँ ओर प्रेम बश पूंछत ग्वालिनि ग्वाल। सूरदासप्रभुतुम्हरेमिलनकोफिरिकरिहैंप्रतिपाल२२७॥

बिहारीलाल आवहु आई छाक।

भई अबेर गाय बहरायहु बगदैगी देहांक। अर्जुन भोज सुबल श्रीदामा मधुमंगल यक ताक। मिलिबैठे सब जेंवनलागे बहुत बनब कहैं पाक। आपनि पत्रावलि सब देखत जहँतहँ फनी फिराक। सूरदास प्रभु खात ग्वाल सँग ब्रह्मलोक यह धाक २२८॥

बनदनहींनदियमुनाकैऐबो।

सुन्दर श्याम घाटपर ठाढ़े कहो कवनबिधि जैबो। कैसेबसन उतारि धरैं हम कैसे जलहि समैबो। नँदनंदनहमको देखहिंगे कैसे करि जुनहैबो। चोली चीर हारलै भाजत सो कैसे करि पैबो। अंकमें भरिभरि लेतसूर प्रभु कालिह न यहि पथऐबो २२९॥

सखीरीश्यामसबैयकमार।

मीठे बचन मनोहरबोलत अंतर जाएन हार। भँवर कुरंग कागकोयल शिखि कपटिनकी चटसार। मदन गोपाल आपुनहिं पढ़ाये प्रीति किये बहुबार। ऊनै आई घटा जलदकी प्रेम प्रतीति अपार। सूरदास सरिता भरि उमड़ी चातक करत पुकार २३०॥

रे अलिकहांसिखावनआयो।

ऐतो नैनरूप रसराचे कह्यो न करत परायो। योग युगुतिहम कछू न जानहिं नाकछु ब्रह्म न ज्ञानो। नवल किशोर मोहनमृदु मूरति तासोंमन अरुझानो। भली भई तुमआये ऊधो देखहु दुसह दुखारी। देव उपाय मिलाय सूरघन आरति हरहु हमारी २३१॥

ऊधोकाहकरैंलपाती।

जबहिंन देख्यो गोपाल लालको बिरह जरावतछाती। जानतहो तुममानत नाहीं तुम्हरो श्याम सँघाती। निमिष निमिष में बिसरत नाहीं शब्द सुहाई राती। यह पातीलै जाहु द्वारका जहँबसै श्याम सुजाती। मन हमरो लेगये वहांको काम कठिन शरघाती। सूरदास प्रभुकहँ चाहतहै कोटिकबात सुहाती। एकबेर मुख बहुरि देखावहु रहे चरण पजराती २३२॥

अबतोवेलागेदिनजान।

सुमिरत प्रीतिजाल लागतहै उरभयो कूप समान। लोचन रहित बदन बिनुदेखे बचनसुनो बिनु कान। हृदय रहितपायें नूपुरसे छीजत तनमन प्रान। वैजस मेटिगये नँदनंदन बिरहसृष्टि ब्रजआन। बिधिबश हरे बहुरि फिरिकीन्हे बेसिसुबेद बखान। जबसे गये मधुपुरी मोहन बिषयखान अरु पान। यहसे सूर यहै जो भावति होबसिये अनुमान २३३॥

अनतसुतगोरसकोकतजात।

घर सुर भीनवलाखदुधारी और गनी नहिंजात।

नित प्रति सब उरहनके मिसमें आवतहैं उठि प्रात। अनलहतो अपराध लगावति बिकट बनावति बात। निपटनिशंक बिवादति सनमुख सुनि मोहिं नंद रिसात। मोसों कृपिणि कहत तेरेघर ढोटाऊन अघात। करिमनुहारि उठाय गोदलै बरजत सुतकोमात। सूर श्याम नित सुनत उरहनो दुखपावत तेरोतात २३४॥

यशुमतियहकहिकेरिसवावति।
रोहिणी करति रसोई भीतर कहिकहितिनहिं सुनावति। गारीदेत बहूबेटीको वेधाई यहां आवति। हाहा करति सबनि सों मैंही कैसेहुखूंट छुड़ावति। जाति पांति सों कहां अचगरी यहकाहि सुतहिधिरावति। सूरश्याम को सिखवति हारी मारेहु लाज न आवति २३५॥

हरिसेप्रीतमक्योंबिसराई।
मिलन दूरिमन लसतचंदपर चित चकोर पछिताई। जलमें रहत जलहिसे उपजत बिन जलही कुम्हिलाई। परकट प्रीतिकरै परदेशी सुखकहि देश बसाई। सोइ गोकुलहै सोइ गोवरधन काहि न करिवह छाई। धरणी दुखितदेखि बादर अति बर्षाऋतु बरसाई। सूरदास प्रभुतुम्हरेदरशबिनु दुखकबहियेबसाई २३६॥

श्यामकरमुरलीअतिहिबिराजत।
परसत अधर सुधारस। प्रगटत मधुर मधुरसुरबाजत। लटकत मुकुटमोह छबिमटकत नैन सैन अति राजत। ग्रीवनवाय अटकि बंशीपर कोटि मदनछबिलाजत। लोलकपोल झलक कुंडलको यहउपमाकछु लागत।

मानहुं मकर सुधासर क्रीड़त आपु नहींअनुरागत। वृन्दाबनबिहरतनँदनंदनग्वालसखासँगसोहत। सूरदास प्रभुकी छबिनिरखत सुर नरमुनि सब मोहत २३७॥

मांगतऐसोदानकन्हाई।

अब समुझी हमबात तिहारी प्रगटीहै कछु धौं तरुणाई। यह लालच अकवारि भरतहौं हार तोरि चोली झटकाई। अपनी ओर देखिधौं लीजै ता पाछे करिये बरिआई। सखा लिये तुमघेरत पुनिपुनि बन भीतर सबनारि पराई। सूरश्याम ऐसी न बूझिये इन बातनि मरयाद नशाई २३८॥

हमपरऐसोयोगनहोई।

सुनिसुनि बचन तिहारो ऊधो नैना आवत रोई। कुन्तल कुटिल मुकुट कुंडलछबि रहीरही अति पोई। सूरश्याम बिनप्राणरहैं नहिं कोटिकरोकिनिकोई २३९॥

ऊधोयोगकहौंकिधौंहाँसी।

जबसे आय हमारे ब्रजमें डारि प्रेमकी फांसी। तुमहौ बड़ेयोगके पालक संगलिये कुबजासी। सूरदास प्रभुतुम्हरे दरशको करवट लीजो कासी २४०॥

अथ रागमारूके भजन॥

हमतोसबहिनसोंहितुछाड्यो।

कतगत कथासुनहुं अलितेरी योगप्रेम बिनुखांड्यो॥ काजर परसि जरति पावकसम बूझति चलेजलधार।

निशितम तकेपलक नहिं लागत गनत बच्योनहिंतार॥
कोकिल कुंज कुंज मधुकर धुनि घनबोलत डर डार।
सूरतिहू बहुयतन कियेहू आपहोत कहुकार ॥ २४१ ॥

ऊधोकहु मधुबनकीरीति।

राजाहोय ब्रजनाथ तिहारे कहा चलावति नीति।
निशिलों करतदाह दिनकरज्यों हुतोसदा शशि शीति।
पुरुवा पवन कहेउ नहिं मानत गये सहज बपु जीति।
कंस काज कुबनाके मारेउ भई निरन्तर प्रीति। सूर
बिरहब्रज भलोनलागत। जहँ बिवाह तहँगीति २४२॥

सबसुखलेकरश्यामसिधारे।

सुफलकसुत कछु भली न कीनी बैठेही उरढारे।
चलत पीतपट करषि न राखे यह जिय शोच हमारे।
भूख नींद छुटिगइ निशिवासर सुनहुं न ऊधो प्यारे।
महा प्रलयतं कतब्रज राख्यो करधरि शैल उबारे।
सूरदास प्रभुतुम्हरे दरशबिनु क्योंजुरहे येतारे २४३॥

अथराग कल्यानके भजन॥

सजनीश्यामसदारीऐसे।

॥ एकअंगकी प्रीति हमारीवेजै सेकैतैसे ॥ ज्यों चकोर चंदाको चाहैचंदा नेकुनमानै। जलके तीरमीन तनत्यागै नीरनिठुर नहिं जानै ॥ ज्योंपतंग उड़ि परतज्योतितकि वाकेनेक नभाय। चातक रटिरटि जलद मनावै जलवो डारत जाय। उनहूंते निर्दयीबड़ेवे तैसिय मुरलीपाय।

सूरश्याम जैसे तैसीवह भलीबनी अब आय २४४॥

बजतरुनीसबकहतिपरस्परबनसेश्यामबनेघर आवत। ऐसीछबि मैं कबहुं न पाई सखी सखीसों प्रकटदिखावत। मोर मुकुटशिर जलज मालउर कटि तट पीतांबर छबिपावत। नव जलधर पर इन्द्रचाप मनु दामिनि छबिबज्रक घनधावत। जेहि जोअंग अवलोकनकीन्हो सो तनमन तहँई बिरमावत। सूरदास प्रभु मुरलीअधर धरे आवत राग कल्याण बजावत २४३॥

नागरिनागरपंथनिहारै।

उदयबाल शशिअस्त भयोअब जियजिययहैबिचारै॥ कोधौं अबहीं आवत ह्वैहैं की आवन नहिं पैहैं। मात पिताकी त्रास उतहिइत मरेघरहि डरैहैं॥ अंग शृंगार श्यामहित कीन्हे वृथाहोत यह चाहत। सूरश्याम आवैकीनाहीं मन मन यह अवगाहत २४६॥

कमलमुखशोभितसुन्दरबेनु।

मोहनराग अलापत गावत आवत चराये धेनु। कुंचित केशसुदेत बदनपर जनुराज्यों अलिसेनु। सहिनसकति मुरली मधु पीवति चाहति अपनो ऐनु। भृकुटि मनोकर चाप आपुलै भयो सहायक मैनु। सूर दासप्रभुअधर सुधालगि उपज्यो कठिनकुचैनु २४७॥

अथ रागपरज के भजन॥

ऊधोकाहेकोभक्तकहावत।

जोपैयोग लिखि पठयो तुमकहँ तुमहुं न भसम चढ़ावत। सिंगीमुद्राभस्मअधारी हमकोकहा सिखावत। कुब्जा अधिक श्यामकी प्यारी ताहिनहीं पहिरावत। यह तो हमको तबहि न सिखयो जबथे गाय चरावत। सूरदासप्रभुको कहिबोअबलिखिलिखि कहापठावत २४८॥

ब्रजजनसकलश्यामब्रतधारी।

बिनुगोपाल और जेहि भावत तेहि कहिये ब्यभिचारी। योग मोट शिर बोझआनि तुम कतधों धोख उतारी। इतनिक दूरिजाहु चलिकाशी जहां बिकत हैं प्यारी। यहसंदेश सुनिलिये तुम्हारी अतिमंडली अंद हमारी। ज्योंरस रीतिकही हरिहमसों सो क्योंजात बिसारी। महामुक्ति कोऊ नहिं वाछे। कृष्ण पदारथ चारी। सूरदास स्वामी मनमोहन। मूरतिकी बलिहारी २४९॥

अथ राग कान्हरो के भजन॥

सुनहुश्यामअबकरतचतुराईक्योंतुमबेनबजायबुलाई।

बिधिमर्य्याद लोककी लज्जासबै त्यागिहमधाइआईं। अबतुमको ऐसी ना बूझिये आश निराश करोजनि साईं। सोइ कुलीन सोईबड़ भागिनि जेतुम सनमुख

रहैं सदाई। ते धनिपुरुष नारिधनितेई पंकज चरण रहे दृढ़ताई। सूरदास कहि कहा बखाने यह निशि यह अँग सुन्दर ताई २५० ॥

नवलनिकुंजनवलनवलामिलिनवलनिकेतनिरुचिरबनाये बिलसत बिपिन बिलास विविधिवर बारिज बदन बिकस सचुपाये। लागत चंद्र मयूष सुतौतनुलता भवन रंध्रन मग आये। मनहुं मदन बल्ली पर हिमकर शोचत सुधाधार सतनाय। सुनि सुनि शोचति श्रवण सुन्दरी मौनकियो मोदित मनलाये। सूरसखी राधा माधव मिलि क्रीड़त हैं रति पतिहि लजाये २५१ ॥

अजहूं मांगि लेहु दधिदेहैं।

दूध दही माखन जो चाहो सहज खाहु सुखपैहैं॥ तुमद्रोही ह्वैआये हम पर यह हमको नहिं भावति। करो तहां लोनिबहै जोई जाते सबसुख पावति॥ हम को जान देहु दधि बेचन पुनिकोऊ नहिं लैहैं। गोरस लेत प्रातही सबकोउ सूरधरेव पुनिरैहैं २५२॥

बिराजति राधारूप निधान।

सुन्दर ताको पुंज प्रकटही कोपट तरत्रियआन। सेंदुर शीश मांग मुक्तावलि कचकमनीय बनान। मनहुं चन्द्रमुख कोपिहन्यो रिपु राहु बिषम बलवान। तरल तिलक ताटंक पडेरा झलकत कल बिवकान। मानहुं शशि सहाय करबेको रनबिचरे द्वैभान। दीरघ नयन नासिका बेसरि अरुन अधरछबिवान। खंजन शुकनहिं विंबसमनको लज्जत भयेअजान। कोकहिसकैउरोजन

की छबि कंचन मेरु लजान। श्रीफल सकुचि रहेदुरि कानन शिखिरहबो बिहरान। रोमावलि त्रिवली छबि छाजत जनुकीन्हो यहठान। कृशकटि सबल दंड बन्धनमनो बिधि दीन्होबन्धान। अंगअंग आभूषण की छबि कापै होय बखान। सूरदास प्रभुरसिक शिरोमणि बिलसहु श्याम सुजान २५३॥

बारबार यशुमतिसुत बोधतआवचंद्र तोहिंलालबुलावे। मधुमेवा पकवान मिठाई आपुखात पुनितोहिंखवावे। हाथहि पर तोहिं लीने खेलैं नेकुनहीं धरनी बैठावै। जलभाजन में करिकै उठावै याहीमें तूतन धरिआवै। जलपुट आनि धरनि परराखेउ गहिआनेउ वह चंद्रदिखावै। सूरदास प्रभुहँसि मुसकाने बारबार दोऊ कर नावै २५४॥

सादर सहित बिलोकि श्याम मुख नँद अनंद रूप लिय कनियां।

सुन्दर श्याम शरोजनीलतनु अँगअँग सुभग सकल सुखदनियां। अरुन तरनि नख ज्योति जगमगी तरुन झुनकरति पांय पैंजनियां। कनक रतन मणि जड़ित रचितकटि किंकिंनि कुन्नित पीतपट झनियां। पहुंची करनि पदिप उर हरिनख कठुला कंठ जुमनियां। कुटिल भृकुटी सुख निधि आनन कलकपोल की छबि न उपनियां। रुचिर चिबुक दिज अधर नासिका अति सुन्दर राजत सो बनियां। भाल तिलक मसि बिंदु बिराजत शोभित शीश लाल चौतनियां। मनमोहन तोतरि

बोलनकी मुनिमन हरत सहस मुसकनियां। बालसुभाव बिलोकि बिलोचन चोरत चितहि चारु चितवनियां। निरखति ब्रजयुवती सब ठाढ़ीं नंद सुवन छबि चन्द्र बदनियां। सूरदास अब निरखि मगन भै प्रेम बिवश कछु सुधि न अपनियां २५५ ॥

कौनजगायगोपालमुदितमनहठरीबैठोगोबरधनधारी। हलधर संग सबल श्रीदामा गोप ग्वाल सब गाय सिगारी। देखनको उमहे सुर नर मुनि रावर मांझ भीर भइ भारी। जय जय कार होत चहुं दिशि ते सुरपति करत कुसुम बरषारी। कंचन रतन जड़ित हीरानग बिश्वकरमा रचि सुबिधि सँवारी। परम बिचित्र बनी अतिसुन्दर जग मगाति कुहुतिमिर बिदारी। नंद भवन भरि धरे बिबिधि पकु अगनित मेवा गरी छोहारी। टेरि टेरि जब देत सबनिको शिव ब्रह्मादिक गोद पसारी। करति आरती मातुयशोदा मंगल गावति सब ब्रजनारी। सूर रसिक गिरिधर सुख बिलसत बरष बरष परति परब दिवारी २५६ ॥

छाड़िदेरीबहियांकान्हाजायदेरीघरवां केतनौ कहै लौं नहीं मानै ला कहनवां। पैयां पड़ैलौं तोरे चलबो गोहनवां। श्रीवृन्दाबन जीके कुंजरी गलिन में मटकी पकड़ी बरजोरी मांगै दनवां। तुम्हरे कारण कान्हा छाड़ि देयो वृन्दाबन मथुरामें जाय केरी करबे ठेकनवां। सूरदासबलि जाय चरणकी हरिके चरण पर लाइ बँधै अनवां २५७ ॥

अथ रागसोरठके भजन॥

आवत लाल गोबर्द्धन धारी।

आलसनयन सरस रस रंगित प्रियाप्रेम नूतनअनुहारी॥ बिलुलित माल मरगजी उर पर सुरत समरकी लगी पराग। चुंबन श्याम अधर रस गावत सुरति भाव सुख भैरोंराग॥ पलटि परे पटनील सखीके रसमें झीलत मदन तड़ाग। वृन्दाबन बीथन अवलोकत कृष्णदास लोचन बड़भाग २५८॥

राधेहरि रिपु क्यों न छिपावति।

मेरु सुतापति पति ताकर सुत ताको क्योंन मनावति। हरि बाहन ता बाहन उपमा सो तैं धरे डिढा बति। नौ अरु सात बीस तेहि सोहत काहे गहरु लगावति। सारंग बचन कह्यो करि हरिको सारंग बचन न भाषति। सूरदास प्रभु दरश बिना दोउलोचन नीर बहावति २५९॥

राधे यामें कहातिहारो।

मुख हिमकरतनु हाटक बेनीसोपन्नगअँगकारो। गति मराल केहरि कटि कदली युगल अंग अनुहारो। नयन कुरंग बचन कोकिलकेनासा शुक कहँगारो। बिद्रुमअधर दशन दाड़िम कन करो न तुम निरवारो। सूरदास प्रभु त्रिभुवन पति को एक न उनहिं उबारो २६०॥

मोहनि रूप बनाये हरि बाना

बाजूबंद बिजायट बिछुआ छलाछाप अंगुस्तना। मुख

भरिपान नयन भरिसुरमा लेदरपण कान्हा मन मुसकाना। गोड़महावर मुखभरिबीरा चोली घूम घुमाना। कीन खाबकी चादरओढ़े चालचलै जैसे गजमस्ताना। हँसिके पूंछै मातुयशोदा काहेतनुधरेउ जनाना। जवनगुजरिया हमको छलिगई ताहिछलन हमजावै बरसाना। जाय पहूंचेबरसानेमें गलियारहै भुलाना। वृषभानसुता की डेवढ़ीलागी चंद्रगूजरसे कन्हैया मुसकाना। सब सखियन में हिलि मिलि खेलैं एकसखी पहिंचाना। सूरदास बलिआश चरणकी नारि न है कोइहै मरदाना २६१॥

मनहरिलीन्हो कुंवर कन्हाई।

तबहीते मैं भई दिवानी कहाकरोंरीमाई। कुटिल अलक भीतरअरुझाने अबनिरु आरिनजाई। नयनकटाक्ष चारु अवलोकनि मोतन गये बसाई। निलज भईकुल कानि गँवाई कहा ठगौरी लाई। बारम्बार कहतिमैं तोको तेरेहिये न आई। अपनीसी सुधिमेरी जानति उतनी मैं कहँपाई। सूरश्याम ऐसी मतिकोन्ही देह दशा बिसराई २६२॥

मनहरिलीन्होंकुँवरकन्हाई।

जब ते श्याम द्वार होय निकसे तबतेरीमोहिं घरन सोहाई। मेरे हेतु आय भये ठाढ़े मोसे कछु न भईरी माई। तबहींसे व्याकुल भइ डोलति बैरि भये मातु पितु भाई। मो देखत शिर पाग सँवारी हँसि चितयेछबि कही न जाई। सूरश्याम गिरि धर बर नागर मेरोमन लैगये चुराई २६३॥

हमरेकौनयोगब्रतसाधै।

मुद्रा भसम अधारी कंथा को इतनो आराधै। जाको कहू थाह नहिं पैयत अगम अपार अगाधै। गिरि धर लाल छबीले को यह कहां पछायो पाधै। सुनु मधुकर जिनि सब रस चाखेउ सोक्यों मुखपावतआध। सूरदासऐसी मणि तजिकै घुंघची गांठि कोबांधै २६४॥

राधेदधिसुतक्योंनदुरावत।

हौंजुकहति वृषभाननन्दनी काहे जीव सतावत। जलसुत दुखी दुखीहै मधुकर दोइ पंछी दुख पावत। सारँग दुखी होत सारँग बिनु तोहिं दया नहिं आवत। सारँग रिपु की नेक ओट करि ज्यों सारँग सुख पावत। सूरदास सारँग केहि कारण सारँग कुलहि लजावत २६५॥

उलटिपगुकैसेंदीनोनंद।

छाड़ेव कहां उभयसुत मोहन धृग नीवन मतिमंद। के तुम धन जीवन मदमाते के तुम छूटेबंद। सुफलक सुत बैरी भयो हमको लैगयो आनँद कंद। राम कृष्ण बिनु कैसे जीजै कठिन प्रीतिको फंद। सूरदास अब भई अभागिनि तुमबिनु गोकुल चंद २६६॥

सराहियेनंदतिहारोहियो।

मोहन सो सुत छांड़ि मधुपुरी गोकुल आनि जियो। होपचि शोच बहुत करि हारी एकोनाहिं भयो। जीवन प्रान हमारे ब्रजको बसुदेव छीनि लियो। कहा करूं

मोरे ललित लाड़िले ब्रजते गमन कियो। सूरदास प्रभु श्याम लाल घन पर हथ जाय दियो २६७॥

हैंकोउइतनीभांतिदिखावै।

किंकिनि शब्द चलत धुनि रुनझुन ठुमकि ठुमकिगृह आवै। कछुक बिलासबदनकी शोभा अरुण कोटि गति पावै। कंचन मुकुटकंठ मुक्तावलि मोरपंख छबि पावै। धूसरधूरि अंगसगलीने ग्वालबाल सँगलावै। सूरदास प्रभु कहति यशोदा भाग बड़े ते पावै २६८॥

मधुकर तुमतो अति भड़भागी।

अपरस रहत सनेह तगादै नाहिंन तुम अनुरागी। पुरइनिपत्र रहत जलभीतरबरजतनहिं नवनागो। ज्यों जल सिकत तलेकी गागरि बूंद न ताको लागी। प्रीति नदी में पांव न बोरेउ दृष्टि न रूप अनुरागी। सूरदास अबला हम भोरी गुड़ चिउँटी ज्यों पागी २६६॥

ऐअलि हमैं अँदेशो आवै।

कौन गुनाह योग लिखि पठयो सो तू कहि समुझावै। जा अँगरचे बसन आभूषणकैसे भसमचढ़ावै। कवरी केश सुमन गुहि राखे सो क्यों जटा बनावै। सबबिपरीति कहत तू हमसोंसोकैसे चित आवै। सुन्दरश्याम कमलदल लोचन सूरश्याम मोहिं भावै २७०॥

हरि ब्रज कबहिं कह्योहै आवन।

सांचे मधुपसुनाय मधुर मोहिं बिरहबिथाबिसरावन। हौं यह बात कहाजानों सखि जात मधुपुरी छावन। अपनी चूक कहालों मानों अबलागी दुखपावन। सबनिशि

सूरसेज सम पावक शशि सीरो तन तावन । अबवै अंचल उरकर गहिहैं दुस्सह दाह नशावन २७१ ॥

उघरिआये कान्ह कपटकी खानि।

सरबस हरेउ बजाय बांसुरी अब छांड़ीपहिंचानि। जिनपै पियत पूतनामारी दाछकरी नहिं हानि। बलि छलि बांधि पताल पठाये नेक न कीनी कानि। जैसे बधिक अधिक मृग बिधवत राग रागिनी ठानि। अवधिआश परतीति ओटदै हनत विषम शरतानि। जैसे नटसर टरत न उरते तुम ऊधो अति जानि। सूरदास प्रभुके जिय भावै आयसु माथे मानि २७२ ॥

मधुकर इहांनहीं मन मेरो।

गयउ जो संग नंदनंदन के बहुरि न कीनो फेरो। लदो नयन मुसुकानि मोलदै कियो परायो चेरो। सौंपिड जाहि भया बश ताके बिसरेउ बास बसेरो। को समझाय कहै सूरजसों रसबश काहू केरो। मंदेपरेउ सिधारि अनत लै यह निर्गुण मनतेरो २७३ ॥

कहि देख्यो यारोबंशी चोरावनहारी।

हम यमुनामें पाठकरंते वह पनियां कोआई । सात पांचमिलिठेलमेले बंशीलीनिचोराई। गोकुल ढूंढ़ेउँमथुरा ढूंढ़ेउ ढूंढ़ेउ कुञ्ज अटारी। पात पात वृन्दाबन ढूंढेउतब हुं न मिलै राधाप्यारी। आलै पातके लहँगा साहँ फूल भरैं की सारी। हरीदास मिरदङ्गी सोहै वह वृषभान दुलारी। यमुना तीर कदम जुड़ि छहियां तहांखड़ेबन-

वारी। सूरदास बलिजाउँ चरणकी तहां मिली राधा प्यारी २७४ ॥

अथ राग बिहागरो के भजन॥

कुवँर जल भरि भरि लोचन लेत।

बारिद बदनबिलोकि यशोदा कतरिस करतिअचेत। छोरि उदरसे दुसह दांवरी डारि कठिनकरवेत। कहि धौं तोहिं कैसे करिआवत शिशुपर तामस वेत। मुख आंशू उर माखन के फन निरखि बदन छबि देत। मानहुं श्रवत सुधा निधिमोती उड़गण अवलि समेत। सरबस तनमनधनन्यवछावरि कीजैसूरश्याम के हेत। ना जानोंक्यहि पुण्य प्रकटभये यहि बृज नंदनिकेत २७५ ॥

अधर धरि मुरली श्याम बजावत।

सारँग गौर नाटनट करिकै गौरी राग सुनावत। आपु भये रसबश ताहीके अवरनि वश्य करावत। ऐसो को त्रिभुवन जल थलमें जो शिर नहीं धुनावत। सुभग मुकुट कुण्डलमणि श्रवणनि देखत नारि न भावत। सूर दासप्रभुगिरिधरनागर मुरलीधरन कहावत २७६ ॥

अचानक आयगये तहँश्याम।

कृष्णकथा सब कहति परस्पर राधामिलि बृजबाम। मुरली अधर धरे नटवर वपु कटि कछनी पर वारोकाम। सुभग मोर चन्द्रिका शीशपर आयगये पूरण सुख धाम। तरु तमाल तर तरुण कन्हाईदूरि करन युवती

तनकाम। सूरश्यामबंशीधुनिपूरत राधालैलैनाम२७७॥

मन पछितावई रहिजैहैं।

सुनु सुन्दरि यह समय खोयसे पुनि न शूल सहिजैहैं। मानहुं मैनमजीठ प्रेमरँग तैसेही गहिजैहैं। काम हरष हररैं हरि अम्बर देखतही बहिजैहैं। इतेभेद की बात सखीरी कत कोऊ कहि जैहैं। परत भवन खनि कूप सूरत्यों मदन अगिनि दहिजैहैं २७८॥

राधे रचि रचि सेज सँवारति।

भवन गमन करिहैं हरि मेरे हरषि दुखहि निरवारति। तापर सुमन सुगन्ध बिछावति बारम्बार निहारति। आवैं कबहुं अचानकही ज्योंसुभग पांवड़ेडारति। यहिअभिलाषहिमें हरिप्रकटे पुरुषभवन सकुचानी। वह सुख श्रीराधा माधवकी सूर उनहिं यहजानी २७९॥

नहीं दुरत नयना रतनारे।

जनु बन्धूक सुमन बिशाल पर सुन्दर श्याम सिली मुखतारे। रही जो अलक कुटिल कुण्डलपर मोतन चितवत चितै बिसारे। शिथिलभौंह धनु गहे मदनगुण रहेकोकनद बानि विसारे। गूंदेहिआवतहैं ये लोचन पलक अतुर उघरत न उघारे। सूरदास प्रभु सोइ कहो ऐसी को बनिता जासों रति रनहारे २८०॥

सखीरी और सुनहु यक बात।

आजु गोपाल हमारे आये उठिकरि वहिमिसिप्रात। कतहूं रैनि उनींदे मोहन अपने गृहसे जात। आगे द्वार नन्दहैं ठाढ़े ताते गये न सकात। डग मगात मग

धरत परत पगु आलसवंत जम्हात। मानहुं मदनदगड दै छांड्यो चुटकी देदे मात। जो कहो कहां रहेहो मोहन तौ सनमुख मुसुकात। ताते कछू न उत्तरु आयो सूर श्याम सकुचात २८१॥

अथ राग केदारो के भजन॥

बिराजत मोहन मण्डल रास।

श्यामाश्याम सुधारस सरमें मानहुं क्रीड़त बिमल बिलास। बृजबनिता सब युत्थ मण्डली मिलकर परस करी। भ्रुजमृडाल भूषण युत तोरन कंचन खम्भ खरी॥ मृदुपदन्यास मंद मलया निल बिगलित शीशनिचोल। पीत अरुण सित श्वेत ध्वजाचलि शीत समीर झकोल॥ गिरत कुसुम कवरी शीशनते टूटत हैं उरहार। शरद बूंद शिशु बरष चली मनो जहां तहां जलधार॥ श्रुति कुण्डल धर गिरत न जात न हृदय अनंद भरे। चरण परस ते चलत चहूं दिशि मांनहुमीन तरे॥ दशनकुन्द दाड़िम द्युति दामिनि प्रगटिन अरु द्युति जात। अधर बिन मधुर अमीकन प्रीतम चंदन समात॥ सुन्दरबदन बिलोल बिलोचन अति गहि रंग रँगे। पुष्कर पुण्डरीक परमानहुं खंजन युगलखगे॥ बिपुल पुलक कंचुकि बंदटूटे हृदय अनंद भये। कुच युग चक्र बाक करुणा मिटि अंतर रैनिगये॥ पृश्नुनितम्बकर भँवर कमलपद नख मणि चन्द अनूप। मनहु लुब्द भयो बारिजलदते

इन्दु किये दशरूप ॥ चरण रुनित नूपुर कटि किंकिणि कंकन करतल ताल। तरुण तनय समेत सहस्र मुख मुखरित मधुर मराल ॥ ताल मृदंग उपंग बांसुरी उपजत ताल तरंग। निकट बिटप विचकुल कुनीत मनोपै वल वटत अनंग ॥ सूर विनोद सहित सुर ललना मोहे खग नरनाग। बिथकेउ उड़पति व्योम बिषम गतिश्री गोपाल अनुराग २८२ ॥

गोकुल सबै गोपाल उपासी।

योग अंग साधन को ऊधो ते सब बसत ईशपुर काशी। यद्यपि हरि हम तजि अनाथ करि तदपिरहति चरणन रसराशी। अपनी शीतल तऊ न छाड़त जदिप हैं शशि राहुगराशी। का अपराध योग लिखि पठवत प्रेम भजन तजि करत उदाशी। सूरदास ऐसी को बिरहिनि मांगत मुक्ति तजे गुणराशी २८३ ॥

सखीरी श्याम घटा वै आई।

जिहिदिशिगोचारत मोहन बनउमँगिर तितधाई। थकित भईं चहुँदिशि मुरलीसुनि मोहन जबहिं बजाई। तैसोइ निलवपु निरखि निरखि झुकि बरसत घनबल भाई। चकित रहींसुरभीजिततित सबतजितृण प्रेमलुभाई। मानहुं कलित डिंडीर पिंडरुचि धरे अचल यक चाई। तब दल छत्र बिचित्र बिराजत भ्राजतहै बिधुमधूसुहाई। मनहुं नील नग सुरंग सरापत सनिसहनाल गुहाई। सुरति भूखिअति खलत बिगत करिअंगसुध-

रनिबिहाई । मनहुंबियादिशि नगरदामिनी पटनिलुहि तद्रुमहाई । कुल पटगुंछ स्वच्छमुक्ताफलकटि केयूरबनाई। उझकत चुगत हंस सारसमानोपावसमनहिंजनाई । चातकमोर चकोरभेष पुनिबिकसमरेस सुनाई । फणि मणि लियेफिरतचातक ज्यों मन रहे ध्यान बिनाई।उड़पतिबिधु द्युति घन लोगिधे कुहुकत सरसमलाई । जैसे बकशोभित कोमल धरहिर फिरतबिमलाई।सुफल राज कानन यह राजत गाजत गगन गोहाई । कौंधतचपल छटा दशहूंदिशिडोलत मदन दोहाई । बिनुगोपालसकल ये हमको बिष सम लागत माई । सूरदास पूभु मिलहु कृपाकरि गोपिन लेहु जिआई २८४ ॥

सखीरी दुसह कहो क्यों सहिये ।

यह घनघटा रैनि पिक बोलत बिरह दहन दुख दहिये । शीत कूल दामिनि बैरिनि भइ भेकनि मिल सुल सहिये । नींद जो गई सिराय जलज ज्यों तिल विश्राम न गहिये । नाहिंनहितू करन कोउ अपनो जासों ये दुख कहिये । मदना तीर गँभीर नीर पर बिनु सुख नाउ ज्यों बहिये । पलक न मिलत छुटी केहि अवसर शोक सरल तन तइये । कोकिल काग मोर पुनि कुहकत हरषत कहां न सहिये । जो कबहूं या छपद निरंतर रहत परम लागत जोहिये । तुम कह सूरति झूठ बदत सब रथन होत बिनु पहिये । विकल सयान गँवाय मंदमति ज्यों ज्यों अवधि बतइये । सूरज श्याम वियोगिनि विह्वल एको आवत नहिंये २८५ ॥

सुनिये ब्रजको बात गोसांई।

रथकी ध्वजा पीत पट भूषण देखतही उठि धाई। जे बातैं तुम कही योगको तेमैं सबै सुनाई। नयन मूंदि गुण कर्म तुम्हारे प्रेम मगन ह्वै गाई। बारबार संदेश यशोदा कहति द्वारलगि आई। हौंतो कछू हमहिं सों नातो निपट कहां बिसराई। सूरदास प्रभु बन विनोद करि जे तुम गाय चराई। तिनि गायनको ग्वाल न घेरत मानहुं अहीं पराई २८६॥

आजु हरि अद्भुत रास उपायो।

एकहि सुर सब मोहित कीनो मुरली नाद सुनायो। अचल चले चल थकित भये सब मुनिजन ध्यान भुलायो। चंचल पवन थकेउ नहिं डोलत यमुना उलटि बहायो। थकित भयो चन्द्रमा सहित मृग सुधा समुद्र बढ़ायो। सूरश्याम गोपिन सुख दायक लायक दरश दिखायो २८७॥

रास रस मुरलीही से जान्यो।

श्याम अधर पर बैठि नाद कियो मारग चंद भुलान्यो॥ धरणि जीव जल थलके मोहे नभ मण्डल सुर थाके॥ तृणद्रुम सलिल पवन गति भूले श्रवण शब्द परेउ जाके॥ बचेउ नहीं पाताल रसातल कितिक उदय लों भान। नारद शारद शिव यह भाषत कछु तन रहेउ न स्यान॥ यहअपार रस रास उपायो सुनो न देखेउ नैन। बन मृग धुनि सुनि सुनि ललचान्यो श्याम अधर सुनि बैन॥ कहत रमासों सुनसुनु प्यारी बिहरतहै बन

श्याम। सूर कहां हमको ऐसो सुख जो बिलसब ब्रज-बाम २८८॥

अथ रागगोंडमलारके भजन॥

धनिधनि वृषभान कुमारी गिरिवरधर बश कीन्हेरी।

जोइ जोइ साधकरी पियरति की सो सब उनको दीन्हेरी॥ तोसी त्रिया और को त्रिभुवन पुरुष श्याम से नाहींरी। कोक कला पूरण तुम दाऊ अब न कहूं हरि जाहींरी॥ ऐसे बश तुम भये परस्पर मोसों प्रेम दुरा वैरी। सूरसखी आनन्द सम्हारति नागरि कंठ लगा वैरी २८९॥

अथ रागमलारके भजन॥

बहुरि हरि आवैंगे केहि काम।

ऋतु बसंत अरु मकर बितै के अरु बादर भै श्याम। तारे गनत गगनके सखिरी मोहिं बीते सब याम॥ घर को काज सबै बिसरायो सुमिरि सुमिरि पियनाम। क्षण भीतर क्षण बाहर ठाढ़ो रुचै न तन धन धाम। सूरदास प्रभु अवधि बिचारत रहे अस्थि अरु चाम २९०॥

मधुकर काहेको गोकुल आये।

वैसेही सच अपने मनमें दूनो विरह जगाये। हम जानति हैं जिन्हें पठाये श्याम सँदेशो लाये॥ जनम

जनम के दूत तिरावनको नहिं लार लगाये। कहा करहिं कहँ जाइँ सखीरी हरि बिनु कछु न सोहाये। जनम सुसुफल सूर तिनहीं को जे काज पराये धाये २९१॥

सखीरी चातक मोहिं जिआवत।

जैसेहि रैनि रटति हों पिउ पिउ तैसेहि पुनि यह गावत। अति सुकंठ सुदेश प्रीतम सुख तारू जीभ न लावत। आपुन पिवत सुधारस सजनी बिरहिनि बोलि पियावत। जो यह सखी सहाय न होतो प्राण बहुत दुख पावत। जीवन सुफल सूर ताहीको काज पराये आवत २९२॥

देखो माई नयननसे घनहारे।

बिनुही ऋतु बरसत निशि बासर सदा सजल दोउ तारे। ऊरध श्वास समीर तेज अति दुख अनेक द्रुम डारे। बदन सदन करि बसे बचन खग ऋतु पावस के मारे। ढरिढरि बूंद परत कंचुकि पर मिलि अंजन सों कारे। मानहुं परनकुटी शिवकी बिच धारा श्याम निन्यारे। सुमिरि सुमिरि गरजत निशि बासर असुर सलिल के धारे। बूड़त ब्रजही सूरको राखै बिनु गिरिवरधर प्यारे २९३॥

कोउमाई बरजो बोलत मोरन।

रटत पपीहा छिनु न रहाई होत बिरहकी रोरनि। चमकति चकित चहूं दिशि दामिनि अंबर घरनि की घोरनि। बरसत बूंदवान ह्वैजागत क्योंजीजै यहिजोरनि। चंदकी किरणि नयनभरि पीवत नागत तृषित

चकोरनि। सूरदासप्रभु हमतोजीवैं मिलिहैं नंदकिशोरनि २९४ ॥

निरखतअंकश्यामसुंदरके बारबारलावतछाती।
लोचनजल काग़ज़मसि मिलिके होगयेश्याम श्याम कीपांती। गोकुलबसत संगगिरिधरके कबहुंबयारलगी नहिंताती। तबकीकथा कहांकहोंऊधो जबहम बेणुनाद सुनिजाती। हरिके लाड़ गनति नहिंकाहू निशिदिनसुदिन रासरसमाती। प्राणनाथ तुम कबधोंमिलहुगे सूरदासप्रभु बालसँघाती २९५ ॥

निशिदिनबरषतनैनहमारे।
सदा रहत बर्षाऋतु हमको जबते श्याम सिधारे। दृगअंजन लागतनहिं कबहूं उरकपोल भयकारे। कंचुकिसूकत नहिंसुनि सजनी कुचबिच बहबपनारे। सूरदासप्रभु अंबुबढ्योहै गोकुललेहु उबारे २९६ ॥

बहुरिबन बोलनलागेमोर।
करत सँभार नंदनन्दनकी सुनि बादरकी घोर। जाकोपिय परदेश सिधारयो सोजियपरे निठोर। मोहिं बहुतदुख हरि बिछुड़ेको थकित बिरह के जोर। चातक पिक चकोर पपीहा येसबही मिलिचोर। सूरदासप्रभु बेगि मिलहुकिन जनम परतहैवोर २९७ ॥

सखीरीहरिआवैंकेहिहेत।
वेराजा तुमग्वालि बुलावति यहै परेखोलेत। अब शिरछत्र कनकमणिराजै मोरचंद नहिंभावत। सुनिब्रजराज पीठिदै बैठत यदुकुल बिरदबुलावत। द्वारपालप्रति

पौरि बिराजत दासीसहस अपार। गोकुल गाय दुहत दुखकौलौं सूरसहैंसुकुमार २९८॥

देखोमाईसुन्दरताकोसागर।

बुधिविवेक बलपार न पावत मगनहोत मननागर। तन अतिश्याम अगाध अंबुनिधि कटि पटपीत तरंग। घितवतचलत अधिकछबि उपजत भँवरपरतप्रतिअंग॥ नयनमीन मकराकृतकुंडल भुजबल सुभगभुजंग। मुक्ता मालमिली मनु सुरसरि दोयसरिता लियेसंग॥ कनक मुकुट किंकिणि मणिभूषण अवलोकनि सुखदेत। जनु जलनिधि मथि प्रकट कियो शशि श्रीअरु सुधासमेत। देखि स्वरूप सकल गोपीजन रहीं बिचारि बिचारि॥ तदपिसूर तरिसकी न शोभा रहीप्रेम पचिहारि२९९॥

वारकजाइयोमिलिमाधो।

कोजानै जियछूटि जायगो श्वासरहै जियसाधो। पहुनेहु नन्दबबाके आवहु देखिलेहु पलआधो। मिलही में विपरीति करीविधि होत दरशको बाधो। सो सुख शिव सनकादि न पावत जोसुख गोपिनलाधो। सूरदास राधा बिलपतिहै हरिकोरूप अगाधो ३००॥

अबब्रजमनहुंअनाथकियो।

सुनरी सखी यशोदानन्दन लिखि संदेश दियो। तब वहकृपा श्यामसुन्दरकी करगिरि टेकलियो। करि प्रतिपाल गाय गोपिनको कालीगरल पियो। यह सब दोष हमारो बिछुरत फाटि न गयो हियो। सूरदास जग नँदनंदनबिनु कारण कौनजियो ३०१॥

श्यामकोयहैपरेखोआवै।

कै वहप्रीति चरण यावककृत अब कुबिजा मनभावै। तब कत पाणि धर्‌यो गोवर्द्धन कत ब्रजपतिहि छुड़ावै। कत वहवेणु अधरमोहनधरै लैलैनाम बुलावै। तबकत लाड़लड़ाइ लड़ैते हँसिहँसि कंठ लगावै। अब वह रूप अनूप कृपाकरि नैननिहू न दिखावै। जामुख संगसमीप रैनिदिन सो अब योग सिखावै। जिनमुख अमृत दयो रसनाभरि सोकैसे विषप्यावै। करमोड़ति पछितातिहियोभरि क्रमक्रम मन समुझावै। सूरदास यहिभांति वियोगिनि तातेअति दुखपावै ३०२॥

याकीसीखसुनैव्रजकोरे।

जाकी रहनि कहनि अनमिलअलि कहत समुझअति थोरे। आपुनपद मकरंद सुधारत हृदय रहत नितवोरे। हमसों कहत बिरह समुजैहैं गगनकूप खनिखोरे। धान कोगांव पयारतेजानो ज्ञानविषय रसबोरे। सूरसों बहुत कहे न रहेरस गूलरको फलफोरे ३०३॥

मधुकरऐसनविगरिपरे।

समुझत नाहिं ज्ञान गीताको हरि मुसकानि अरे। बालमुकुंद रूपरसरांचे ताते बक्रखरे। सूधिनहोय श्वान पुच्छाज्यों कोटिक यतनकरे। हरिपद नलिन बिसारत नाहां शीतलउर सँचरे। योगगँभीर अंधकूप कतदेखत दूरिडरे। हरिअनुराग सोहाग भागभरे अमियते गरल गरे। सूरदास बरुऐसहि रहिहैं कान्हबियोगभरे ३०४॥

मेरेमनइतनीशूलरही।

वे बतियां छतियां लिखिराखी जेनँदलालकही। एक दिवस मेरे गृहआये मैंही मथति दही। रति मांगत मैं मान कियो सखि सोहरि गुसा गही। शोचति अति पछितांति राधिका मुरछित धरणि ढही। सूरदासप्रभुके बिछुरेते व्यथा न जाति सही ३०५॥

ऊधोकुलिशभईयहछाती।

मेरोमन रसिक लगयो नँदलालहि झरत रहतदिन राती। तजि ब्रजलोग पिता अरु जननी कंठलाइ गय काती। ऐसेनिठुरभये हरिहमको कबहुं न पठई पाती। पियपिय कहत रहत जियमोरे होइ चातककी जाती। सूरदासप्रभु प्राणहिंराखहुं वैकरिबंद सेवाती ३०६॥

ऊधोशरदसमयहूआये।

बहुते दिवस रटत चातकतकि तेउस्वाती जलपाये। कबहुंक ध्यानधरत उरअंतर मुखमुरली लगावत। सो रसराशि पुलिन यमुनाको शशिदेख सुधिआवत। जासों लगन प्रीति अंतरगति अवगुण गुणकरिभावत। हमसों कपट लोक उरताते सूरसनेह जनावत ३०७॥

सँदेशनमधुबनकूपभरे॥

जो जो पथिकगये यहब्रजसे तामेंकोइ न फिरे। ना जानोसँग काहू बैठे ना जानी पंथचले। जबनेमहिनाप्रभु आवन कहिगये सो सो जातटरे। ऊधोजाय कहोमाधो से यातन जातजरे। आपुतोगये हमें नहिंलेगये कैसेकै धीरधरे। वृन्दाबननें गोपी तलफत कृष्णजी छाँड़िभगे।

चूकेकागज घटिमसिहानी कलमकै अंकजरे । सूरदास जनमेंकै आँधर नैननीर ढरे ३०८॥

कहैकोइपरदेशीकीबात।

वहिद्रुमलता वही कुंजन बन वहितरुवर वहि पात। जबसे श्यामगये मधुबनके आवै नहिं कोइजात। मंदिरअर्ध अवनहरि बदिगय हरिअहार चलिजात। अजयाभखु अनुसारत नाहीं कैसेकै दिवस सिरात। शशि रिपुवर्ष भानुरिपु युगभरि हरिरिपु कीन्होघात। नखत वेदयह जोरि अर्धकरि सोइबनै अब खात। मघपंचक लै गयो सांवरो तातेजिय अकुलात। सूरश्यामबिनु बिकल राधिका करमींजत पछितात ३०९॥

सखीरीकंतदुरंतरछाये।

हरभूषण आनन समलोचन ताअनुचर दिनआये। लेपित अनल उछिष्ट दशोदिशि ऐनो अजिर छिपाये। दरकत हृदय मेरु अरि आयो क्षण क्षण प्रगट दुराये। सनमुख अशुभ प्रवेश प्रथमपुर ताबाहन गुणगाये। मन सिजभखु अरु सहित मनोहर गिरिचढ़ि गिरा सुनाये। पांचसुन्न दशगून दूनकरि षोड़श गुनहुं नभाये। सूरश्याम अवऐसोकहिये किन बिरहिन बिलम्हाये ३१०॥

आजुब्रजमहाघटनघनघेरो।

राखहु नंदनँदन यहिअवसर सबचितवत मुखतेरो। आये मेघ महापरलयक बृजपर कीनो डेरो। बरषत महा असम सनापति दिनते कियो अँधेरो। इतनी सुनत यशोदा नंदन गोबर्द्धन तन हेरो। चित गहि रहे

सम्हारि आपुकर क्षितिते पकड़ि उखेरो। सातदिवस बरष्यो निशिबासर हारिमानि मुखफेरो। श्रीपति सूरस-हाय भयेजब बुन्द न आयोनेरो ३११ ॥

आयेमाईदुरँगश्यामकेसंगी।

जो पहिले रँगरँगे श्यामरँग तिनहीं की बुधिरंगी। हमरी उनकीसी मिलवतहो तातेभये बिहंगी। सूधीकहैं सबनि समुझावति तेसांचे सरबंगी। औरनको सरबस लैमेटत आपुनभये त्रिभंगी। सूरसुनाम शिलीमुखजोपै वेधन कौचउपंगी ३१२ ॥

बारहमासा।

कौनउपायकरोंमोरीआलीश्यामभयेकुबरीबशजाई। चइतमास मोहिं मदनसतावै बैशाखमास बहुतदुख पावै ज्येठमास तनतपत घामजो अंगचोर मोहिं एकोन सोहाई। आषाढ़मास घनघेरि आये बदरा सावनमास बहैपुरवाई। भादों अगम पंथ नहिंसूझै जलसे भरिगई तालतलाई। क्वारमास श्याम नहिंआये कातिक दियना अकाश बराई। अगहन अग्रसनेह श्यामबश कोपतिया हमरो लेजाई। पूसमास मोहिंशीत सतावति माघबिना पियजाड़ न जाई। फागुनफगुवा खेलब केकरेसँग बिना श्याम अरु बिनु यदुराई ३१३ ॥

तकतिरहींमधुबनक्रीडगरियाअबनहिंसूझिपरैसजनीरी।

लागलमास अषाढ़सखीरी जलसे भरिगईं ताल नदीरी। बैठीशोच करैंब्रजबाला कुबरी सवतियासे नेह

लगीरी। सावन सबसखि चीरसँवारैं चुनिचुनि मोति यनमांगभरीरी। तबतो कहैंहरि ऐबैब्रजमें बीतिगईछठ मास घड़ीरी। भादोंमेह झमाझमबरसैं उमँगिचलीमथुराकी गलीरी। ठाढ़िबिलोकैं राधाकुंजभवनमें अजहूं न आये श्रीकृष्णधनीरी। कुवार कुशलनहिं पावों सखीरी अबजिय शोचबिरोग भरीरी। अबहरि आशनहीं मिलने की नकोइ आयेकहै पतनीरी। कातिक निर्मलउगतचंद्र मानिरखि रहैंसंसार धनीरी। छिटिकिरहैं जैसेतारागगनमेंचन्द्र चकोरसे मौजलगीरी। अगहन सबसखि चीरसँवारैं अपनेबलमुआकि सेजचलीरी। सोवैंबलमुआ के गिरधरिबहियाँयहसुखनाहिंनजातकहीरी। पुसवाउन्हैं नहिंभावै सखीरी जेकर बलम परदेश गयरी। नित उठिकंतकै कौनमनावै बलुमरि जैहोंखायकनीरी। मघवा उन्हें भलभावै सखीरी जेकरा बलमनित घरहीरहेरी। आलीबसंतके कौनमनावै दुखदेगै लैकंत नईरी। फागुन में फरकैबाईं अंखियाँ अब कछुआगम जानिपरीरी। चलहुसखी सबै सगुन बिचारी अपने बलमुआके आवनसुनीरी। चइत सकलबन तजति राधिका चन्द्रसखी लै लायरहीरी। मज्जनकरि संबदेव मनावैं पहिरि पटोर भुषण अपनीरी। वैसखवे सबैसखी झारिबिछावैं छिर कतगंध सुगन्ध भरीरी। आवैंगे कंतसोवैं ब्रजबालातब यहतनकी अगिनि बुतीरी। जेठवामें एकरथ हमदेखी रीपवनके साथमें जातबहीरी। सूरदास बलिजावँ चरण की गावत मंगल मृगनैनीरी ३१४ ॥

ऊधोभोरवैमधुपुरजाहुकन्हैयाकोलैआवहु।
शीतल चंदनअंग लगावै कामिनिकरै शृँगार। इहो महिनवां बीतलऊधो पुसकर मासअषाढ़॥ एकतोऊधो बारिबैसत्रा दुसरेपियापरदेश। तिसरेमेह झड़ाझड़िलाये सावन अधिको अनेश॥ भादोंनिशि अँधिअरिया ऊधोग-रजैओघहराय।बिजुलीतरपैहियरालरजै केकरीशरनियां उठिजाय॥ कुआर कुशलनहिं पावोंऊधो केसेकहों सनेह। मेंबिरहिनि बिरहाकीमाती पियाकबसैलैपरदेश॥ कातिक कैपुरनमासी ऊधोसब सखिगंग नहायँ। हमअस अब-लापरम सुन्दरी केकरेगोहनवां लागतिजायँ॥ अगहन मोरकुहूकैऊधो बालम कठिनकठोर। अबकीबार पियउ नहिंऐहैं जियतनपैहैं जियरामोर॥ पुसवैकुंहवां परिगो ऊधो भोजैअँगको चीर। यमुना किनारे कान्हा बँशिया बजावै नैननबहैं जलनीर॥ माघमासऋतुदारुणऊधो को लैमारै दुसार। केतनो रुइआभरैवो ऊधो बिनुपियाजा-ड़नजाय॥ फागुन फगुआ खेलवतिउँ ऊधो रखतिउँ हिय रालगाय। हमरे बलमुआ जो घरहोते रखतिउँ मैंरंग रँगाय॥ चइतमास बनटेसू फूलैंचंपालाल गुलाल॥ पशु पंछीसब कोलकरतहैं दुख सहलो ना जाय। बैसाखवे बँसवाँ कटतिवउँऊधो रचिरचि मंदिर छवाय॥ चौमुख दियना जरौतिउँ ऊधोअँचरन करतिउँबयार। ज्येठ मा सबरसाइति ऊधोबरपूजै सबकोय। सूरदास बलिजाय चरणकी इहँवाँमिलैं हरिमोर ३१५॥

अथ रागभैरवी॥

गुजरियाकरुमाखनकरमोल।

प्रातसमय दरशन करबेला मतिकहुबचनकठोर ॥ दा मलेहुदधिमोल देहुरी माखनमांगतनन्दकिशोर ३१६॥

मोहिंभोरवैकान्हजगावतरी।

सोइउठी मुखमींजन लागी नईनई प्रीतिलगावत री॥ अनओसर मोसोंरारि करतहैं केतनोकहै लोनहिं मानतरी ३१७॥

मैंतोभूलीसेजरियाकान्हादेकँगना।

जोतूकान्हा मेरोकँगना न देहो काढ़ि कटारी जीय मारोंअपना ॥ कबकी मैं ठाढ़ीठाढ़ी अरज़ करतुहौंरी सांचोभयउ रातिको सपना ३१८॥

बनवारीकारूपनिहारिआईरी।

सोइउठी मुखदेखन धाईसोवत श्यामजगाआईरी॥ भोर भयेदधि बेचन निकसी प्रीतिकी रीतिजनाआई-री ३१६॥

छबिनिरखोरामकृष्णजोरी।

मुदित होतमन नन्दयशोमति ब्रजबनिता राधा गोरी॥ सुरनर मुनिजाको ध्यान न पावत सोनित करत मखन चोरी ३२०॥

जागोरामकृष्णभैभोर।

जाग्यो ब्रजके ग्वालबाल सब तू नहिं जाग्यो नन्द

किशोर ॥ देहुदरशउठिप्रात खड़ेसब गउआ जातिचलि बनकीओर ३२१ ॥

ठुमरी ॥

यमुना तट बंशी बाजिरहो मनमोहन रंग रँगीलेकी । सुन्दर तन कटि काछे कछनी शिर शोभित मुकुट सजीलेकी । रुनि झुमि तोरत तान ननन मृदु अधर दमक द्युति दशन दामिनि की ॥ पांव बजत घुंघुरु झनन ननन नतननन त्रिभुवन बंशी बाजि सो सीलेकी । पशु चरि न सकैं न उड़ैं पंछी बछ पियत न क्षीर चकित खग मृगकी ॥ चलि सकत न सिन्धु पवन रविरथ वंशि धुनि सुनि छैल छबीले की । देखो सखि गायल यह घुमरैं सुधि बुधि न रही कछु तन मनकी ॥ गावैं सूरदास लीला हरिकी बसि भइ जादुक हर कटीलेकी ३२२ ॥

मंगल ॥

कृष्ण जन्म जब भयो बधावर ले चली ।

गावत मंगलमुखी तहां हमहूं चली । लेचलु तेलिनि तेल तमोलिनि बिरवा मालिनि ले चलु हार कन्हैया जीको जन्म भयोहै ॥ धन्य यशोमति भाग धन्य वहि रोहिणी । धनिरी भादों की राति कृष्ण जीको जन्म भयोहै । नँद द्वारे ठाढ़ लुटावत सम्पदा याचक भयो है निहालअयाचक होय चलेहैं ॥ धन्ययशोदा भागजेगोद खिलावहीं । हुलसि हुलसि जिय होय तोक्षीर पियाव नहीं ॥ जे यहि मंगल गावैं लैगाय सुनावहीं । सूरदास बलिजाउँ परम फल पावहीं ३२३ ॥

चलैली तो सखियासहेलरीयमुना के तलभरैरी
ललनायमुनाकै निर्मल नीर कलश भरि लावैलीरी।
केहु सखि हथवासे गोड़धोवै केहुसखिबैला भरैरी।
ललना यशोदा उतरिगैली पार जहां तरोवै देवकिरी।
कीतोरे सासु ससुर दुखकीन इहर दूरि बसैरी। देवकी
कितोर हरि परदेश कोने दुख रोवै लीरी। नाहिंमोरे
सासुससुर दुखनाहीं नइहर दूरिबसैरी। यशोदा नाहीं
मोरहरि परदेशको खि दुखे रोवें लुरी। सातइ पुत्र
जनम लेनी कंसासुर मरावै लैरी। यशोदा अठवें गरभ
अवधान तयेहू कै भरोस नाहिंरी। चुपहोखु देवकि चुप
होखु जनि तैं रोइ मरूरी। देवकी अपना बलकहम
दैवे ततूह राजी आइवरी। नोनवां तोमिलै लैउँ घरवांय
तेलवे वरहावइरी। यशोदा कोखियाकै कवन उधार कवन
ह्वै पायचरी। जे यहि मंगल गावै लैगाइ सुनावैलैरी।
ललना सूरदास बलि आश परम फलपावैलैरी ३२४॥

अथहोली॥

आजु मोहन बंशी बजाई हो।
वंशी धुनि सुनि सब ब्रजबाला आईं प्रभु पहँ धाई।
भईहैं बिहाल भूषणकी सुधि नहीं कंगन पगमें सजाई।
सुधि मनकी बिसराई॥ दधिके बहाने घरसे निकरि कै
प्रभुके निकट चलि जाई। यमुना किनारे हरि वंशी
बजावैं दोन मटुकिया गिराई। दही सब दीन लुटाई॥
हे यशोदा माइ बरजो मोहन को ऐसो चतुर कन्हाई।
मटुकी फोरि सकल दधि लूट्यो ऐसो धूम मचाई। सो

कौतुक बरणि न जाई॥ हे नँदनन्दन हे मनमोहन लीला अधिक बनाई। जन जगन्नाथ शरण में तिहारो चरणन पै लौ लाई। करहु करुणा यदुराई ३२५॥

श्यामखेलतराधासेहोरीहो।

घोरिअबीर हाथ पिचकारी दुहु दिशि रंगन झोरी। खेलत श्याम सखिन सों मिलि चुलि इतदल ग्वाल खड़ोरी। उतै सब गोप किशोरी॥ हाथअबीर लेराधा ललिता बोरत कृष्ण को चोरी। बोरिअबीर भागि गृह अपने अब कस मोहिं धरोरी। धरननहिं देउं बहोरी॥ ताहि समय धाये यदुनन्दन खींच्यो अंगकी चोली। अब कहँवाँ तुम जाउगी प्यारी हमसे जीति सकोरी। कहूं तुम भागि बचोरी॥ राधा ललिता औ चंद्रावलि और दुसर सब गोरी। जन जगन्नाथ रंग अति बोरे धन्यकिशोर किशोरी। चिरंजीवरहैं दुनोजोरी ३२६॥

बसिगयेउर कुँवरकन्हाईहो।

जिन मथुरा मेंजन्म लियोहै गोकुल माहँ सिधारी। कंसासुर पुतनाको पठायो दूध पिआवन आई। हत्यो क्षण में यदुराई॥ श्रीधर बिप्र बहुरि ब्रज आयो पंडित रूप बनाई। जीहा दीन्हि मरोरि मुरलिधर रोवत मथुराजाई। कंससे हालजनाई॥ मारी अघासुर आदिक मोहन कुंजमेंलीला बनाई। राधा ललितादिक गोपिनसे छीनिदही रुचिखाई। चरितसबबरणिनजाई॥ मथुरामेंजायकंसकोमार्यो मातुपिताकोछोड़ाई। कुण्डिन पुर रुक्मिणिको बिवाह्यो शोभा बरणि न जाई। पुरी

द्वारकाकोबसाई॥ रहतसदाब्रजमें यदुनन्दनलीलाकरत सदाई। जन जगन्नाथ धनि नन्द यशोदा जिन्हें हरि चरित देखाई। सोईचरणन बलि जाई ३२७॥

ब्रजमेंहरिहोरीमचाईहो।

इततेआवति कुँवरि राधिका उतते कुँवर कन्हाई। खेलतफाग परसपरहिलि मिलि सो सुखबरणि नजाई। नंदघर बजतबधाई॥ छीनिलियो मुख मुरली पितम्बर शिरसे चुनरिउढ़ाई। बेंदी भाल नयनबिच काजर नक-बेसरि पहिनाई। मनों नइ नारिबनाई॥ सुसुकतहैं मुख मोरिमोरिके कहँवाँ गई चतुराई। कहवाँ गये तेरे नंद बबाजी कहँवाँ यशोमति माई। लालक्योंन लेतछोड़ाई॥ सूरश्याम यकयुक्ति निकारी मनसे कुँवर कन्हाई। घोरि अबीर भर्यो पिचकारी मारीमुखमें तकाई। भगे करते छटकाई ३२८॥

कुबरीभईबैरनिमोरीहो।

जबसे छाँड़ि गये यदुनन्दन कैसेकगावों होरी। भै अबशोच शोच जिय बाढ़त गाढ़े दुःख परोरी। बिछुड़ि श्रीकृष्णकी जोरी॥ को मग जातद्वारकामें तासों मैंपाती लिखोरी। बिकल भईहैं राधिका ललिता ऐसी कहो कर जोरी। प्रीतिश्रीकृष्ण कि थोरी। प्रीति कि रीति बहुतमैं कीनो जबसे दिननको थोरी॥ पापीप्राण हरिसँगनहि लेगे ऐसी भई मति भोरी। करति राधेजी निहोरी॥ बनारहेउनहींसँगरहना सुरतिलिये रहैं मोरी। सूरदास

अस कहति सखी सब कुशल रहैं दोनो जोरी। अंत फिर खेलबहोरी ३२९॥

कहियोऐसीहालहमारीहो।

कहिनजात बिछुड़न कर बेदन सहि न जात दुख भारी। उठतकै आहि आहि कर बैठत बिरह अगिनि तन जारी। पीरनहिं जात सँभारी॥ खन आँगन खन बाहर निकरत खन चढ़ि जात अँटारी। खन पछितात दोऊ करमींजत क्या तकसीर हमारी। श्याम मोरि सुरति बिसारी॥ छूटे असन बसन सब सखियाँ छूटिगई तनसारी। भै अब शोच शोच जिय बाढ़ो सूनीसेजहमारी। मनोंजैसेनागिनिकारी॥ भूषण बसनसबैतजिदीनो खान पान बिसरोरी। सूरदास अस कहति राधिका श्यामसेजायकहोरी। दशर फिरि देइँबहोरी ३३०॥

दोहा॥

गणपतिजीकीकृपासेभयउ गरंथसमाप्त।
भजनभवकीरीतिसों सुखभोअदभुतप्राप्त॥
जोमननिश्चयठीकदै करैंभजननितनेम।
ताके हियमें हरिबसैं लागैंबृज समपे्म॥
जो मायासे रहितहैं करमोसे बल वान।
सोप्राणीके बशरहैं सदाकृष्ण भगवान॥
मासमधुप तिथिदशमी कृष्णपक्षरबिवार।
संवत सैंतिस बिक्रमी भैपुस्तक तैयार॥

सोरठा ॥

हे बसुदेव कुमार मोसमपतितनओरकोइ।
अंतकाल निस्तार तुम्हरीकृप कटाक्षते ॥

इतिश्रीकृष्णगीतावलीसमाप्ता ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
७-उत्तरकाण्ड	अद्भुत रामायण	कृष्णप्रिया	नवीनसंग्रह
रामायण शब्दार्थ-	शुक्रनीति	विजयमुक्तावली	शृंगारबत्तीसी
कोष	रसदृष्टिरसच-	छन्दोर्णवपिङ्गल	राग
रामायण काड्डति-	न्द्रोदय	रसराज	रागप्रकाश
हास	सुदामाचरित्र	अनेकार्थ	लावनी
रामायण मानस-	श्री अनुरागरस	उपदेशचन्द्रिका	क़िस्सा वग़ैरह
दीपिका	सौदागरलीला	मंगलविनोद	नानार्थनोसंग्रहावली
रामायण कविता-	रासलीला हा-श्र-कृ-	विजयचन्द्रिका	ब्रह्मसार
वली	नाटक	सिद्धान्तसंग्रह	शिवसिंहसरोज
रामायण गीतावं-	प्रबोधचन्द्रोदय	रामविनयशतक	भक्तमाल
ली सटीक	रामाभिषेक	सत्सई मूल	इन्द्रसभा
भुवनेशभूषण	आनन्दरघुनन्दन	सत्सई सटीक	विक्रमविलास
विनयपत्रिकातु-	भ्रमजालनाटक	सभाविलास	बेताल पच्चीसी
कृ-दी-बा-गो-कृ-	वेदान्त	युगुलविलास	सिंहासन बत्तीसी
विनयपत्रिकातु-	योगवाशिष्ठ	तुलसीशब्दार्थ	पद्मावती खण्ड
कृ-दी-बा-शिव-कृ-	आनन्दाम्बुतवर्षि-	प्रकाश	शुकबहत्तरी
विष्णुपुराण भाषा	संग्रव्यतत्वकौमुदी	भजनावली	बकावलीसुमन
लिङ्ग-पुराण	पारसभाग	प्रेमरत्न	चहारदरवेश
ब्रह्मोत्तरखण्ड	काव्य	चित्तचन्द्रिका	क़िस्साहातमताई
बाराहपुराण	सूरसागर	बारहमासाबलदेवप्र-	अपूर्वकथा
भविष्योत्तरपुराण	कृष्णसागर	मनोहरलहरी	क़िस्सागुलसनोवर
स्कन्धपुराण	विश्रामसागर	गंगालहरी	सहस्त्ररजनीचरित्र
बाल्मीकीयरामा-	प्रेमसागर	यमुनालहरी	दास्तानअमीरहमज़ा
यण भाषा	ब्रजविलास	जगद्विनोद	एविन्सनकाइतिहास

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
सीता हरण	ब्रजयात्रा	अमृत सागर	कायस्थधर्म निरूपण
सतीविलास	कायस्थवर्ण निर्णय	वैद्यमनोत्सव	मथुरा सभा
क़िस्सा मर्दअ़ौरत	बिहार वृन्दावन	दिल्लगान	**ज्योतिष**
संगीत प्रह्लाद	सनकबिहार वृन्दाव	रसायनप्रकाश	मुहूर्त्तगणपति
मुतफ़र्क़ात	कल्पभाष्य	**ज्योतिषभाषा**	मुहूर्त्तचक्रदीपिका
प्रानिश्चर की कथा	लक्ष्मीसरस्वतीसंवाद	जातक चन्द्रिका	मुहूर्त्तचिन्तामणि स·
ज्ञानमाला	**दरसी**	जातकालंकार	मुहूर्त्तदीपक
गोपीचन्द भरतरी	अक्षरावली	दैवज्ञाभरण	बृहज्जातक सटीक
कथाश्रीगंगाजी	स्वयम्बोध	ज्ञानस्वरोदय	जातकालंकार
अवधयात्रा	ज्ञानचालीसी	रमलसार	जातकाभरण
भरतरीगीत	दोहावली	रमलनौरत्न	होरामकरन्द
दानलीलाबनाग·	बालाबोध	इन्द्रजाल	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड स·
लीला	विद्यार्थी की प्रथम·	**संस्कृतकी पुस्तकें**	**संस्कृतभाषाटीका**
दोहावली रत्नावली	पुस्तक	लघुकौमुदी	अमरकोषतीनों कां·
गोकर्णमाहात्म्य	किताबजंत्री	सिद्धान्तचन्द्रिका	याज्ञवल्क्यस्मृति
श्रीगोपालसहस्र·	रसिकतकामधेनु	भाषातत्वप्रकाश	सन्ध्यापद्धति
नाम	लीलावती	पञ्चमहायज्ञ	व्रतार्क
कथासत्यनारायण·	षटचारियों की पुस्त·	निर्णयसिन्धु	भगवद्गीताटी· हरिवं·
णसटीक	क ४ भाग	भगवद्गीता	भगवद्गीताटी· श्रा·गी·
हनूमाटक	**वैद्यकभाषा**	दुर्गापाठ	गीतगोविंद
हनूमानबाहुक	निघण्ट	विष्णुभागवत	कथासत्यनारायण
जनकपचीसी	अमरविनोद	कथाचमद्वितीया	परमार्थसार
हरिहरसगुणनि·	वैद्यजीवन	अपराधभञ्जनस्तोत्र	शार्ङ्गधरसंहिता
र्गुणपदावली	औषधिसंग्रहकल्प	कायस्थकुलभास्कर	